

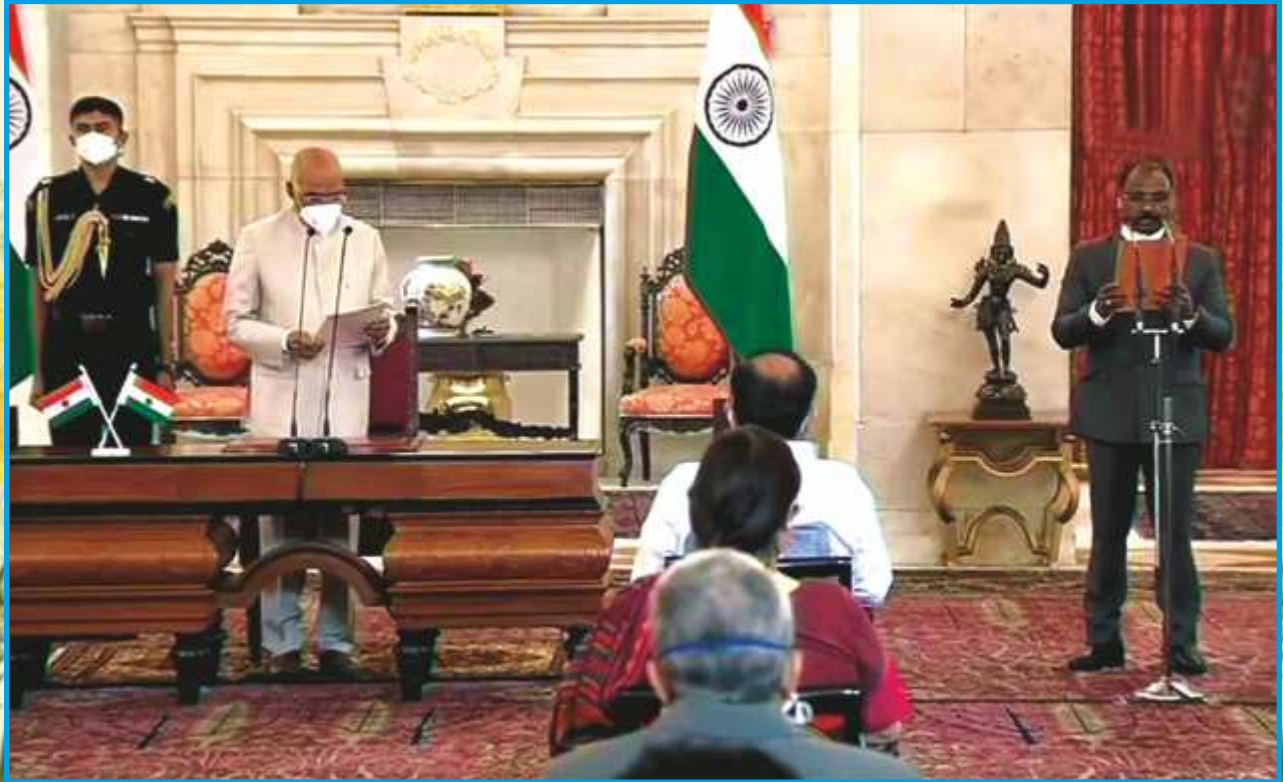


लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ तैतीसवां अंक जुलाई-सितम्बर, 2020



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ तैतीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(जुलाई-सितम्बर, 2020)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।



लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ तैतीसवां अंक (जुलाई-सितम्बर, 2020)



पृ.सं.	पृ.सं.
अनुक्रमणिका	3
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5
पाठकों के नाम पाती	6
माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	7
संबोधन – भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय	9
हिन्दी प्रगति रिपोर्ट के मुख्य अंश	10
लेख	
1. कोरोना काल	11
जुगल किशोर	
2. क्या बुढ़ापा अभिशाप है?	17
सुश्री सं.ग. श्रीमती	
3. पुष्टि मार्ग और सूरदास	20
नरेन्द्र कुमार पाण्डेय	
4. वाक्य-विज्ञान	23
गौरव हारिथ	
5. निर्बल के बल राम	27
एस.सी. मित्तल	
6. रमणीयता से भरपूर है – रानीखेत	29
ललित कुमार वर्मा	
7. भारत-पाक युद्ध 1965 के महानायक – अब्दुल हमीर	33
सुश्री आरती शर्मा	
8. आदि शंकराचार्य	35
बनवारी लाल सोनी	
9. वाकई, जिंदगी तो बचपन की ही अच्छी होती है	38
बिजेन्द्र कुमार बेरवाल	

	पृ.सं.		पृ.सं.
कहानियाँ			
10. नासूर	43	19. माँ	70
सुश्री दया हीत		सुश्री रश्मि सानन	
11. हार्ट अटैक	45	20. अकेलापन — एक अहसास	71
बी.एस. चौहान		सुश्री रति. कु. लहेरी	
12. दीदी	50	21. मैं (स्वार्थ)	72
योगेश कुमार मिश्र		कमल कुमार	
13. पोपटलाल बच्चन की अजीब दास्तान	52	22. भजन संध्या	73
संजय कुमार सिंह		मेहरबान सिंह नेगी	
14. मटर—कचौरी	61	23. गुज़ल	74
यशपाल कालरा		सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'	
15. पशु और मनुष्य	65	24. उर्मिला का विरह	75
आशुतोष सिंह		कुमार भास्कर	
16. मोबाइल	66	25. माँ	76
कुमार शर्मा 'अनिल'		केदार नाथ प्रसाद	
कविताएँ		26. काश कोई ऐसा हो	77
17. वीरान सफर	67	सुश्री ज्योति यादव	
सुश्री नीतू सिंह		26. साड़ी की महिमा	78
18. कान की व्यथा	68	सुश्री तृप्ति	
अनिल कुमार पिलानी		27. मुख्यालय में	79
		हीरा बल्लभ भट्ट	



स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन

“लेखापरीक्षा प्रकाश”
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ तैतीसवां अंक
(जुलाई-सितम्बर, 2020)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

सुश्री सरोज पुनहानि
उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री राज कुमार
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अजीत सिंह
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

श्री हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार

सुश्री अनामिका अंतिल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

रचना चयन समिति

श्री सुनील डबराल
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री राजकुमारी शर्मा
सलाहकार

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेसंस
जी-194, सेक्टर-2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ
संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

संपादकीय

हिंदी पत्रिका “लेखापरीक्षा प्रकाश का एक सौ तैतीसवां अंक (जुलाई-सितम्बर, 2020) आपको प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। आपके द्वारा रचित रचनाओं को मूर्त रूप प्रदान करके आपके समक्ष लाते हुए हर्षपूर्ण और संतोषजनक अनुभूति हो रही है।

भारत विविधता में एकता दर्शाने वाला राष्ट्र है। हिन्दी भाषा हमारी भारतीय संस्कृति का जीवंत प्रतीक है जो हमारी संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं की धरोहर संजोकर रखते हुए आज के आधुनिक मानव के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। मानव विज्ञान, प्रौद्योगिकी और तकनीकी के नित नये आयाम और पराकाष्ठाएं स्थापित कर रहा है परन्तु भाषा को बोलने, प्रयोग करने तथा विश्वभर में इसके प्रचार-प्रसार के लिए भी नई तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है। विश्व भर में हजारों भाषाएं और बोलियां हैं तथा इन भाषाओं को बोलने और लिखने वाले आम जन की भी कमी नहीं है। इस युग में इतनी हजार भाषाओं तथा बोलियों में से केवल वही भाषा स्वयं के अस्तित्व को बचा सकेगी जो बोलने, पढ़ने, लिखने में सरल होगी तथा आज की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगी।

समाज की भाषागत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आधुनिक नये तंत्र आम जन के लिए आसानी से उपलब्ध हैं। गुगल, यू ट्यूब, भाषागत वेबसाइट, इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न शब्दकोश, व्याकरण से संबंधित सभी नियम किसी भी भाषा को सीखने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं।

कोविड-19 महामारी ने आज विश्व की अर्थव्यवस्था को बेशक हिला दिया है परन्तु कुछ क्षेत्रों में इस महामारी के कारण समस्याओं के नये तथा विशेष हल निकाले गये हैं परन्तु ऐसा केवल उच्च तकनीक तथा नई प्रौद्योगिकी के कारण ही संभव हुआ है। लेखापरीक्षा प्रकाश पत्रिका जो हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा देने का एक प्रयास है, वर्तमान आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस पत्रिका को भी ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाने लगा है ताकि यह अधिक से अधिक लोगों तक विचारों का सूत्रपात कर सकें तथा नये लेखन प्रयासों को मूर्त रूप दिया जा सके।

अंत में मेरा विनम्र अनुरोध है कि राजभाषा की गरिमा को बनाए रखने में अनवरत योगदान देते रहें तथा प्रत्येक अंक के अनुरूप स्तरीय सामग्री तकनीकी एवं गैर-तकनीकी दोनों विषयों पर निरंतर भेजते रहें।

जय हिन्दी – जय भारती!

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह
संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम पाती

प्रिय पाठकों,

जय हिन्द, जय हिन्दी! विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का यह एक सौ तैतीसवां (जुलाई—सितम्बर, 2020) अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। रचनाकारों ने अपनी कविताओं व सरल रचनाओं में समेटे अविरल भावों के माध्यम से अपने बहुमूल्य विचार आप तक पहुँचाए हैं।

पत्रिका रचनाकारों व पाठकों के मध्य एक कड़ी का कार्य करती है। जैसे रचनाकारों की रचनाओं को पाठक तक पहुँचा देते हैं वैसे ही पाठकों की प्रतिक्रिया 'आपके पत्र' स्तम्भ में सम्मिलित कर रचनाकारों तक पहुँचा देते हैं। रचनाकारों की सुन्दरतम कृतियों की प्राप्ति से जितनी प्रसन्नता की अनुभूति होती है उतनी प्रबुद्ध पाठकों के पत्रों से निकली भाषा शैली, शब्द चयन, रसों व अभिव्यक्तियों की प्रशंसा भी प्राप्त होती है। आपकी कविताओं, कहानियों व लेखों की समीक्षा अभिव्यक्त करती है कि किस तरह की रचनाएं पाठकों को आकर्षित करता है। इसी क्रम में आपसे प्राप्त पत्रों में शामिल भावों व अभिव्यक्तियों से रचनाओं को उत्साहवर्धक ऊर्जा प्राप्त होती है, जिसके कारण हम इस पत्रिका को और अधिक पठनीय बनाकर आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

सभी पाठकजन को मेरी तरफ से हार्दिक धन्यवाद कि आप जैसे सुधी पाठकों के निरंतर प्रयास से विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का उद्देश्य पूर्ण हो रहा है।

जय हिंदी, जय भारती!

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह

संपादक

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है। कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरव से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी, बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को, हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुजर रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

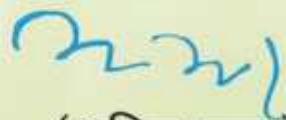
संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूँ कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूँ, अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020


(अमित शाह)

हिन्दी पखवाड़ा के उद्घाटन के अवसर पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का संबोधन

प्रिय साथियों,

हिन्दी दिवस के पावन अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। आप सभी जानते हैं कि हमारी संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया जैसाकि संविधान आने से पहले ही तय हो गया था कि इस देश में हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के तौर पर लागू किया जाए।

जैसाकि आप जानते ही हैं कि इस देश में अनेक भाषाएं हैं, अनेक बोलियां हैं और जब 1956 में सरकार द्वारा राज्यों को पुनर्गठन किया गया था, इसी समय राजभाषा के संबंध में भी कुछ परिवर्तन किये गये थे। संविधान में कई स्वीकृत भाषाएं हैं फिर भी हिन्दी भाषा को अपनाने के लिए इसका ज्यादा प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है ताकि हिन्दी देश की एक पहचान हिन्दी के स्वरूप में उभरे और इसे जोड़ने का काम करे।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की कार्य शैली अन्य विभागों/मंत्रालयों से भिन्न है, फिर भी हमने राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु भरसक प्रयास किए हैं।

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि हमारे विभाग में हिन्दी के कार्यों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी पत्रिका के ई-संस्करण का विमोचन अभी आज के कार्यक्रम में ही किया है। इसके अतिरिक्त हिन्दी में ई-ऑफिस में कार्यान्वयन इसका अच्छा उदाहरण है। सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण आवश्यक है कि हमारे सभी क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाओं का भी ई-संस्करण जारी किया जाए ताकि अधिक से अधिक पाठकों से जुड़ा जा सके। आज इस अवसर पर मैं सभी कार्यालय प्रमुखों से भी अनुरोध करता हूँ कि वे भी अपने कार्यालयों की हिन्दी पत्रिकाओं का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन जारी करें ताकि अधिक से अधिक पाठक हिन्दी से जुड़ सकें। हिन्दी को जनसाधारण तक अति सहज ढंग से पहुंचाया जा सकता है। हिन्दी का प्रयोग केवल लक्ष्य प्राप्ति तक ही सीमित न हो बल्कि इसका अधिकाधिक प्रयोग भी किया जाए।

हमारे देश में मोबाईल का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है जिसमें कई भाषाओं के विकल्प हैं तथा हिन्दी भी इनमें से एक है। जो लोग कम पढ़े-लिखे हैं वे भी हिन्दी में मैसेज दे पा रहे हैं हमें हिन्दी में इसका उपयोग करना चाहिए। जनधन खाता खोलने के बाद आम लोग इसी भाषा में सहज रूप से काम कर पा रहे हैं। इसे जितना अधिक अपना सकेंगे उतना ही अच्छा होगा। हिन्दी के प्रति बालीवुड का भी बहुत बड़ा योगदान है जिस क्षेत्र में लोग हिन्दी नहीं बोल रहे थे उस क्षेत्र में भी लोग हिन्दी बोलने लगे हैं। इसका उपयोग बेवसाइट में अधिक से अधिक किया जाए। सूचना और परिपत्र हिन्दी में जारी किए जाए।

आइये, आज इस शुभ अवसर पर हम सब यह संकल्प लें कि हिन्दी को सरकारी कामकाज में केवल क्षेत्रीय लक्ष्य प्राप्ति तक ही सीमित नहीं रखें अपितु हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग से हम अपनी एकता, अखंडता तथा बंधुत्व को मजबूत करेंगे।

धन्यवाद,

(गिरीश चंद्र मुर्मू)

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह के अवसर पर हिन्दी प्रगति रिपोर्ट के मुख्य अंश

परम आदरणीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय, उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदया, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं सहकर्मी ।

आज हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर राजभाषा हिन्दी के विकास एवं हमारे कार्यालय द्वारा उसके लिए किए गए प्रयासों से मैं आप सभी को अवगत कराना चाहूँगा ।

हमारे कार्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में विगत वर्ष की भांति उल्लेखनीय कार्य किया है तथा इस दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं ।

वर्ष 2019-20 में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) एवं राजभाषा नियम 1976 के नियम (5) का विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी शत प्रतिशत पालन किया गया है ।

मूल पत्राचार 'क' क्षेत्र में 92% प्रतिशत, 'ख' और 'ग' क्षेत्र में 88% रहा । उल्लेखनीय है कि विगत वर्ष की तुलना में इसमें क्रमशः 2%, 1% एवं 3% की वृद्धि हुई ।

विगत वर्ष की भांति इस अवधि में हिन्दी टिप्पणी में 2% की वृद्धि हुई और यह 78% से बढ़कर 80% हो गई ।

इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप मुख्यालय के 25% अनुभागों व क्षेत्रीय कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है । पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करके राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लिया गया है ।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय एवं आप सभी के समक्ष, मुझे विशेष रूप से यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि इस अवधि में राजभाषा अनुभाग में सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से हिन्दी की प्रगति के लिए कई आयाम स्थापित किए गए हैं । मैं उल्लेख करना चाहता हूँ कि मुख्यालय में राजभाषा अनुभाग का कार्य प्रधान निदेशक स्तर तक पूर्ण रूप से ई-ऑफिस में क्रियान्वित हो चुका है । ई-ऑफिस में ग्रीन शीट भी हिन्दी में लिखी जा रही है ।

इसके साथ ही, आज हमारी हिन्दी पत्रिका का ई-संस्करण भी प्रकाशित हो गया है जो आज से विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध होगा । इतना ही नहीं बल्कि राजभाषा अनुभाग तथा आई.एस. विंग के समन्वय से सभी क्षेत्रीय कार्यालयों का हिन्दी प्रगति डेटाबेस मोड्यूल तैयार करने का प्रयास भी किया जा रहा है जिसका कार्य प्रगति पर है ।

अब मैं हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन का संक्षिप्त विवरण देना चाहूँगा । पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन इस बार ऑनलाइन माध्यम से किया जा रहा है जिसकी अवधि 15 सितम्बर, 2020 से 24 सितम्बर, 2020 तक रहेगी । 28 सितम्बर, 2020 को विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम हिन्दी पखवाड़े के समापन में घोषित किए जाएंगे ।

मेरा मुख्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से विनम्र अनुरोध है कि इन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लें तथा हिन्दी के प्रसार में अपना योगदान दें । अंत में मैं पुनः इस समारोह में आप सभी का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ ।

(राज कुमार)
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

कोरोना काल



जुगल किशोर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

रमेश कुमार राज्य के स्थानीय लेखापरीक्षा (लोकल ऑडिट) विभाग में लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। राज्य की राजधानी जोकि किसी बड़े योजनाकार द्वारा पहले योजना बनाकर बनाया/बसाया गया एक सुन्दर शहर है, में रहते हैं। लोकल ऑडिट विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजधानी में ही सरकारी मकान मुहैया कराने के बारे में बार-बार की गई प्रार्थना को अंततः राज्य सरकार द्वारा मंजूरी मिल गई और राजधानी के एक छोटे से हिस्से में लोकल ऑडिट विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए राज्य के लोक निर्माण विभाग द्वारा पांच वर्ष पूर्व लगभग 200 मकानों का निर्माण किया गया। अब राज्य के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से लोकल ऑडिट विभाग में सेवारत अधिकारी/कर्मचारी इन मकानों में रह रहे हैं।

किसी-किसी अधिकारी में अपने पद की ऐंट जरूर है, परन्तु अधिकतर कर्मचारी खासकर निचले दर्जे वाले गली में आते-जाते एक दूसरे से हंसी-खुशी से बात करते हैं और अपने दुःख-सुख बांटते हैं। इस कॉलोनी के मध्य में एक पार्क है, जहां अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चे सायंकाल में खेलते और बड़े सैर करते नजर आते हैं।

रमेश कुमार ने लेखापरीक्षक की परीक्षा पास कर विभाग में लेखापरीक्षक के पद पर कार्यभार संभाला था और बड़ी ही ईमानदारी, लगन और मेहनत से कार्य करते हुए वे इस पद पर पहुंचे थे। उनके जिज्ञासु स्वभाव और मेहनती होने की वजह से वे विभाग में किसी भी तरह के नियम-कानून के संबंध में एक चलती-फिरती डिक्शनरी जैसे बन गये थे। विभाग में जब कभी भी किसी अधिकारी, कर्मचारी को अपने

सरकारी कार्य में कोई समस्या आती तो वह झट रमेश जी से सम्पर्क करता और तुरन्त समस्या का समाधान हो जाता। बड़े अधिकारियों को भी जब किसी कायदे-कानून की इंटरप्रिटेशन में दिक्कत आती तो नीचे के कर्मचारी कहते कि रमेश जी से पूछ लें, वे सही इंटरप्रिटेशन करेंगे और कोई न कोई रास्ता बतायेंगे।

रमेश जी, जो अब 50 की उम्र के हो चले थे, का व्यक्तित्व बड़ा ही सौम्य था। वे सही बात कहते हुए हिचकिचाते नहीं थे। उन्हें साहित्य पढ़ने का बड़ा शौक था। इसके अतिरिक्त गाने-बजाने का भी शौक रखते थे। उन्हें हारमोनियम बजाना आता था और हर सप्ताह कम से कम एक बार वे अपने घर में हारमोनियम बजाया करते। कुछ पुराने फिल्मी गीतों की धुनें निकालते, कभी-कभी किसी राग का रियाज़ करते। आस-पास के जो पड़ोसी लगभग

उनकी उम्र के थे, वे उनका गीत—संगीत सुनकर आते—जाते मिलने पर उनकी प्रशंसा करते। जो पड़ोसी अभी विभाग में नये भर्ती हुए थे और अभी युवा थे, वे उनका मजाक उड़ाते। नये युवकों को पुराना गीत अथवा राग कैसे पसंद आ सकते थे। उम्र का भी अपना तकाजा होता है। रमेश जी को भी अपने पिता को पसंद आने वाले के.एल. सहगल के समय के गीत अपनी जवानी में कहां पसंद आते थे।

दिसम्बर 2019 के अंतिम दिनों में सुनने में आया कि भारत के साथ लगते चीन के वुहान शहर में एक महामारी फैल गई है, जिसका अभी तक कोई इलाज नहीं निकला है। ये महामारी एक वायरस से फैल रही है, जिसे कोरोना नाम दिया गया है। ये महामारी इतनी घातक है कि इसकी गिरफ्त में आने वाले अधिकतर लोग मर रहे हैं। टी.वी. न्यूज चैनलों पर इसके बारे में दिखाया जाने लगा। कुछ ही दिनों में पता चला कि कुछ भारतीय जो चीन के वुहान में नौकरियों में कार्यरत थे, उनमें से कुछ कोरोना से संक्रमित हुए और वहां से भारत में आये, जिससे यह महामारी भारत में भी आ गई। सबसे पहले मामले केरल राज्य में सामने आये। इसके बाद धीरे-धीरे विदेश से आने वाले भारतीयों के यहां संक्रमित रूप में पहुंचने पर, यह संक्रमण देश के लगभग हर राज्य तक फैल गया।

कोरोना से संक्रमण के मुख्य लक्षण थे, सांस लेने में तकलीफ और खांसी आना, ये कोई अलग तरह के लक्षण नहीं थे, ऐसे लक्षण तो सर्दी, खांसी, जुकाम आदि में दिखाई देते ही हैं। सबसे बुरी बात यह थी कि इस वायरस को मारने अथवा संक्रमित व्यक्ति को इससे बचाने के लिए अभी तक कोई दवा इजाद नहीं हुई थी। मार्च 2020 के अंत में अंततः भारत सरकार को विदेशों को जाने और वहां से आने वाली उड़ानों पर रोक लगानी पड़ी। देश में इस महामारी की रोकथाम के लिए और भविष्य में इससे निपटने की तैयारी के लिए केन्द्र सरकार ने सम्पूर्ण देश में तालाबंदी (लॉक डाउन) कर दी। यह तालाबंदी लगभग 56 दिन तक चली। इस तालाबंदी के दौरान लोगों के घर से बाहर निकलने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, फैक्ट्रियां, प्राइवेट कंपनियों, होटल, मॉल, रेलगाड़ी, बसें, लोकल पब्लिक ट्रांसपोर्ट, कार, ऑटो सब पर तालाबंदी लागू कर दी गई। केवल राशन, सब्जी, फल की दुकानें और अस्पताल खुलने की इजाजत दी गई। जनता को केवल राशन आदि का जरूरी सामान खरीदने के लिए बाजार तक जाने की इजाजत दी गई। रमेश जी के शहर में भी चूंकि कोरोना संक्रमण के कुछ मामले सामने आ चुके थे, इसलिए यहां भी पूर्ण तालाबंदी थी। प्रवासी

लोग जो खोमचा लगाकर, फड़ी लगाकर या दिहाड़ी—मजदूरी कर अपना पेट पालने के लिए इस शहर में आये थे, उन्हें सबसे अधिक मुश्किल आने लगी। ये लोग ताजा कमाते थे, ताजा खाते थे। उनके पास इतने लम्बे समय की तालाबंदी के दौरान घर का खर्च चलाने के लिए धन नहीं था।

सरकार के दिशा—निर्देशों के अनुसार इस महामारी से फिलहाल बचने का केवल एक ही उपाय था, संक्रमित व्यक्ति से बचें तथा अधिक लोग एक जगह एकत्रित न हों। लोग आपस में एक—दूसरे से कम से कम 2 गज की दूरी बनाकर रखें। मुंह पर मास्क लगायें अथवा रुमाल बांधें। बार—बार साबुन से हाथ धोयें।

टी.वी. जो अब जानकारी प्राप्ति का और नई सूचनाओं से अद्यतन रहने का एक सशक्त साधन हो गया है, पर चौबीसों घण्टे कोरोना के बारे में बताया जाने लगा। डिजिटल युग आने के कारण सोशल प्लेटफार्म भी सक्रिय हो चुके हैं। टी.वी. और सोशल मीडिया पर कोरोना संक्रमितों के मरने पर उस व्यक्ति से स्वयं को बचाने के लिए उसके शव तक को हाथ न लगाने के वीडियो दिखाये जाने लगे। संक्रमितों के इलाज के दौरान डॉक्टरों के नख से शिख तक पूर्णतः ढके होने वाले फोटो, वीडियो दिखाये जाने लगे। इस महामारी के

खौफ के इतने वीडियो समाचार चैनलों और सोशल मीडिया पर दिखाये गये कि लोगों में खौफ घर कर गया। लोग आस-पड़ोस के लोगों पर उक्त बीमारी से संक्रमित होने का शक करने लगे। जहां लोग एक-दूसरे से मिलना, दोस्तों से बतियाना पसंद करते थे अब एक-दूसरे से दूर भागते नजर आते। लोगों ने एक-दूसरे को अपने घर बुलाना बंद कर दिया, मानों जैसे दोस्ती, रिश्तेदारी पर भी पाबंदी लग गई हो। यहां तक कि शादी ब्याह पर और मौत होने पर नजदीकी रिश्तेदार भी शादी या मौत वाले घर में जाने से बचने लगे। मौत का भय जो न कराये कम है।

परन्तु महामारी से मौत से भी बड़ी एक चीज है, और वह है बिना महामारी के भूख से मरना। प्रवासी मजदूरों को अब यही डर सता रहा था। इधर प्रवासियों से दो महीने तक किराया न वसूलने की सरकार की अपील के बावजूद मकान मालिक इन मजदूरों से किराया वसूलने का दबाव बना रहे थे। अब प्रवासी मजदूरों के लिए सबसे बड़ी समस्या खड़ी हो गई, मकान मालिक किराया मांगता है और उन्हें अपना पेट भरने तक की मुश्किल हुई पड़ी है। फाके काटने पड़ रहे हैं। जायें तो कहां जायें। अधिकतर मजदूरों, दिहाड़ीदारों ने जैसे-तैसे अपने गांव जाने का रुख

किया, भले ही जाने के सारे साधनों पर पाबंदी की वजह से अधिकतर को 1500 से 2000 किलोमीटर तक पैदल जाना पड़ा।

शहर में मजदूरों की बस्ती में रह रहे मजदूर ने तो खांसी होने पर कोरोना संक्रमण से खौफजदा होकर आत्महत्या ही कर ली। जबकि बाद में उसकी जांच में सामने आया कि उसे कोरोना संक्रमण था ही नहीं।

तालाबंदी के शुरू-शुरू के दिनों में सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक ही आवश्यक वस्तुओं, राशन, सब्जी आदि की खरीद के लिए ही बाजार तक जाया जा सकता था। शाम 7 बजे से सुबह 7 बजे तक कर्फ्यू लागू था। बच्चों को पार्कों में खेलने की मनाही थी। सो, दिनभर बच्चे टी.वी. देखते या मोबाइल के खेलों में व्यस्त रहते। दिन में धूप ज्यादा होने की वजह से कोई भी बाहर कम ही निकलता। इस कॉलोनी के ऊपर के मकानों में रहने वाले परिवार ज्यादातर ऊपरी छत पर चले जाते। इस तरह वहां भीड़ सी हो जाती, परन्तु कोरोना का खौफ इतना हो गया कि लोग ऊपर भी बारी-बारी से जाते। जब एक परिवार नीचे उतर आता तो दूसरा परिवार ऊपर जाता। कुछ किशोर-किशोरियों में छतों पर दोस्ती हो गई। इस प्रकार तरह-तरह की कहानियां इस कोरोना काल में बन रही थीं।

ज्यादातर महिलाओं को निंदा रसपान करने का यह समुचित अवसर जान पड़ता था और उन्होंने मोबाइल पर और आस-पड़ोस में इसका पूरा लाभ उठाना शुरू कर दिया था।

पुरुष घर में रहकर ज्यादातर बोर हो जाते क्योंकि पहले वे छुट्टी के दिन अपने दोस्तों के साथ ताश या अन्य खेल खेलने जाया करते थे, वह अब नहीं खेल सकते थे। बहुत से घरों में सारा दिन पुरुष के घर में ही रहने से महिला और पुरुष के झगड़े होने लगते।

परन्तु बहुत से परिवारों में सारा दिन पुरुषों के घर रहने का महिलाओं को फायदा भी हुआ, पुरुषों को महिला के सारा दिन किसी न किसी काम में लगे होने का उन्हें अनुभव होने लगा, यह पता लगा कि घर में भी महिला को कितने काम होते हैं। इस तरह कई पुरुषों में अपनी पत्नियों के प्रति व्यवहार में बदलाव आने लगा।

परन्तु लगातार सारा दिन घर में रहने के कारण सभी को घर कैद सा लगने लगा। सभी लोग घर से बाहर जाने को जैसे तरस गये। खासकर बच्चे और युवा जो बाहर का खाना-डोमीनो पीजा आदि पसंद करते थे, उन्हें तो जैसे बंदिश लगने लगी।

रमेश जी को सैर करने की आदत थी। वे सुबह उठकर पास के पार्क में

सैर करने चले जाते। दोपहर को खाना खाने के बाद फिर से सैर करते और रात का खाना जो कि अमूमन 8-8.30 बजे के आस-पास लेते थे, उसके बाद अपनी गली के अंदर सैर जरूर करते। रमेश जी के बगल में एक घर छोड़कर उनके कार्यालय के एक सहकर्मी श्री जागीरथ रहते थे। वे अपने घर के आंगन जोकि मात्र आठ फुट का था, में ही सैर करते। परन्तु रमेश जी को गली में चक्कर लगाते देख, उनका भी मन करता कि वे भी घर से बाहर निकलें और गली में चक्कर लगायें। परन्तु पुलिस द्वारा तालाबंदी का पालन न करने वालों को पीटे जाने के प्रतिदिन आ रहे वीडियो देखकर वे मन को मार लेते। उन्होंने रमेश जी के वाट्सएप नंबर पर ऐसे वीडियो भेज दिये ताकि रमेश जी भी डर जायें और अपने घर के आंगन में ही सैर करें। परन्तु रमेश जी पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वे बदस्तूर अपनी रात की सैर भी जारी रखे हुए थे। जागीरथ जी को उन्हें देख, जलन होती थी। जाहिर है आदमी अपने दुःख से कम दुःखी होता है और दूसरे के सुख से ज्यादा। एक दिन जब रमेश जी रात 9 बजे सैर कर रहे थे, पुलिस की एक जिप्सी गली के अंदर आ गई और इत्तेफाक से रमेश जी ने दूर से देख लिया। उन्होंने अपनी कदम चाल तेज कर ली और जल्दी से अपने घर के आंगन

में पहुंच गये। जागीरथ जी ये सब देख रहे थे।

अगले दिन, रात 9 बजे जैसे ही जागीरथ जी का रमेश से सामना हुआ, उन्होंने रमेश जी को डराने के लिए बोल दिया – ‘पुलिस आ गई ... पुलिस आ गई।’ रमेश जी बिल्कुल विचलित नहीं हुए और आराम से गली में टहलते रहे। क्योंकि उन्हें पुलिस की गाड़ी की कोई आवाज सुनाई नहीं दी थी, और वे जागीरथ जी के बोलने के अंदाज से समझ गये थे कि वे झूठ-मूठ का डरा रहे हैं। जागीरथ जी ने कहा – ‘पिटार्ई का ज्यादा शौक है क्या...? जब पुलिस के डंडे पड़ेंगे तब पता चलेगा।’ इस पर रमेश जी ने कहा – ‘जागीरथ भाई ऐसा है, या तो पुलिस माफ कर देगी, या फिर चार डंडे मार लेगी। मैं कोई कोरोना तो फैला नहीं रहा, मैं केवल उसी समय सैर कर रहा हूँ जब गली

में और कोई नहीं है, जब और लोग निकलेंगे तो मैं बिल्कुल भी सैर नहीं करूंगा। भाई, मुख्य बात तो यह है कि भीड़ इकट्ठी नहीं करनी है। खाना खाने के बाद सैर की आदत है, सो आ जाता हूँ गली में, दो-चार चक्कर लगाने।’ जागीरथ जी ने कहा – ‘और लोग भी तो घर में ही सैर करते हैं तो आपको बाहर आकर सैर करने की क्या पड़ी है?’ इस पर रमेश जी ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने घर की ओर चले गये।

रमेश जी के एक मित्र थे फौज में। वे कई दिन से उन्हें फोन करके कह रहे थे कि एक व्यक्तिगत डीलिंग के सिलसिले में लीगल दस्तावेज उन्होंने तैयार किया है जो वे रमेश जी को दिखाना चाहते थे। चूंकि रमेश जी खूब पढ़े-लिखे विद्वान आदमी थे, इसलिए उस फौजी मित्र को उनकी सलाह लेना जरूरी लगता था।



दो-तीन सप्ताह तो रमेश जी उसे टालते रहे। कहते रहे कि तालाबंदी चल रही है, ऐसे में वे उसके घर नहीं आ सकते, क्योंकि केवल अति आवश्यक कार्य के लिए ही शहर के दूसरे इलाकों में जाया जा सकता था। अंततः एक दिन दोपहर 12 बजे वो फौजी रमेश जी के घर पर आ गया और उन्हें अपनी मोटर साइकिल पर साथ बिठाकर ले गया और बोला मुझे कोई नहीं पूछेगा कि मैं आपको क्यों ले जा रहा हूँ। जब उन्हें वह फौजी साथ बिठाकर ले जा रहा था तो जागीरथ जी और रमेश जी के बगल के ऊपर रहने वाले विनोद मिश्रा ने उन्हें देख लिया। वह फौजी दस्तावेज चैक कराने के लगभग 2 घंटे बाद रमेश जी को घर वापस छोड़ गया।

रात को खाने के बाद जब रमेश जी गली में सैर को निकले तो अपने घर के आंगन में सैर कर रहे जागीरथ जी ने कहा — ‘आज भी पता नहीं चला कि 7 बजे के बाद सैर का क्या परिणाम हो सकता है। दिन में जो पुलिस वाला (जागीरथ जी उस फौजी को पुलिस वाला समझ गये थे) तुम्हें ले गया था, अच्छी मेहमान नवाजी (पिटार्ई) की होगी। पर लगता है तुम्हें समझ नहीं आने वाली। फिर से पुलिस के डंडे खाओगे...।’

रमेश जी ने कहा ‘आपकी समझदारी की दाद देनी पड़ेगी, भला

खातिरदारी के बाद पुलिसवाला घर छोड़ कर जाता? जागीरथ जी की गलत-फहमी दूर की और सारी बात बताई। परन्तु जागीरथ जी रमेश जी को देखकर अंदर से इस बात पर दुःखी हुए कि जो उन्होंने सोचा था वह गलत साबित हो गया और रमेश जी की पिटार्ई क्यों नहीं हुई।’

अगले दिन सुबह जब रमेश जी सैर करके वापस लौट रहे थे, तो विनोद मिश्रा इत्तेफाक से अपनी बालकनी में खड़े थे, बोले — ‘रमेश जी, कल आप 12 बजे एक फौजी के साथ कैसे जा रहे थे, क्या घर में शराब का कोटा खत्म हो गया था? लगता है कैंटीन से शराब की और बोतलें लेने गये होंगे।’

रमेश जी को उसे भी स्पष्ट करना पड़ा और बताना पड़ा कि वे तो शराब पीते ही नहीं हैं। उस फौजी के साथ जाने का कोई और कारण था। रमेश जी को हंसी आ गई और वे मन ही मन सोचने लगे आस-पड़ोस के लोग दूर से देखकर आपके बारे में किस-किस तरह का गलत अनुमान लगाते हैं।

15 मई के आस-पास की बात है, जागीरथ जी के ऊपर के मकान में रहने वाले रविन्द्र ने बातचीत के दौरान कहा कि राज्य सरकार ने केन्द्र की तर्ज पर महंगई भत्ता जुलाई 2021 तक फ्रीज कर दिया है। इसके

लिए हवाला दिया है कि सरकार को कर कम प्राप्त हो रहा है, अपनी असमर्थता के कारण वह बहुत से खर्च कम करने जा रही है और सरकारी कर्मचारियों का महंगई भत्ता फ्रीज कर रही है। इस पर जागीरथ जी ने कहा बस देखते जाओ आगे सरकार क्या-क्या करती है। सरकार का बस चले तो सरकारी कर्मचारियों के मुंह की रोटी छीन ले। इस पर रमेश जी ने कहा ऐसी आपात स्थिति में सरकार धन कहां से जुटाये। आप दोनों अपने महंगई भत्ते के लिए रो रहे हो। हम सबको कम से कम वेतन तो मिल रहा है, भले ही हमने घर बैठे बहुत कम काम किया है, सरकार ने हमारे वेतन पर तो कोई कट नहीं लगाया।

आप उन दिहाड़ीदार मजदूरों, फैंक्ट्री के कामगारों, रेहड़ी-फड़ी पर गैर-जरूरी सामान बेचने वालों और रिक्शा, ऑटो वालों के बारे में सोचकर देखो, जिन्हें दो महीने हो गये, तनखाह अथवा रोजी-रोटी नहीं मिली। अब रोटी के लाले पड़े हैं, जो थोड़ा-बहुत बचाकर रखा था, वो 10-15 दिन में खत्म हो गया। सरकारी अथवा गैर-सरकारी संस्थाएं कभी उन तक खाना पहुंचा देती हैं कभी नहीं। कितने-कितने दिन उन्हें फाकों में गुजारने पड़ रहे हैं। मैं कोई सरकार का हिमायती नहीं हूँ परन्तु इतना जानता हूँ कि राजा

को भी निर्णय देश-काल को देखते हुए लेने पड़ते हैं। ऐसी महामारी के समय हमारा भी तो अपने देश के प्रति कोई फर्ज बनता है। देश भी हमारा है, सरकार भी हम लोगों के कारण ही है, ऐसे में हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी भी कुछ बनती है कि नहीं।

सरकार, सरकारी कार्यालय भी कब तक बंद रखती सो 18 मई से 33 प्रतिशत स्टाफ के साथ सरकारी कार्यालय खुलने लगे तथा कर्मचारियों को 33 प्रतिशत के हिसाब से दफ्तर बुलाया जाने लगा। मतलब सप्ताह में दो या तीन दिन जाना होता था। शाम को विनोद मिश्रा, रविंद्र, जागीरथ और रमेश जी जब मिले तो बातों के दौरान विनोद मिश्रा ने कहा — सरकार बहुत गलत निर्णय ले रही है, अभी सरकारी दफ्तर बंद ही रखने चाहिए थे, दफ्तर खुलने से कोरोना फैलने की ज्यादा संभावना हो जाएगी, किसी एक को भी दफ्तर में हो गया तो सभी कर्मचारियों में फैल जाएगा। इस पर, रमेश जी ने कहा — अब तुम्हें सप्ताह में दो या तीन दिन जाना भी बोल लग रहा है। लगभग तीन महीने से घर बैठे हो, तो घर बैठने की जैसे आदत हो गई है। ये तो वैसे ही लगता है जैसे एक कहानी में था कि कैदी को कैदखाने से जाने के लिए कहा जाता है तो वह कहता है, अब मैं कैद से आजाद नहीं होना चाहता, मैं यहीं रहना चाहता

हूँ। आदमी आदत का मोहताज है, उसे लम्बे समय तक जैसी परिस्थिति में रहने की आदत पड़ जाये तो वह उस परिस्थिति से बाहर नहीं आना चाहता, जब तक कोई अच्छे से झिंझोड़ न दे। ऐसा ही अंग्रेजों और मुगलों के शासनकाल में हुआ था। जनता को गुलामी में रहने की आदत ही पड़ गई थी। आजादी प्राप्त करने में तभी कई सदियां लगीं। जब लेखकों, युवाओं की क्रांति ने जन-मानस को झिंझोड़ कर जगाया तब जाकर सभी एकजुट हुए और अंग्रेजों को यहां से जाना पड़ा और भारत आजाद हुआ। आज सरकार दफ्तर न आने पर तनख्वाह काटने की बात करे, तो तुम कभी ऐसी बात मन में नहीं लाओगे। रही बात महामारी की तो उन मजदूरों और मजबूरों को जाकर पूछो, उनकी जान पर बन आई है। उनके लिए महामारी से पहले भूख से मरने के हालात हुए पड़े हैं। उन डॉक्टरों, नर्सों और पैरामैडीकल स्टाफ की सोचो जो इस महामारी में स्वयं और अपने परिवार को खतरे में डालकर दिन-रात काम कर रहे हैं। उन्हें छुट्टी तक नहीं मिल रही है। हमें तो केवल दफ्तर जाना है और दफ्तर ने सतर्कता और सावधानी के सारे इंतजाम कर दिये हैं, फिर भी हम दफ्तर जाने से बचने की कोशिश करें तो इसमें हमारी ही अकर्तव्यपरायणता है।

जून के पहले सप्ताह में तालाबंदी में बहुत सी छूटें देने से अब बाज़ार खुलने लगे। सरकारों को अपना खर्च चलाने के लिए धन जो जुटाना था। सो, जहां से भी सरकार को अधिक कर की वसूली होती थी वो सब खोल दिया गया। परन्तु हाय! ये कैसी विडम्बना हुई कि शराब के ठेके तो खुल गये थे, परन्तु मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे खोलने की इजाजत नहीं दी गई थी। शराब के ठेकों पर एकदम लम्बी-लम्बी कतारें लग गई और मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे सुनसान पड़े थे।

सरकार भी कब तक तालाबंदी को जारी रखती, गैर-जरूरत के सामान बेचने वाले दुकानदारों, व्यापारियों का सब्र भी टूटने लगा था। अतः सरकार को दुकानदारों, व्यापारियों को कारोबार खोलने की इजाजत देनी पड़ी। लगभग ढाई महीने की तालाबंदी और मीडिया के माध्यम से लगातार लोगों को जागरूक करने से सरकारें समझ रही थीं कि लोगों को समझ में आ गया होगा कि स्वयं का बचाव कैसे करना है। परन्तु जुलाई का अंत आते-आते, देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या कई लाख हो गई और इससे मरने वालों की संख्या भी हजारों में हो गई थी। विश्वभर के देशों को इंतजार था तो एक ऐसी वैक्सीन का, जो इस महामारी से निजात दिला सके।

क्या बुढ़ापा अभिशाप है?



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सं. 135, न्यू बी.ई.एल. रोड
एजीज लेआउट, बैंगलूर

“पिताजी दरवाज़ा खोलिए” बाज़र से ज़ोर की आवाज़ सुन पड़ी। सुधाकर राव, अकेले घर में रहकर पुस्तक पढ़ रहे थे। बाहर से दरवाज़े की घंटी तथा बच्चों की आवाज़ सुनते ही मंच से उठने लगे। परन्तु कितनी कोशिश करने पर भी उठ न सके। ज़ोर से कुछ कहने के लिए प्रयत्न करने पर भी मुँह से बात ही न निकली। हमेशा पत्नी सुकन्या साथ में ही रहती थी। परन्तु उस दिन बेटे, बहुएँ तथा पोतों के साथ सिनेमा देखने गयी थी।

कितनी बार घंटी बजाने पर भी दरवाज़ा न खोलने पर माँ बेटे घबरा गए। घर के अंदर, राव जी अपनी विवशता पर तड़प रहे थे। “दरवाज़ा तोड़कर ही हमें अन्दर जाना होगा। पता नहीं कौन से संकट में पड़े होंगे तुम्हारे पिताजी” माँ ने रोते-रोते अपने बेटों से कहा। दोनों बेटों ने मिलकर दरवाज़ा तोड़ दिया। अन्दर आकर देखने पर राव जी की दशा चिन्ताजनक थी। जमीन पर गिर पड़े

थे। बात भी न कह पा रहे थे। तुरन्त बेटों ने डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने राव जी की पूरी जांच करके बताया “आपके पिताजी को लकवा (स्ट्रोक) हुआ है। मुँह तथा पैरों को हुआ है। बुढ़ापे में गिरने के कारण, शरीर को चोट लगी है। अच्छी तरह देखभाल कीजिए।” औषधियों की सूची देकर डॉक्टर चले गए।

घरवालों को तो अपनी दुनिया अंधेरी नज़र आने लगी। सुकन्या तो सिसकते हुए पति के पास ही बैठ गई। खाने-पीने में मन ही नहीं लग रहा था। हमेशा पति की सेवा में ही लगी रही।

सुधाकर राव सरकारी कॉलेज के प्रिंसिपल पद से निवृत्त हुए थे। सेवा की अवधि में, अपनी कर्तव्य निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे। अनुशासन के लिए अत्यन्त महत्व देते थे। राव जी का दो बेटे तथा एक बेटी का सुखी कुटुंब था। बच्चों को खूब पाला-पोसा, लिखाया-पढ़ाया तथा उनकी इच्छाएँ पूरी की। तीनों संतान अच्छी संस्कृति

तथा संस्कार वाली थीं। तीनों को इंजीनियर बनाया। निष्ठा की सेवा से प्राप्त आमदनी से कुछ बचाकर बड़ा घर बनाया। दो बेटों के लिए अलग-अलग घर बना सकते थे परन्तु उनका उद्देश्य था कि एक घर में दोनों बच्चे साथ में रहें तो परिवार मज़बूत बनेगा। एक संस्कारयुक्त गौरवान्वित परिवार में बेटे, माँ-बाप के साथ रहना ही अच्छी संस्कृति है।

अगले दिन, डॉक्टर ने राव जी की जांच करके बताया, “आप सब घबराइए मत। राव जी के जीवन को कोई खतरा नहीं, परन्तु कब तक ठीक हो जाएँगे यह कहना मुश्किल है। समय-समय पर दवा देते रहिए, फिजियोथेरेपिस्ट से रोज राव जी को व्यायाम करवाइए, घर का वातावरण शांत रखिए। उनके सामने आप लोग या बच्चे ज़ोर-ज़ोर से बात न कीजिए।”

डॉक्टर के चले जाने के पश्चात, घर के सभी सदस्य अचंभित रह गए। पत्नी सुशीला हमेशा चिंतित रहने पर

भी पति की देखभाल खूब करती थी। बेटे तो कुछ दिन छुट्टी लेकर पिता की सेवा करते रहे। परन्तु उनकी भी अपनी परेशानियाँ तथा उलझनें थीं। राव जी तो अपनी विवशता पर अत्यन्त निरीह और बेबस हो गए थे। अपने कारण, बेटे, बहुएँ तथा पत्नी को कितनी परेशानियाँ सहनी पड़ी हैं। यही चिन्ता में हमेशा डूबे रहते थे। किन्तु बातों में व्यक्त कर नहीं सके थे।

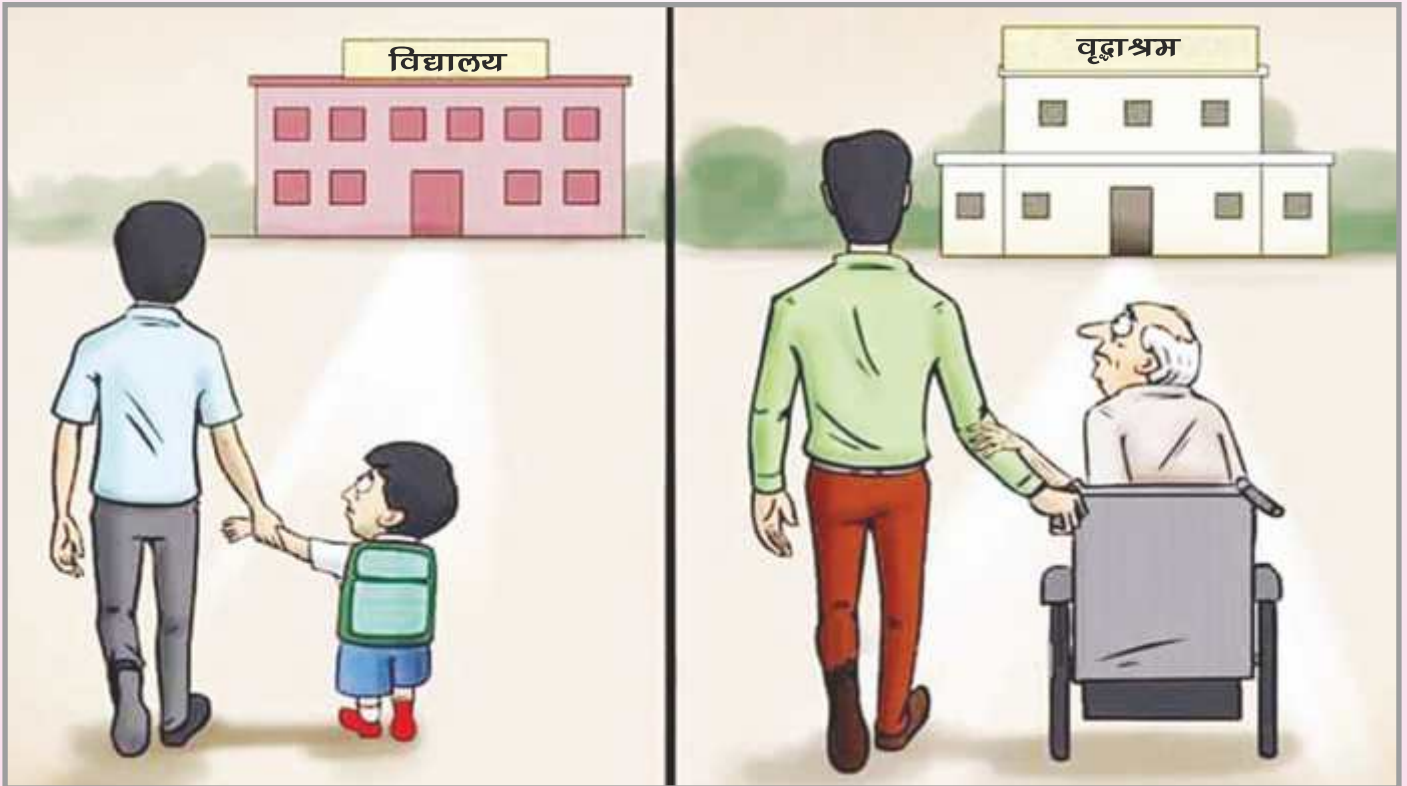
राव जी तो अपने परिवार से संतुष्ट थे। उन्होंने अपने परिवार को एक आदर्श अविभक्त बनाया था। दो बहुएँ भी मध्यम वर्ग की संस्कारयुक्त लड़कियाँ थीं। राव जी की बेटी सुधा खूब पढ़ी-लिखी सुन्दर लड़की थी। उसकी शादी एक संस्कारयुक्त,

गौरवान्वित परिवार के खूब पढ़े-लिखे शानदार लड़के से हुई थी। कनाड़ा में बेटी और दामाद इंजीनियर थे। दो बच्चों वाली सुधा के जीवन से राव जी अत्यन्त संतुष्ट थे। पत्नी सुशीला, नाम के अनुरूप अत्यन्त साधु स्वभाव की पतिव्रता स्त्री थी। अपनी अच्छी संतान तथा गुणवान पत्नी को भगवान का वरदान मानकर राव जी जीवन में संतुष्ट थे।

पिताजी की अस्वस्थता के बारे में बेटों ने अपनी बहन सुधा को नहीं बताया। भाईयों ने सोचा “दीदी को बहुत दूर से तुरन्त आने में कष्ट होगा। पिताजी के ठीक होने के पश्चात ही हम उसको बताएँगे। सुधा भी हफ्ते में दो-तीन बार फोन करके सबका ख्याल रखती थी। एक दिन बहुओं ने

उसको बताया कि पिताजी का स्वास्थ्य अनेक महीनों से, लकवा के कारण बिगड़ गयी। वे बात भी न कर सकते हैं।” इससे सुधा अत्यन्त दुःखित हुई। वह पहले ही न बताने के कारण, भाईयों पर क्रोधित भी हुई। एक हफ्ते के अन्दर अपने पति, बच्चों के साथ मायके आई। पिता की बीमारी तथा माता की विवशता देखकर सुधा की रूलाई की सीमा न रही। बेटे को देखते ही राव जी की खुशी का ठिकाना न रहा। परन्तु मुँह से कुछ भी न कह सके। आँखों से आँसू टपकने लगे। सुधा प्यारे पिताजी को गले से लगाकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। यह देखकर बेटे, बहुएँ और बच्चे भी रोने लगे।

राव जी की बीमारी से घर का कार्य भी अधिक बढ़ गया था। बेटे नौकरी



पर चले जाने के कारण, माँ, बेटी, सुधा, राव जी को मालिश आदि करती थी। बहुएँ तो रसोई में तथा बच्चों की देखरेख में व्यस्त रहती थी। सुशीला दिन-भर की बातें पति को सुनाती थी। पर राव जी के मुँह से बातें निकलना असंभव था। एक फिजियोथेरेपिस्ट आकर रोज व्यायाम कराते थे।

एक दिन हमेशा शांत रहे घर में, अचानक ज़ोर-ज़ोर की बातें, चिल्लाहट सुनाने लगी। राव जी, बेटों की चिल्लाहट सुनकर चिन्ता में डूब गए। अकेले कमरे में बैठे राव जी सोचने लगे “आखिर क्या हुआ है घर में? शांति गृह जैसे मेरे घर में क्यों झगड़े का वातावरण हुआ है? यही प्रश्न उन्हें सताने लगा। सुशीला से भी उनके प्रश्न का जवाब न मिला।

दूसरे दिन सुबह ही दोनों बेटे राव जी के कमरे में आए। बहुएँ भी साथ में थीं। सुधा, रसोई में व्यस्त थी। बेटे, बहुओं को अपने कमरे में देखकर राव जी फूले न समाए। सुरेश बोला “पिताजी! आप की बीमारी के कारण घर की स्थिति बिगड़ गई है।” यह सुनते ही राव जी के दुःख की सीमा न रही। बोलने की इच्छा होने पर भी मुँह से बात न निकली। माँ सुशीला तथा सुधा कमरे में आए। सुरेश ज़ोर से चिल्लाने लगा “देखो दीदी, पिताजी की बीमारी के इलाज की कोई जिम्मेदारी न लेगा सुमंत। खर्च भी न उठा लेता।” बड़े भाई की बातों

से गुस्से में आकर सुमंत बोला “दीदी मैं भी अनेक जिम्मेदारी और खर्च उठा लेता हूँ। फिर भी वह मुझ पर शिकायत करता ही रहता है।” पिताजी की बीमारी पर बेटों का झगड़ा देखकर सुधा को असहनीय दुःख हुआ। जीवन भर अपनी संतान की प्रगति की मेहनत किए बाप के प्रति बेटों का बर्ताव देखकर आश्चर्य भी हुआ। माँ सुशीला अति कोमल स्त्री, सिर्फ रोती रहीं। सुधा अपने दोनों भाईयों को सांत्वना करते हुए बोली “शांत रहो! पिताजी की बीमारी दूर होने के पश्चात तुम दोनों को कोई समस्या न होगी, घर का वातावरण शांत होगा और तुम दोनों आराम से रहोगे। अपनी दीदी की बातों से दोनों भाई सहमत न हुए। “सुरेश बोला न दीदी, आगे हम साथ में न रह सकते हैं। तब सुधा ने गुस्से में पूछा तब तुम्हारा क्या निर्णय है?” तब दोनों भाई बोले “हमें अलग रहना है।” यह सुनते ही माँ सुशीला चकित हुई। तब सुधा बोली “पिताजी ने तुम दोनों को साथ में रहने के लिए इतना बड़ा घर बनाया है। कैसे अलग कर दें।” तब सुरेश बोला, “क्यों नहीं दीदी! बीच में एक दीवार लगाने पर दो घर होगा। हर एक घर में दो कमरे होते हैं। रसोई घर बड़ा रहने के कारण उसे हम दो बना सकते हैं।” सुमंत ने भी अपने बड़े भैया की बातों पर सहमति दी। बेटों की बात सुनकर सुशीला की आँखों से अश्रु की धारा बहने लगी। राव जी के दुःख की

सीमा ही न रही। कहना चाहने पर भी मुँह से बातें न निकल सकीं। सुधा रोते हुए पूछने लगी, “अरे भाईयों! तुम दोनों पहले ही तैयार हो अलग रहने के लिए, माँ-बाप कहां रहेंगे? इसके बारे में सोचा है तुम दोनों ने?” तब छोटा बेटा सुमंत बोला “सुरेश तो बड़ा है। बड़े बेटे के पास ही रहते हैं।” तुरंत सुरेश बोला “मैं सिर्फ बड़ा हूँ। परन्तु तुम माँ-बाप के लाड़ले हो। तुम्हारे पास ही रहेंगे।” माँ-बाप को रखने के बारे में दोनों भाईयों के वाद-विवाद सुनकर सुधा अचरज में पड़ गई। वह माँ के पास बैठकर रोने लगी। तब भाईयों ने उन्हें सांत्वना देने का बहाना करते हुए बोले “दीदी, तुम क्यों चिन्ता करती हो, आजकल तो वृद्धाश्रम की कमी ही नहीं है, पिताजी को पेंशन मिलती है ना। उसे देकर दोनों आराम से जीवन बिता सकते हैं।” इन बातों से माँ, बाप और सुधा चकित हो गए।

सुधाकर राव ने अपनी ईमानदारी की आमदनी से एक सुन्दर मजबूत बड़ा घर बनवाया था। लेकिन अब वही घर कमजोर दिखने लगा। राव जी बेबसी तथा परेशानी से तड़पते हुए, अपने दिए हुए संस्कारों से गलतियाँ ढूँढ़ रहे थे। जिस भरोसे पर उन्होंने अपने अटूट परिवार की नींव डाली थी, वही भरोसा खंड-खंड हो गया था। पत्नी सुशीला के आँसू भरी आँखों को देखते हुए अपने आप प्रश्न पूछने लगे “क्या बुढ़ापा ही शाप है।”

पुष्टि मार्ग और सूरदास



नरेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
डी-5, सूरजकुण्ड कालोनी
पोस्ट गोरखनाथ, गोरखपुर

पुष्टि का अर्थ है ईश्वर की कृपा अथवा ईश्वर का अनुग्रह। कहा जाता है कि शुद्ध पुष्टि जिसे प्राप्त हो गई वह ईश्वर का अनन्य भक्त हो जाता है। मथुरा के निकट नाथ द्वारा में हुई खोज के अनुसार पुष्टि मार्ग के प्रणेता स्वामी वल्लभाचार्य जी का जन्म सन् 1478 में हुआ था। विद्वानों के मतानुसार सूरदास जी का जन्म 1483 में हुआ अथवा उसके आसपास हुआ माना जाता है। आगे चलकर सूरदास जी स्वामी वल्लभाचार्य के शिष्य बने जिन्होंने पुष्टि मार्ग चलाया। पुष्टि मार्ग के चार रास्ते बताये गये हैं जिन्हें पुष्टि प्रवाह, पुष्टि पुष्टि, मर्यादा पुष्टि और शुद्ध पुष्टि के नाम से जाना जाता है। स्वामी वल्लभाचार्य जी का विशेष जोर शुद्ध पुष्टि पर था जिसके अनुसार भक्त अपने को शून्य मानते हुए परमपिता परमेश्वर को ही सब कुछ मानता है। वल्लभाचार्य जी श्रीकृष्ण के परम भक्त थे, इसलिये उन्होंने अपने समय के आठ प्रमुख रचनाकारों को चुना जो कवि भी थे और गीतकार भी थे। ये थे महात्मा सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, कृष्ण दास, गोविन्द स्वामी, नंददास, क्षितियास और चतुर्भुज दास। इन आठ कवियों में महात्मा सूरदास विलक्षण प्रतिभा संपन्न थे। वे मथुरा में यमुना किनारे गरुघाट पर रहते थे और यहीं पर सन् 1510 में इनकी भेंट स्वामी वल्लभाचार्य जी से हुई। वल्लभाचार्य जी ने इनसे कुछ पद सुनाने की इच्छा प्रकट की। सूरदास जी ने दो पद सुनाये :-

सो सम कौन कुटिल खल कामी।
जेहि तनु दियो ताहि विसरायो ऐसो कौन हरामी॥

और दूसरा पद था :-

प्रभु हौं सब पतितन कौटी कौ।
और पतित सब दिवस चारि के,
हौं तो जनमत ही कौ॥

इन पंक्तियों को सुनकर वल्लभाचार्य जी बहुत प्रभावित हुए और उन्हें सूरदास की ये दैन्य भावना अच्छी नहीं लगी। उन्होंने सूरदास को कहा कि सूर हैको ऐसो काहे घिघियात हौ। वल्लभाचार्य जी ने सूरदास को पुष्टि मार्ग में दीक्षित किया और कृष्ण लीला से अवगत कराया। कृष्ण भक्ति के प्रति दीक्षित किया।

स्वामी वल्लभाचार्य जी की मृत्यु के पश्चात पुष्टि मार्ग का आचार्यत्व उनके प्रभु स्वामी विद्वलनाथ ने संभाला। सन् 1559 के आसपास स्वामी विद्वलनाथ जगन्नाथ पुरी गए और अपने साथ सूरदास जी को भी ले गये। कहा जाता है कि रास्ते में सूरदास जी की भेंट गोस्वामी तुलसीदास जी से भी हुई। “खंजन नैन रूप रस माते” नामक एक पद गाते हुए सूरदास जी सन् 1583 में गोलोक वासी हुए। यह एक अनुमान ही है कि वे सौ वर्षों तक जीवित रहे थे। पुष्टि मार्ग में दीक्षित सूरदास जी श्रीकृष्ण के सच्चे भक्त थे। कहा जाता है कि उनके पास दिव्य चक्षु थे जिससे उन्हें

सब कुछ दिखाई दे जाता था। नागरी प्रचारिणी सभा काशी के अन्वेषणों के आधार पर सूरदास जी द्वारा रचित रचनाओं की संख्या 16 बतलाई गई है, अर्थात् सूरसागर, सूर सारावली, साहित्य लहरी, गोवर्धन लीला, दशम स्कंध टीका, नागलीला, षट् संग्रह, प्राण प्यारी, व्याहलो, भागवत भाषा, सूर पचीसी, स्फुट पद, सूरसागर सार, एकादशी महात्म्य, रामजन्म तथा नवदमयन्ती। महात्मा सूरदास जी की पुष्टि सम्प्रदाय दीक्षित और सर्वश्रेष्ठ रचना “सूरसागर” ही है। इस रचना के कारण हिन्दी साहित्य में उन्हें बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त है। उन्होंने श्रीमद्भागवत की कथा के अनुसार कृष्ण लीला संबंधी पदों की रचना की है। आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी के अनुसार सूरसागर के पदों की संख्या चार हजार नौ सौ बत्तीस बतायी गई है। सूरसागर को हिन्दी के सभी आचार्यों ने सूरदास जी की प्रमाणिक रचना माना है, जो शून्य से शुद्धि की और शुद्ध से परम शुद्ध की ओर ले जाती है और यही पुष्टि मार्ग का मौलिक उद्देश्य भी है।

पुष्टि मार्ग प्रेम की प्रवृत्ति से जुड़ा हुआ है। ईश्वर से अपार प्रेम हो जाये तो जीवन में उत्कृष्टता आ जाती है। सूरदास जी के पूर्व निर्गुणोपासना के ज्ञान मार्गी रचनाकारों ने यद्यपि निर्गुण भक्ति को ऊँचाइयों तक पहुँचाया लेकिन आम जन जीवन को इसमें नीरसता ही अधिक लगी। संभवतः इसीलिए वल्लभाचार्य के अनुयायी सूरदास ने निर्गुण उपासना के ज्ञान मार्ग को आम जन-जीवन के लिए और निरसता को सरसता में बदलने के लिए लिखा :—

प्रेम प्रेम तै होई, प्रेम तै पारहिं पाइये।
प्रेम बन्धौ संसार प्रेम परमारथ लाइये॥

महात्मा सूरदास के ‘सूर सागर’ में प्रेम के अनेकों रूपों का सजीव चित्रण हुआ है। वात्सल्य प्रेम के संबंध में सूरदास जी की रचनाओं का अत्यन्त व्यापक महत्व है। श्रीकृष्ण के चरण कमलों की वन्दना करते हुए वे लिखते हैं :—

चरन कमल बन्दौ हरिराई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे,

अन्धे को सब कुछ दरसाई।
बहिरौ सुनै गूंग पुनि बोले,
रंक चली सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय,
बार बार बन्दौ तिहि पाई॥

गोस्वामी तुलसीदास ने भी शुद्ध-पुष्टि मार्ग का ही रास्ता चुना और वे भी लिखते हैं :—

मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल द्रवहु सकल कलिमय दहन॥

सूरदास जी निर्गुण ब्रह्म की भक्ति को कठिन मानते हैं और सगुण उपासना पर बल देते हुए लिखते हैं :—

अविगत गति कछु कहत न आवै,
ज्यों गूंगे मीठे फल को रस अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबहीं जु निरंतर अमित तोरप उप जावै।
मन-बानी को अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख मुन-जाति-जुगति-बिनु निरीलंब कित धावै
सब विधि अगम विचारै ताते सूर सगुन पद गावै॥

भगवान की साकार लीला का वर्णन करते हुए उनकी महानता का गुणगान करते हैं, वे लिखते हैं :—

गोविंद प्रीति सबनि की मानत।

जिंहिं—जिंहिं भाइ करत जन सेवा, अन्त की गति जानत।
सबरी कटुक बेर तजि, मीठे चखि, गोद भरी ल्यायी।
जूठन की कछु संक न पानी, भच्छ किये सत भाई।
संतत भक्त मीत हितकारी स्याम विदुर कैं आये।
प्रेम विकल अति आनंद उर धरि कदली-छिकुजा खाये।
कौरव काज चले रिषि सापन, साक पत्र सु अघाए।
सूरदास करुना निधान प्रभु, जुग जुग भक्त बढ़ाए॥

ईश्वर सबके प्रेम के भूखे हैं। जो जिस भाव से उनकी सेवा करता है, उसके हृदय को पहचानकर उसे जानकर, उसकी सेवा को स्वीकार करते हैं। शबरी ने चख-चख कर खट्टे बेर अलग रखे और मीठे बेर भगवान राम को अर्पित किये। उसके बेर जूठे हैं, इसका कुछ विचार न

करके भगवान ने उन बेटों को बड़े प्रेम-भाव से खाया। विदुर के दासी पुत्र होने का विचार नहीं करके विदुर के घर गये। विदुर की पत्नी ने प्रेम की आतुरता में केले के छिलके खिलाये। केले के छिलके खाकर उनका (श्रीकृष्ण) पेट भर गया। मुनि दुर्वासा द्रौपदी के घर गये। अपना आदर नहीं पाकर वे पाण्डवों को श्राप देने ही वाले थे। द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण को याद किया — द्रौपदी के बर्तनों में स्वादिष्ट अन्न भर गया। सूरदास जी का कहना है कि भगवान अपने भक्तों की बात को सदा सुनते आये हैं, वे दया के सागर हैं। युगों-युगों से अपने भक्तों की बात को बड़ा बनाते आये हैं।

पुष्टि मार्ग पर चलने वालों का सदा यह विश्वास रहा है कि भगवान सदा प्रसन्न रहते हैं। इस मार्ग पर चलने वाले सदा उनकी प्रसन्न रूप में ही उपासना करते आ रहे हैं। भगवान राम के प्रसन्न रूप का वर्णन तुलसीदास जी के शब्दों में देखें:—

प्रसन्न तां यान गताभिषेकतः,
तथा न मस्ते वनवास दुःखतः।
मुखाम्बुज श्री रघुनन्दनस्य सा
सदास्तु मे मंजुल मंगलप्रदा॥

सूरदास जी का मत है कि संसार की प्रत्येक घटना भगवान श्रीकृष्ण की कृपा पर निर्भर है। पुष्टि मार्ग के स्पष्ट छाप वाली उनकी पद रचना का एक उदाहरण देखें:—

जापर दीनानाथ ढरै।
सोई कुलीन बड़ो सुन्दर सोइ जा पर कृपा करै।
राजा कौन बड़ो रावन तैं गर्वहि गर्व गदै॥
शंकल कौन सुदामा है ते आपु समान करैं।
रूपल कौन अधिक सीता ते जन्म वियोग भरैं॥
अधिक कुरूप कौन कुबिजा में हरि पति पाइ बरैं।
जोगी कौन बड़ो शंकर ते ताको काय छरैं॥

भावार्थ यह है कि भगवान की कृपा जिस पर हो जाती है, उसी का कल्याण हो जाता है। वह व्यक्ति उच्च कुल में

उत्पन्न और सुन्दर समझा जाने लगता है। रावण से अधिक बड़ा राजा कौन था लेकिन अपने घमण्ड के कारण ही वह मारा गया। सुदामा से अधिक अकिंचन कौन हुआ परन्तु भगवान ने उन्हें अपने समान वैभव संपन्न बना दिया। सीता से अधिक रूपवती कौन हुई किन्तु जन्म भर उन्हें वियोग की अग्नि में ही जलना पड़ा। कुब्जा से अधिक कुरूप कोई नारी नहीं हुई लेकिन भगवान कृष्ण ने उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया अथवा अपना लिया। भगवान शंकर से अधिक महान योगी कौन हुआ परन्तु वे भी कामदेव द्वारा छले गये।

रामचरित मानस में वर्णित पार्वती जी का एक कथन उद्धृत करना यहाँ अनुकूल लगता है जो उन्होंने शंकर जी के प्रति कहा था:—

हमरे जान सदा शिव जोगी।
अज अनवहा अकाम अभोगी॥

ऐसे अजन्मा, जोगी, अनिन्द्य, कामना रहित और अभोगी भगवान शिव को भी भगवान ने प्रेरित किया और उन्हें विश्व के कल्याण के लिये जगत जननी पार्वती जी से ब्याह करना पड़ा।

पुष्टि मार्ग द्वारा जीव माया से उबर सकता है। यह शुद्ध से महाशुद्ध की ओर मानव कल्याण के लिये ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने का मार्ग है। जीवन को शाश्वत और समृद्ध बनाने का भी मार्ग है। वल्लभाचार्य जी का यही संदेश था जिसे महात्मा सूरदास ने अपने पदों में गाया।



वाक्य-विज्ञान



गौरव हारिथ

वरिष्ठ अनुवादक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

वाक्य विज्ञान में वाक्य गठन का वर्णनात्मक, तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन होता है। वर्णनात्मक वाक्य विज्ञान में किसी भाषा में किसी एक काल में प्रचलित वाक्य गठन का अध्ययन किया जाता है। तुलनात्मक वाक्य विज्ञान में तथा व्यतिरेकी में दो या अधिक भाषाओं का वाक्य गठन की दृष्टि से अध्ययन करते हुए उनका साम्य और वैषम्य देखा जाता है। ऐतिहासिक वाक्य विज्ञान में एक भाषा के विभिन्न कालों का अध्ययन कर वाक्य गठन की दृष्टि से उनका इतिहास प्रस्तुत किया जाता है।

आचार्य पतंजलि पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द समूह को वाक्य मानते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार “पदों का वह समूह जो योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति से युक्त हो वाक्य कहलाता है।” डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार “वाक्य

भाषा की वह सहज इकाई है जिसमें एक या अधिक शब्द होते हैं तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होते हैं, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम से कम एक समापिका क्रिया अवश्य होती है।

(i) वाक्य के प्रकार :-

रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं – (1) साधारण, (2) मिश्र, (3) संयुक्त।

1. साधारण या सरल वाक्य :-

जिस वाक्य में एकमात्र मूल क्रिया का प्रयोग हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं। यथा –

लड़का जाता है।

इस वाक्य में ‘जाता है’ एकमात्र क्रिया है जिसे विधेय भी कह सकते हैं। सरल वाक्य में क्रिया (विधेय) के साथ

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कर्ता (उद्देश्य) विद्यमान होता है। यथा –

(क) मेहरा आ जा रहे हैं।

(ख) तुम जाओ।

प्रथम वाक्य में कर्ता का प्रत्यक्ष प्रयोग है और दूसरे में अप्रत्यक्ष, दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि साधारण वाक्य में एक विधेय और एक उद्देश्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में रहते हैं। (भाषा में भावाभिव्यक्ति के मूल आधार साधारण वाक्य है।) जब एकाधिक सरल वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाते हैं, तो उस वाक्य में आए हुए सरल वाक्य को उपवाक्य भी कह सकते हैं। उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं – प्रधान, आश्रित एवं सहयोगी। मिश्र वाक्यों में आने वाले उपवाक्य प्रधान एवं उपाक्षित वाक्य कहलाते हैं। यथा –

“मैंने कहा था कि मैं क्लास लूँगी।”

उक्त मिश्र वाक्य में 'मैंने कहा था' प्रधान वाक्य है और 'मैं क्लास लूँगी' आश्रित वाक्य है। संयुक्त वाक्यों में आने वाले उपवाक्य सहयोगी उपवाक्य कहलाते हैं। ये उपवाक्य और या अथवा किन्तु अन्यथा आदि समुच्चय बोध से जुड़े रहते हैं। यथा—

'मैं आज घर जाऊँगा और तुम परसो आओगे।'

2. मिश्र या जटिल वाक्य :—

जिस वाक्य में एक या एक से अधिक उपवाक्य होते हैं और उन उपवाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्य में प्रधान उपवाक्य तथा आश्रित उपवाक्य अन्योन्याश्रित होते हैं अर्थात् एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। यथा—

'जो छात्र परिश्रम करेगा, वह उत्तीर्ण हो जाएगा।'

3. संयुक्त वाक्य :—

जिस वाक्य में दो या दो से अधिक प्रधान उपवाक्य होते हैं उसे संयुक्त उपवाक्य कह सकते हैं। संयुक्त वाक्य में आने वाले उपवाक्य सहयोगी उपवाक्य कहलाते हैं जो समुच्चय बोधकों से जुड़े रहते हैं।

'मैं मुम्बई गया था और दो दिन रुका पर सबसे मिल न सका।'

(ii) वाक्य के प्रकार (भाव या अर्थ की दृष्टि से) :—

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के कई भेद होते हैं।

(1) विधान सूचक वाक्य :— इससे कार्य सम्पन्न होने की सूचना मिलती है।

'राम जाता है।' 'मैं घर जाऊँगा।' 'वह काम करता है।'

(2) निषेध सूचक वाक्य :— इससे कार्य का निषेध सूचित होता है।

'राम नहीं जाता।' 'मैं घर नहीं जाऊँगा।' 'वह काम नहीं करता।'

(3) आज्ञा सूचक वाक्य :— इससे किसी को आज्ञा, आदेश दिया जाता है, या किसी से अनुरोध किया जाता है।

'यह काम करो।' 'कल अवश्य आइयेगा।' 'थोड़ी देर और ठहरिए।'

(4) प्रश्नसूचक वाक्य :— इससे किसी से कोई बात पूछी जाती है।

'तुम्हारा क्या नाम है।' 'तुम कब पढ़ते हो।'

(5) विस्मयबोधक वाक्य :— इससे हर्ष, शोक, भय, आश्चर्य आदि के भाव व्यक्त किए जाते हैं। उदाहरण—

'अरे! यह क्या किया।' 'हे राम! यह क्या हो गया।'

(6) संदेह सूचक वाक्य :— इससे संदेह या सम्भावना की सूचना मिलती है। यथा—

'शायद वर्षा हो जाए।' 'वह आया होगा।'

(7) संकेत सूचक वाक्य :— इसमें संकेत या शर्त रहती है और यह वाक्य सदैव मिश्र वाक्य रहता है। जैसे—

'यदि तुम पढ़ोगे तो पास हो जाओगे।'

(8) इच्छा सूचक वाक्य :— इससे इच्छा, शुभकामना या आशीर्वाद व्यक्त होता है।

'ईश्वर तुम्हें सफलता दे।'

वाक्य रचना :— वाक्य रचना पदों से होती है इस रचना में मुख्यतः चार बातें ध्यान देने की होती हैं :— (1) पदक्रम या शब्दक्रम; (2) अन्वयलोपक्ष (अन्विति); (3) आगम।

(1) पदक्रम या शब्दक्रम :—

पदक्रम का अर्थ है, वाक्य के विभिन्न पदों को भाषा विशेष के सिद्धांत के अनुसार क्रम में रखना। वाक्य में पदक्रम की दृष्टि से भाषाएँ दो प्रकार की हैं। एक तो वे हैं जिनमें वाक्य में पदों का स्थान निश्चित नहीं है। इन भाषाओं में किसी भी शब्द को उठाकर कहीं और रख देने से अर्थ में परिवर्तन

नहीं होता। ग्रीक, अरबी, फारसी, लेटिन व संस्कृत ऐसी ही भाषाएँ हैं।

दूसरी प्रकार की भाषाएँ वे होती हैं जिनमें वाक्य में पदों का क्रम निश्चित होता है और शब्दों का स्थान बदल देने से अर्थ भी बदल जाता है। हिन्दी, अंग्रेजी, चीनी ऐसी ही भाषाएँ हैं। हिन्दी भाषा में सामान्यतः कर्ता, कर्म, क्रिया का क्रमशः प्रयोग होता है। जैसे —

‘राम ने मोहन को मार डाला।’

इसके विपरीत अंग्रेजी में कर्ता, क्रिया व कर्म का क्रमशः प्रयोग होता है।

Ram killed Mohan

वाक्य का यह क्रम विशेष संदर्भ में बदल दिया जाता है। वाक्य के जिस भाग पर बल देना होता है उसे सर्वप्रथम प्रयोग करते हैं। जैसे —

(क) विपिन तुम्हारे साथ घर जा रहा है। (साधारण वाक्य)

(ख) तुम्हारे साथ विपिन घर जा रहा है। (‘तुम्हारे साथ’ प्रबल)

इस प्रकार के विशेष पदक्रम वाले वाक्यों से विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति होती है पदकर्म के संदर्भ में ध्याताय तथ्य भिन्न है।

1. विशेषण का प्रयोग प्रायः विशेष से पूर्व होता है। यथा —

(क) यह अच्छा लड़का है।

(ख) सुंदर चित्र लगाओ।

परंतु विशेष संदर्भ में इसके विपरीत प्रयोग भी मिलता है जैसे — ‘वह है सुंदर।’

2. क्रिया विशेषण का प्रयोग प्रायः कर्ता और क्रिया के मध्य अर्थात् क्रिया के पूर्व होता है। यथा — ‘वह धीरे चलता है।’

3. सम्बोधन प्रायः वाक्य के प्रारम्भ में आता है।

‘भगवान! तुम कहाँ हो।’

परंतु कभी-कभी इसके विपरीत भी प्रयोग मिलते हैं। जैसे — ‘बैठो मित्र।’

4. निवेदनात्मक ‘न’ का प्रयोग वाक्य के अन्त में होता है। जैसे — ‘आप आइये न।’

5. ‘मात्र’ या ‘केवल’ शब्दों का प्रयोग, वाक्य के अंत में होता है। जैसे— ‘दो रुपये मात्र।’ ‘मात्र दो रुपये।’

6. विस्मयादिबोधक प्रायः वाक्य के प्रारंभ में आते हैं। जैसे — ‘वाह! कितना सुंदर दृश्य है।’

(iii) अन्विति

अन्विति का अर्थ है व्याकरणिक अनुरूपता इसके अनुसार वाक्य के विभिन्न पदों में लिंग, वचन, पुरुष

आदि संदर्भों में समानता होनी चाहिए।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार :— वाक्य में दो या दो से अधिक पदों की आपसी व्याकरणिक एकरूपता को अन्वय कहते हैं। अन्वय को वाक्य का अलग अनिवार्य तत्त्व कहना उचित नहीं है। अन्वय का विचार कर्ता—क्रिया, कर्म—क्रिया, विशेषण—विशेष्य, सर्वनाम—संज्ञा संबंधों में कर सकते हैं। हर भाषा के अन्वय के नियम अलग-अलग होते हैं। हिन्दी में अन्वय के नियम निम्नलिखित हैं :—

1. कर्ता और कर्म से निरपेक्ष क्रिया:— जब कर्ता और कर्म दोनों के साथ कारक चिन्ह हो तो क्रिया सदा पुल्लिङ्ग एकवचन होती है। उदाहरण—

‘लड़की ने लड़के को देखा।’

2. सर्वनाम और संज्ञा अन्वय :— सर्वनाम सदा उसी संज्ञा के लिंग, वचन का अनुसरण करता है, जिसके स्थान पर प्रयुक्त हो। यथा —

‘वह (कमला) घर जाती है।’

‘वह (कमल) घर जाता है।’

3. कर्ता और क्रिया अन्वय :— यदि कर्ता के साथ कारक चिन्ह न प्रयुक्त हो तो क्रिया कर्ता के अनुसार होगी। जैसे —

‘लड़की आम खाती है।’

‘लड़का आम खाता है।’

(iv) पदबन्ध

जब एक से अधिक पद (रूप) में बंध कर एक व्याकरणिक इकाई (जैसे – संज्ञा, विशेषण) का कार्य करे तो उसी बंधी इकाई को पदबन्ध कहते हैं। जैसे –

‘वहाँ पेड़ है।’

‘सौरव के मकान के चारों ओर पेड़ हैं।’

पहले वाक्य में ‘वहाँ’ स्थान वाचक क्रिया विशेषण पद है। दूसरे वाक्य में, सौरव के मकान के चारों ओर कई पदों की ऐसी इकाई है जो स्थान वाचक क्रिया विशेषण का कार्य कर रही है। अतः यह क्रिया विशेषण पद न होकर क्रिया विशेषण पदबन्ध है।

पदबन्ध आठ प्रकार के हो सकते हैं।

1. संज्ञा पदबन्ध – इतनी लगन से कला की साधना करने वाला कलाकार अवश्य सफल होगा।
2. सर्वनाम पदबन्ध – मौत से इतनी बार जूझकर बच जाने वाला भला मैं मर सकता हूँ।
3. विशेषण पदबन्ध – शरद पूर्णिमा के चाँद सा सुंदर मुख किसको नहीं मोह लेता।

4. क्रिया पदबन्ध – उसकी बात अब तो मान ली जा सकती है।

5. क्रिया-विशेषण पदबन्ध – आगामी वर्ष के मध्य तक मेरा काम पूरा हो जाएगा।

6. संबंध बोधक पदबन्ध – इस मकान से बाहर की ओर कोई बोल रहा है।

7. समुच्चय बोधक पदबन्ध – उसे मैं नहीं चाहता क्योंकि वह झूठ बोलता है।

8. विस्मयादि बोधक पदबन्ध – हाय रे किस्मत! यह प्रयास भी नाकाम रहा।

वाक्य की संरचना को समझने के लिए उसकी पदबन्ध व्यवस्था को समझा जाता है। पदबन्ध व्यवस्था को

निम्न नियमों के आधार पर विश्लेषित किया जाता है। उदाहरण –

‘छोटी लड़की कमरे में धीरे-धीरे बोल रही है।’

(क) वाक्य = छोटी लड़की (उद्देश्य) + धीरे-धीरे बोल रही है (विधेय)

(ख) उद्देश्य = छोटी (विशेषण) + लड़की (संज्ञा)

(ग) विधेय = कमरे में धीरे-धीरे (विस्तारक) + बोल रही है (क्रिया)

(घ) विस्तारक = स्थानवाचक, कालवाचक, रीतिवाचक आदि (कमरे में धीरे-धीरे)

आजकल ‘पद’ शब्द के स्थान पर ‘पदबन्ध’ शब्द का प्रयोग विशेष संदर्भों में हो रहा है।



निर्बल के बल राम



एस.सी. मित्तल
सेवानिवृत्त (व.ले.प.अ.)
94/75, मानसरोवर, जयपुर

मेरे छोटे पुत्र रोहन को 35 वर्ष की आयु में वर्ष 2011 में एक सड़क दुर्घटना में गंभीर चोटें आईं। बाँये पैर की एडी कट गई, जंघा में मल्टीपल फ्रैक्चर हुआ तथा पेट की अंतड़ियाँ फट गईं। गंगाराम अस्पताल, नई दिल्ली में तीन साल तक उसका इलाज चला। कुल नौ ऑपरेशन समय-समय पर किए गये। मुझे वर्ष 2009 में सेवानिवृत्ति से मिला सारा पेंशन लाभ इलाज के पहले वर्ष में ही खर्च हो गया। भयंकर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा था। मेरे बड़े पुत्र दीपक के बैंक खाते में जो भी धनराशि रही, वह भी इस इलाज में काम आ चुकी थी। जीवन बीमा की जो भी पॉलिसी उनसे ली हुई थी सबको समाप्त करके प्राप्त धनराशि भी उपयोग में ले ली गई। अब उसके पास कोई पैसा नहीं बचा था।

अंतड़ियाँ ठीक करने के उद्देश्य से किये गये उदर-ऑपरेशन में लगाये गये टाँके पक गए। अब वे ठीक नहीं हुए तो डॉक्टरों द्वारा उन टाँकों को पुनः री-स्टिच करने हेतु रोहन को अस्पताल में पाँचवे ऑपरेशन हेतु भर्ती कराया गया। दो दिन बाद डॉक्टरों ने कहा — हम तुम्हें कल डिस्चार्ज करेंगे। अतः आप कल तक का बिल लेखा शाखा से ले लो और छुट्टी की तैयारी कर लो।

दीपक लेखा शाखा से पता लगा कर आया कि कल बारह बजे तक का बिल एक लाख तीस हजार रुपये का बनेगा। हमने अपनी कुल हाथ पूँजी सँभाली तो पता चला कि वह पैंतालिस हजार रुपये मात्र है। मैं और दीपक अस्पताल में रोहन के बैड के पास बैठे हुए कभी एक-दूसरे की शक्ल देखें तो कभी जमीन में जूते का पंजा बजाने लगे। कभी पंखे की ओर देखें। बड़ी दुःखद स्थिति बन आई

थी।

दीपक मुझे बोला — पापा! मैं घर जाकर अपनी पत्नी सुरभि की छुपा-छुपा कर की गई बचत की गुल्लक ढूँढता हूँ। शायद कुछ पैसे वहाँ से मिल जायें।

मैंने इस बात का समर्थन किया क्योंकि समस्या गंभीर थी।

दीपक घर गया। गुल्लक मिल गया। दीपक ने मुझे समाचार दिया। मैं बोला — बेटा! देवर-भाभी का विषय है। तू एक बार सुरभि की सहमति ले ले कि क्या हम इस पैसे का रोहन को छुट्टी दिलाने में उपयोग कर लें। कहीं ऐसा ना हो कि बिना पूछे गुल्लक खोलने पर वह नाराज हो जाये। दीपक बोला — मैंने उसकी राय ले ली है। गुल्लक से हमें पैंतीस हजार रुपये मिले। इसे मिला कर हमारे पल्ले अस्सी हजार रुपये हो गए। घर पर दीपक दुःखी, अस्पताल में मैं

दुःखी। रात के दस बज गये थे। पैसे का कोई जुगाड नहीं सूझ रहा था। अभी सात ऑपरेशन तक हमने किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया था। खैर, रोहन को सुला कर मैं भी बैंच पर चद्दर बिछा कर लेट गया। एक मिनट के लिए मन-मस्तिष्क को सहन किया। प्रभु की तरफ ध्यान लगाया और बोला – हे नाथ! हे राम! मैं तो हार गया। प्रभु! बच्चे को कल तू डिस्चार्ज करायेगा। अब मेरा कोई बस नहीं चल पा रहा। निर्बल का बल आप हैं स्वामी! मैं सुबकियाँ भरते हुए रो पड़ा। अश्रु धार बह निकली। मैं तेरी शरण हूँ प्रभु! त्राहि माम त्राहि

माम। मैं फिर सहज हुआ कि फोन की घंटी बजी। दूसरी ओर से आवाज आई – पापा! मैं शैलेन्द्र बोल रहा हूँ। मैं चार बजे टोंक से निकला था और अभी धौला कुआँ पहुँच गया हूँ। अस्पताल कैसे-कैसे आऊँ?

मैं अपने दामाद शैलेन्द्र से बोला – बेटा! रास्ता मुझे भी पता नहीं है। सड़क पर लगे साइन-बोर्डों को देखते चले आओ। ज्यादा परेशानी आये तो किसी ऑटो वाले से पूछ लेना।

शैलेन्द्र लगभग आधा घण्टे में अस्पताल पहुँचे और मिलते ही

उन्होंने अपनी जेब से कुछ रुपये निकालते हुए मुझे कहा –पापा! ये पचास हजार रुपये हैं। आप इन रुपयों को रखो। कहीं काम आ सकते हैं। मैंने कुछ दबी हुई जुबान से मना किया परन्तु अन्ततः पैसे मैंने ले लिये। वे बाद में दीपक के पास घर चले गये।

मेरे मुँह से निकल पड़ा – निर्बल के बल राम। हमें पता नहीं लगा कि प्रभु! स्वजन की किस विधि से सहायता करते हैं। दूसरे दिन हम रोहन को छुट्टी दिला कर प्रसन्नता पूर्वक घर ले आये। साँई के हाथ हजार।



रमणीयता से भरपूर है – रानीखेत



ललित कुमार वर्मा
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सम्पूर्ण उत्तरांचल हसीन एवं दिलकश सौन्दर्य स्थलों से अटा पड़ा है, जहाँ पहुँचकर न केवल प्रकृति के विविध रूपों को निहारा जा सकता है अपितु एकांत चित्त की अनुभूति की प्राप्ति हो सकती है। ऐसे ही स्थलों में से एक है पहाड़ की हरितिम श्रृंखलाओं के मध्य स्थित रानीखेत।

समुद्रतल से 1850 मी. की ऊँचाई पर स्थित रानीखेत देवदार, बांस, बुरास एवं चीड़ के सघन वृक्षों से घिरा लगभग 22 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में फैला हुआ है। पहले इस पहाड़ी को राणी क्षेत्र कहा जाता था। कहा जाता है कि कुमाऊँ में कत्यूरी राजाओं के शासनकाल में द्वारहाट के कत्यूरी राजा सुधार देव (1180) की रानी पद्मिनी इसी पहाड़ी पर एकांत चित्त विश्राम के लिए आया करती थी जिसके कारण यह क्षेत्र रानीखेत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ब्रिटिश काल में सन् 1865 में मेजर लॉग नामक एक ब्रिटिश अधिकारी

यहाँ पहुँचा और यहाँ की आबोहवा एवं नैसर्गिक नजारों को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया। उसने रानीखेत को प्रसिद्ध हिल स्टेशन के साथ-साथ सैनिक छावनी के रूप में विकसित करना शुरू किया और इस तरह रानीखेत 'छोटी विलायत' के नाम से मशहूर तो हुआ ही साथ ही कई शानदार बंगले और गिरजाघर भी यहां बनने लगे।

लगभग पांच कि.मी. लम्बी व दो कि. मी. चौड़ी पहाड़ी पर बसे रानीखेत की सुषमा सौन्दर्य का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अमेरिका के एक न्यायाधीश विलियम ओ. डगलस ने इसकी सुषमा से अभिभूत होकर इसे दुनिया का सर्वोत्तम हिल स्टेशन की उपाधि दे दी।

अन्य पर्वतीय क्षेत्रों के वनस्पति रानीखेत की जलवायु काफी सुहावनी



रानीखेत का मनमोहक दृश्य



रानीखेत के सदर बाजार का दृश्य

एवं स्वास्थ्यवर्धक है। मार्च से जून व सितम्बर से नवम्बर तक रानीखेत पर्यटकों का सैरगाह बन जाता है। इस दौरान यहां से श्रृंखलाबद्ध हिमशिखरों के दर्शन तो होते ही हैं साथ ही प्राकृतिक सौन्दर्य का भी भरपूर लुप्त उठाया जा सकता है। वैसे रानीखेत का मौसम इस प्रकार का है कि यहां वर्ष के किसी भी महीने में पर्यटक आसानी से रानीखेत भ्रमण का आनन्द उठा सकता है।

रानीखेत के सदर व खड़ी बाजार काफी प्रसिद्ध हैं व यहां हमेशा काफी चहल-पहल रहती है। यहां एक तरफ सीधे-सादे, निश्छल ठेठ पहाड़ी लोगों को हँसते-बतियाते, सौदा-पानी करते देखा जा सकता है तो वहीं दूसरी ओर देश-विदेश के पर्यटकों को मौज-मस्ती के साथ हाथ पर हाथ धरे घूमते-फिरते हुए।

यहां के खड़ी बाजार को पहले मेयो स्ट्रीट कहा जाता था लेकिन अब इस नाम को लोग लगभग भूल चुके हैं।

रानीखेत में प्रतिवर्ष भाद्रपद मास की अष्टमी को नंदादेवी का प्रसिद्ध मेला लगता है जिसमें समूचा बाजार

दुल्हन की तरह सजा-धजा दिखाई देता है।

रानीखेत के आसपास भी कई दर्शनीय स्थल हैं। रानीखेत के पास ही घिंघारीखाल स्थित है जहां से एक मार्ग द्वाराहाट-कर्णप्रयाग को व दूसरा अल्मोड़ा के लिए निकलता है। घिंघारीखाल से ही सटा हुआ है गोल्फ मैदान, जहां पर्यटक दिनभर गोल्फ का आनन्द उठाने के साथ-साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का लुप्त भी ले सकते हैं।

रानीखेत से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर चौबटिया स्थित है। घने जंगलों से घिरे चौबटिया में फल अनुसंधान केन्द्र और राजकीय गार्डन है। इस गार्डन की स्थापना 1869 में हुई थी। यहां से हिमालय की उत्तुंग हिमशिखरों के विहंगम दर्शन तो होते ही हैं साथ ही कई नजदीकी



नंदा देवी मेले का दृश्य



बिनसर महादेव मन्दिर

पहाड़ियों व घाटियाँ रामगढ़, मुक्तेश्वर, सीतलाखेत, गगास, खैरना भी दिखाई देते हैं। यहां स्थित गिरजाघर भी अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध हैं।

रानीखेत—द्वाराहाट मोटर मार्ग पर रानीखेत से दस कि.मी. की दूरी पर स्थित चौकुनी भी अपनी प्राकृतिक एवं नैसर्गिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। यहां से दूर-दूर तक फैली घाटियों व पहाड़ियों का मनोरम दृश्य तो आकर्षित करता ही है साथ ही विस्तृत हिमश्रृंखलाओं की चमक—दमक भी मन—मयूर कर देती हैं।

रानीखेत से 18 कि.मी. की दूरी पर रानीखेत—रामनगर मार्ग पर बिनसर महादेव का मंदिर स्थित है। देवदार एवं चीड़ के सघन वृक्षों से घिरा यह स्थल रमणीय होने के साथ—साथ आध्यात्म का भी प्रमुख केन्द्र है।

भतरोजखान से लगभग 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित बिनसर में ज्योर्तिलिंग, शिवकाल भैरव, राधाकृष्ण, दत्तात्रेय, जगदम्बा माता, काली माता, सरस्वती लक्ष्मी नारायण मंदिर तथा कई भव्य मूर्तियाँ भी स्थापित हैं।

रानीखेत के अन्य दर्शनीय स्थलों में ताड़ीखेत, झूलादेवी, शीतलाखेत, पाण्डुरवोली, कालिका मंदिर इत्यादि हैं।

रानीखेत—रामनगर मोटर मार्ग पर रानीखेत से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित शांत एवं सुरम्य ताड़ीखेत जहां अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सुषमा के लिए प्रसिद्ध है, वही यहां का उन्मुक्त सौन्दर्य न केवल सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देता है, बल्कि अपने नयनाभिराम प्राकृतिक दृश्यों के कारण सैलानियों को बांधे रखने में समर्थ बांहे पसारे आपका स्वागत करता है।

ताड़ीखेत में रात्रि विश्राम के लिए विश्राम गृह एवं निरीक्षण गृह भी हैं, इसके अलावा यहां छोटे रेस्टोरेंट, ढाबे भी हैं, जहां स्थानीय भोजन का जायका लिया जा सकता है।



झूला देवी मंदिर का दृश्य

आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होटलों, रेस्टोरेंटों के लिए रानीखेत जाया जा सकता है।

दरअसल प्रत्येक सैलानी के लिए ताड़ीखेत एक विस्मयकारी अनुभव है, ताड़ीखेत स्वास्थ्यवर्धक जलवायु के लिए प्रसिद्ध है, तथा यहां मंद-मंद चलती शीतल बयार, पशु-पक्षियों की मधुर गूंज, दुर्लभ वनस्पतियों के दर्शन इत्यादि के अलावा ऊंची-नीची पहाड़ियों के रोमांच भर देने वाली अनुभव को भी बटोरा जा सकता है। साथ ही यहां आसपास में भी कई दर्शनीय स्थल हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर खूब आकर्षित करते हैं।

ताड़ीखेत की ऊंची पहाड़ियों से हिमालय की कई पर्वत-श्रेणियों के दर्शन भी होते हैं। इन पहाड़ियों में ट्रेकिंग व पर्वतारोहण का भी रोमांच उठाया जा सकता है। यहां मौसम के अनुसार कई फल-फूल भी प्राप्त हो सकते हैं। सर्दियों में यहां की पहाड़ियों में एकांत चित्त, गुनगुनी धूप का आनन्द लिया जा सकता है, तो वहीं गर्मियों में चीड़ एवं बाँज के दरख्तों से बहती बयार व उनकी शीतल छाया में घंटों बैठकर प्रकृति के विविध रंगों में रूबरू हुआ जा सकता है। यहां चाँदनी रात में नाइट सफारी का विस्मय कर देने वाला रोमांच भी उठाया जा सकता है।

महात्मा गांधी कुमाऊँ भ्रमण के दौरान ताड़ीखेत में ठहरे हुए थे, उनकी

स्मृति में यहां एक कुटीर भी बनी हुई है। गांधी जी भी अपने प्रवास के दौरान यहां की प्राकृतिक सुषमा से अभिभूत हुए बिना न रह सके, और बाद में अपने कई लेखों में उन्होंने इस बारे में जिक्र भी किया।

सैलानियों के स्वर्ग के उपनाम से प्रसिद्ध मजखाली रानीखेत से 13 कि. मी. की दूरी पर रानीखेत- अल्मोड़ा मोटर मार्ग पर स्थित है।

मजखाली अपने नैसर्गिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध होने के साथ रसीले फल-फूलों के लिए भी प्रसिद्ध है। सर्दी हो या गर्मी, यहां की सुनहरी सुबह में हिमालय की हिम श्रृंखलाओं की शोभा देखते ही बनती है। इसके अलावा यहां का उन्मुक्त नैसर्गिक वातावरण, हरे-भरे पहाड़, दूर-दूर तक बिखरे गांवों का अनुपम सौन्दर्य बरबस ही अपनी ओर खींच लेता है और आँखें प्रकृति की इस छटा से अभिभूत होकर मदालस सी हो उठती हैं।

यहाँ का प्रभात का सुहावना समय हो या निस्तब्ध रात्रि, यहाँ के लोमहर्षक सौन्दर्य, तरोताजी हवा की पुलक एवं स्वास्थ्यवर्धक वातावरण को देखकर ऐसा लगता है कि मानो साक्षात् स्वर्ग में विचरण कर रहे हों। यँ तो यहां दिन काफी खुशगवार होता है लेकिन सुरमई शाम की बात कुछ और ही है। रात्रि की नीरवता में तारों भरे आकाश को देखना भी पुलकित कर देता है।

मजखाली के पास ही प्रसिद्ध कालिका मंदिर है जहां प्रतिदिन सैकड़ों पर्यटक पहुंचते हैं। मजखाली से कुआली, बासुलीसेरा, बग्वालीपोखर, सोमेश्वर होते हुए कौसानी भी पहुंचा जा सकता है। इस मार्ग में हरियाली ही हरियाली छाई हुई है।

कुआली में भगवान बद्रीनाथ का मंदिर है जहां श्रावणी पूर्णमासी के अवसर पर मेला भी लगता है। इसी मार्ग पर बग्वालीपोखर है जहां प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर भैया दूज के दिन बग्वाल मेला लगता है जिसमें भंडार गांव के लोग ढोल, निशाण के साथ यहां स्थित चबूतरे की परिक्रमा करते हैं।

बासुलीसेरा गगास नदी के किनारे बसा हुआ है। गगास भटकोट पर्वत से निकलती है। दूनागिरी एवं भटकोट के बीच गर्गमुनि आश्रम होने के कारण इसका गगास नाम पड़ा है। यहां भगवान शिव का प्रसिद्ध मंदिर भी है।

मजखाली में हालांकि खानपान की अच्छी सुविधाएं नहीं हैं लेकिन यहां के एकमात्र कास्ट प्लस होटल में रात्रि विश्राम की अच्छी सुविधा है। रात्रि विश्राम के लिए रानीखेत भी जाया जा सकता है जहां खानपान की अच्छी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

भारत-पाक युद्ध 1965 के महानायक – अब्दुल हमीद



सुश्री आरती शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन
नई दिल्ली

कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद भारतीय सेना के एक सैनिक थे, जिन्हें 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान असाल उत्तर की लड़ाई में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है। उन्होंने अपने दम पर 6 पाकिस्तानी टैंकों को नष्ट कर दिया और सातवें टैंक को ध्वस्त करते हुए शहीद हो गए। उनकी वीरता के लिए उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। इस लेख में हम देश के लिए उनके योगदान पर एक संक्षिप्त वर्णन करेंगे।

बचपन

कंपनी के क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद का जन्म 1 जुलाई 1933 को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के धामूपुर गांव में हुआ था। मोहम्मद उस्मान और सकीना बेगम के बेटे, कंपनी क्वार्टर मास्टर

हवलदार हमीद के तीन भाई और दो बहनें थीं। उन्होंने आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की और अपने सिलाई की दुकान पर अपने पिता की मदद करने के लिए स्कूल छोड़ दिया।

आर्मी में भर्ती

जब कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद 20 साल के थे, तब उन्हें वाराणसी में सेना में भर्ती किया गया था। नसीराबाद के ग्रेनेडियर्स रेजिमेंटल सेंटर में अपने प्रशिक्षण के बाद, उन्हें 1955 में 4 ग्रेनेडियर्स में तैनात किया गया था। उनकी सेवा के दौरान, कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद ने आगरा, अमृतसर, जम्मू और कश्मीर, दिल्ली, नेफा और रामगढ़ में तैनात रहे। 1962 के चीन-भारतीय युद्ध के दौरान, उनकी बटालियन 7वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड का हिस्सा थी और चीनी के खिलाफ नामका चू की

लड़ाई में भाग लिया था।

भारत-पाक युद्ध : खेमकरन सेक्टर (10 सितम्बर 1965)

एंटी-टैंक सेक्शन में पांच साल की सेवा के बाद, कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद को पदोन्नत किया गया और उन्हें अपनी कंपनी के क्वार्टर मास्टर स्टोर का प्रभार दिया गया। वह बटालियन में राइफल शूटिंग में सबसे अच्छे थे। 1965 की शुरुआत में, रक्षा योजना के तहत, कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद की 4 ग्रेनेडियर्स व अन्य बटालियनों ने, खेमकरन क्षेत्र के असाल उत्तर और चीमा गांवों के बीच एक रक्षा रेखा बनाई। 4 ग्रेनेडियर्स चीमा गांव के सामान्य क्षेत्र में उत्तरी तट पर था। जिस क्षेत्र का वे बचाव कर रहे थे वह कपास और गन्ने के खेतों से ढका था। इसी की आड़ में उन्होंने रक्षात्मक पद बनाते हुए

खाइयां बनाने के लिए खुदाई शुरू की थी और रिकॉइल-लेस बंदूकें तैनात की गईं।

8 सितम्बर को दुश्मन ने 4 ग्रेनेडियर्स की स्थिति पर बार-बार हमले किए। बटालियन के रिकॉइल-लेस हथियार और ऑटोमेटिक्स को कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद की कंपनी द्वारा प्रभावी रूप से तैयार रखा गया था। कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद ने गन्ने के खेत की आड़ में आरसीएल बंदूक से दुश्मन के टैंक पर चढ़ाई की और दुश्मन के दो पैटन टैंकों को नष्ट कर दिया और चार और टैंकों के क्रू को अपने वाहनों को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। अगले दिन के अंत तक, कंपनी क्वार्टर मास्टर

हवलदार अब्दुल हमीद और उनकी कंपनी ने दो और टैंक नष्ट कर दिए थे।

10 सितम्बर 1965 को पाकिस्तानी पैटन टैंकों ने 4वें ग्रेनेडियर्स के तैनाती स्थान पर हमला किया। तीव्र बमबारी करते हुए, पैटनों का एक समूह बटालियन गढ़ की ओर बढ़ा। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए, कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद अपनी बंदूक के साथ जीप पर चढ़कर दुश्मन की ओर बढ़े। तीव्र शत्रु गोलाबारी और टैंक की आग ने भी इस जांबाज सिपाही को नहीं डिगाया। उन्होंने एक के बाद एक लगातार तीन पैटन टैंकों को नाकाम कर दिया, लेकिन चौथे टैंक को निरस्त करते समय वे गोलाबारी

से घायल हो गए और वीरगति को प्राप्त हुए।

उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि, अनुकरणीय बहादुरी और साहस के लिए, कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद को मरणोपरांत देश के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया। 28 जनवरी 2000 को इंडिया पोस्ट द्वारा स्वर्गीय हामिद की स्मृति में एक स्टैम्प जारी किया गया था। स्टैम्प में राइफल के साथ हामिद के चित्र और उनकी जीप का चित्रण किया गया है। भारत माँ के इस सपूत को शत शत नमन

जय हिन्दी जय हिन्द की सेना



आदि शंकराचार्य



बनवारी लाल सोनी
73/318-ए, टेगौर लेन,
शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर

आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देश की स्थिति ठीक न थी। धर्म कोई भी हो — बौद्ध धर्म, जैन धर्म अथवा अन्य, लोग मतमतांतरों के झमेले में ही उलझे हुए थे। अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बताने की आपस में होड़ लगी थी। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आपाधापी सी मची हुई थी। कृषक वर्ग हो अथवा व्यापारी कोई भी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाया, लोग लाचारी से ऊब उठे थे। इन लोगों में कुछ लोग ऐसे भी थे जो वेद-विरोधी कहे जा सकते हैं। ऐसे अवसर पर तांत्रिक भी अपने को श्रेष्ठ बताने की होड़ में लगे थे। इनका खान-पान, आचार-विचार एवं क्रियाएँ उचित न थीं। बाजारों के बीच में उनके झण्डे फहरते थे एवं जयकारों की ध्वनि से गगन गुंजायमान होता था। इनमें से कापालिक भारी पड़ते थे वे हड्डी की माला पहनते थे और नर की खोपड़ी में भोजन। शमशान निवास और मांस का खुलकर प्रयोग उनकी आदतों में शामिल था। पीड़ित जनता परिस्थिति से उबरने के लिए प्रभु से डोर लगाए रखती। धरती माता महादेव के पास गई, उनके साथ अन्य देवी-देवता भी थे। निवेदन के उपरांत भोले बाबा ने आश्वस्त किया कि मैं नर रूप धारण करूंगा तब अंधकार स्वयं ही मिट जाएगा। सबके मुख पर लाली छा गई वे खुशी-खुशी लौट आए।

पूर्णा नदी के तट पर एक स्वयंभू लिंग उभर आने से राजा 'राजशेखर' अति प्रसन्न हुए उन्हें लगा साक्षात् भगवान आ

गए। उन्होंने एक मंदिर की स्थापना कर, पूजा हेतु पुजारी के रूप में पंडित विद्याधर को बागडोर संभाली।

विद्याधर बड़े पंडित व भक्त थे। 'शिवगुरु' इन्हीं पंडित जी के पुत्र थे, इनकी पत्नी का नाम विशिष्टा था। ये दोनों भी परम भागवत थे, विवाह के उपरांत वर्षों बीत गए पर उन्हें संतान न हुई। आखिरकार वे दोनों वृषाद्रि पर्वत पर चले गए, वहां निष्ठापूर्वक हर-हर शंकर रटते रहे। बहुत लंबे अर्से के बाद उन्हें स्वप्न में महादेव ने दर्शन देकर कहा — मैं ही पुत्र रूप में तुम्हारे घर जन्म लूंगा। दम्पति के हर्ष का ठिकाना न रहा। साथ में यह भी बतलाया कि यदि सर्वज्ञ पुत्र की कामना हो तो एक ही पुत्र पैदा होगा, यदि बहु पुत्र की कामना करते हो तो वे अल्पज्ञ ही होंगे, पण्डित जी ने सर्वज्ञ पुत्र ही मांगा। समय बीतता गया मन में मोद व घर में खुशियों के मेले लगने लगे। गर्भवती माता विशिष्टा की मनोदशा भी बदली। उनके तन में अपार तेज हुआ, अब उनकी मनोकामना निकट थी। मन में विरक्ति की भावना बसने लगी, पूरा संसार प्यारा लगने लगा, पुष्प-गंध भी भार लगने लगी, आभूषण कष्ट साध्य लगने लगे तथा सभी वस्तुएं भी असार ही लगने लगीं। लोगों से मिलने वाले उपहार भी सारहीन लगते थे।

वे सपनों में स्तुति सुनतीं, जिन्हें विद्याधर गाते थे। उनके सपनों में बैल पर चढ़े त्रिपुरारी आने लगे। आराधना करते लोग भी दिखाई देने लगे तथा वरदानों से कान धन्य हो

गए। अब माँ विशिष्टा एक ऐसी नारी थी जिसमें अपार तेज भरा था।

वैसाख पंचमी, शुक्ल पक्ष, दिवस का मध्याह्न और सूर्यवार शुभ राशि और शुभ ग्रह युक्त नमस्कार नक्षत्र तथा पुनर्वसु बेला के अंतर्गत माता विशिष्टा ने एक अद्भुत बालक को जन्म दिया। यह शंकर अवतारी बालक बड़ा ही रूपवान था।

गंगाजल से स्नान करा, परिधानों से सजाया गया। दीपक की लौ के समान देह वाला शिशु बड़ा दिव्य लग रहा था। इस विशेष अवसर पर गोदान भी कराया गया, धन और भूमि गरीबों में बांटी गई, वस्त्रों के ढेर लग गए थे। घर में ढोलक पर थाप पड़ने लगी। शिशु की सुंदरता अपूर्व थी। इस अवसर पर हाथी-सिंहों का आपसी बैर मिट गया, मृग-व्याघ्र, सर्प-चूहे एक साथ प्रसन्न रहने लगे, नदियों में पावन जल आया, मेघों ने भी जल बरसाया, झरने बहने लगे, विपरीत ग्रंथ गिर गए हाथों से, तथा वेदांत ग्रंथ हंसने लगे। दयाअवतार शंकर जी पर देव सुमन बरसाने लगे, सभी ने खुशी के गीत गाए। अब माँ की गोद में शिशु मुस्कराने लगा। जिस-जिस ने बालक का मुखकमल निहारा, ठगा सा रह गया।

नामकरण वाले दिन घर-परिवार के उल्लास का ठिकाना न था। पिता शिवगुरु एवं मां विशिष्टा की मनोदशा बड़ी विचित्र थी। गोदुग्ध की खीर बनवाई गई, विद्वत ब्राह्मणों को बुलवाया गया। बच्चे का नाम निकला शंकर, माता-पिता को अपने स्वप्न की बात याद आई। समय आगे बढ़ता गया, माता की दृष्टि पड़ते ही शिशु मुस्करा उठता, उलट-पुलट करता कभी किलकारी भरता, महतारी न्योछावर हो जाती – प्यार करती। सच ही शिशु की आभा सबके मन में प्यार जगाती, अब वह चलने भी लगा, हंस की सी चाल थी उसकी। दाँतों में बिजली दमकती थी, घुंघराले बाल बड़ी शोभा पाते थे, उसके

अधर कमल-कली, और तन स्फटिक मणि लगता था। मस्तक पर द्वितीया का चन्द्र और तीसरा नेत्र शोभित था।

कंधे पर त्रिशूल का चिन्ह, हाथों में चक्र, गदा व धनु, चरणों में चामर की आकृति, कर में डमरू एवं वक्षस्थल पर सर्प चिन्ह अंकित थे। सच ही बालक प्रतिभाशाली था।

जब देवताओं ने यह जाना कि शंकर ने पृथ्वी पर अवतार लिया है तब वे भी रूप बदल कर धरा पर आए। विमल नाम के विद्वजन उनके घर स्वयं विष्णु आए। प्रारंभिक नाम विष्णु शर्मा और बाद का नाम पद्मपाद पड़ा, एक नाम सनन्दन भी बोला गया।

इक उद्भट कर्मकाण्ड वाले जिनको सब कहें प्रभाकर ही।
उनके घर आए वायुदेव जो कहलाते पृथ्वी धर भी।।
था हस्तामलक नाम दूजा वे अति के ही विख्यात हुए।
विद्वानों का मद चूर्ण किया, धरती को सुखद प्रभात हुए।।
जो अग्नि देव के दशमांस वे 'तोटक' बनकर आए थे।
अति के ज्ञानी औ धीरवान अतिकाही नाम कमाए थे।।
'नन्दी' 'शिलादि' के पुत्र बने तब उनका नाम उदंक हुआ।
अंधियारा दूर किया जग का, आगे चल वही मयंक हुआ।।
तब बने 'सुरेश्वर' ब्रह्मा जी औ श्री गणेश 'आनंद गिरि'।
'चित्सुख' बन आए वरुण देव, थर-थर काँपे थे उनके अरि।।



तब सोन नदी के तट पर ही इक ब्राह्मण रहते 'विष्णु मित्र'। उनकी कीरति की कौन कहे? गंधायित जैसे शुद्ध इत्र।। उनके घर आई सरस्वती तब 'उभय भारती' नाम रहा। था लगा शाप दुर्वासा का इसलिए धरा पर काम रहा।। उस महिष्मती में ब्रह्मा ने 'मण्डन' की देह करी धारण। नर-नारी बने देव-देवी उस छोटे शंकर के कारण।।

'भारती' जब बड़ी हुई सभी विधाएं सीख गई — वेद-वेदांग में भी पारंगत हुई, गुण-शील और सौंदर्य में भी अद्वितीय रही। समय पाकर मण्डन मिश्र से उसका विवाह संपन्न हुआ।

तब दोनों का ही मन प्रसन्न, जीवन-धरा में गंध बहे दोनों का नाम अमर जग में पूरा वर्णन तो कौन कहे?

अपनी वय के प्रथम वर्ष में 'शंकर' ने अक्षर सीख लिए, सारी मलयालम भी लिखी। वे बचपन से ही बड़े निडर थे। जब दो वर्ष के हुए तो लिखना-पढ़ना सीख गए। तीसरी वर्ष में तो उन्हें काव्य-ज्ञान हो गया था। आठ-दस पुराणों की गाथा के वे श्रुतधर थे, यानी सुनकर ही सीख गए। एक बार सुनी बात को वे जीवन भर भूले ही नहीं। उनके ज्ञान का अंत न था।

तीसरी वर्ष में उनका मुण्डन संस्कार हुआ, खोपड़ी ऐसी चमकती थी जैसे घी से अग्नि। उनको सारी साहित्य ज्ञान था। बड़े होने पर शास्त्रार्थ में उनकी ख्याति फैलती ही गई। जो भी उनके दर्शन करने आया, उसे मीठे वचन सुनाते थे। उनके पिता 'शिवगुरु' के भाग्य में इतना ही लिखा था वे तीन वर्ष का बालक छोड़ वैकुण्ठ गए।

बालक छोटा प्रतिभा अद्भुत आश्चर्यचकित सब हुए लोग। गुरु अक्षम समझें अपने को, देखो ये कैसा है संयोग?

दो-तीन माह में ही उतना ज्ञान प्राप्त कर लिया जितना भी गुरु के पास था। सभी लोग उन्हें अवतारी समझने लगे, वे वेद-ज्ञान में ब्रह्मा, वेदांगों में आचार्य गर्ग, निर्णय में बृहस्पति, व कर्मकाण्ड में 'जैमिनी' लगते थे। उनके विद्या

प्राप्ति के समय की एक मनोहारी घटना का जिक्र करना अनिवार्य है — कुछ अन्य ब्रह्मचारियों सहित वे भिक्षाटन को गए। एक ब्राह्मण के घर पर आवाज लगाई, बटुकों की आवाज सुनकर एक ब्राह्मणी द्वार पर आई, उसके आंखों में अश्रुजल भरा था। बोली — वे लोग बड़े भाग्यवान होते हैं, पुण्यवान भी होते हैं जिनके द्वार पर बटुक भिक्षा मांगते हैं, पर हम तो बड़े अभागे हैं, हमारे पास देने को कुछ भी नहीं है। यदि आटा भी होता तो आपको प्रेम से भोजन कराते। साधु द्वार से लौटें ऐसे जीवन का क्या अर्थ? वह अति ही लज्जित हुई, फिर कहा घर में सकल पात्र मिट्टी के ही हैं और वे सभी खाली पड़े हैं। घर में एक सूखा आंवला पड़ा था बस उसी की भीख दे डाली। शंकर — मन भारी द्रवित हुआ, करुणासागर ने उसकी दरिद्रता दूर करने की सोची। तत्काल ही 'कनक लक्ष्मी स्तोत्र' रचा और सुमधुर शब्दों में उसे प्रस्तुत किया। फिर क्या था, लक्ष्मीमाता ने प्रसन्न हो सोने के आंवले बरसाए। पूरा घर भर गया उनसे, लोग (अनगिन) दर्शन को आए। सात वर्ष की अल्पायु में ही उन्हें पाण्डित्य प्राप्त हो गया था। वे शांति पूर्वक ही रहते थे। निज जननी की सेवा में तत्पर रहना, नित्य वेदाध्ययन करना, उनका नित्य नियम था, सूर्य के समान उद्भासित होते थे वे।

एक बार शंकर की वृद्ध माँ स्नान हेतु सरिता पर आई, गर्मी के दिन थे, धूप कड़ी थी, नभ से आतप बरसता था। 'पूर्णा' ही निकट की नदी थी उसका जल बड़ा पावन और तीनों ऋतुओं में मन भावन था। माँ वृद्ध थी इसलिए बेहोश हो गई। जैसे-तैसे घर लाए, शंकर बड़े द्रवीभूत हुए। उन्होंने उस पावन सरिता, पूर्णा से विनय की, हे माँ पूर्णा! मेरी महतारी दुःख पाती है आप ग्राम के समीप बहो। शंकर की पुकार सुन कर कल-कल करती हुई सरिता वहां आ गई। सभी लोग शंकर का गुणगान करने लगे। राजा राजशेखर को जब सूचना मिली तो गजराज सजा कर उन्हें अपने पास बुलाने हेतु उपहारों सहित अपनी सैन्य टुकड़ी भेजी। शंकर ने जाने में अपनी विवशता बतलाई तब राजा स्वयं ही उनके घर आए।

वाकई, जिंदगी तो बचपन की ही अच्छी होती है



बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
जम्मू व कश्मीर और लद्दाख
जम्मू-180001

एक दिन की बात है, वह रविवार होने के कारण हमारी छुट्टी का दिन था, और मैं घर पर कुर्सी पर बैठा हुआ था, मैं, अपनी ही धुन में खोया हुआ था और सोचे जा रहा था कि आज छुट्टी है तो भई ये दिन तो खाली नहीं जाना चाहिए, मैं आज अपने सभी हफ्ते के बचे हुए कार्य निपटा लूंगा ऐसा सोच ही रहा था कि तभी मेरा छोटा बेटा मेरे सामने आकर अपनी ही धुन में खेलने लगा और उसने खेलने वाली अपनी हरकतों से मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। उसकी उम्र अभी मात्र तीन साल की है। वह अपनी उम्र और स्वभाव के अनुसार अपनी हरकतें किए जा रहा था और मैं लगातार उसको देखे जा रहा था। उसको देखते-देखते अचानक मन में तरह-तरह के ख्याल आने लगे और मन अचानक उस बचपन की तरफ चला गया जो हमारे जीवन में आकर चला भी गया और

कब हम उसे पीछे छोड़ आए या उसने हमें कब जवानी और आगे के जीवन की तरफ बढ़ा दिया ये हमें अच्छी तरह से शायद याद भी नहीं होगा, आदि बातें सोचने लगा। उसको और उसकी खेल वाली हरकतों को देखते हुए मैं अपने जीवन की उसके जीवन से तुलना करने लगा और मन में ये विचार आने लगा कि जैसे-जैसे इंसान बड़ा होता जाता है और जिंदगी में उलझनों के अतिरिक्त जैसा कुछ महसूस नहीं होता, बस जिंदगी तो ये ही अच्छी है, जिसमें कोई चिंता नहीं, कोई फिक्र नहीं और बस बेबाक होकर जीना है इसलिए मन में यही विचार आया कि **“वाकई, जिंदगी तो बचपन की ही अच्छी होती है।”**

आपने वो कहावत तो सुनी होगी कि व्यक्ति को तीन हठों के आगे झुकना ही होता है। पहला हठ है राज

हट, यानि राजा की आज्ञा की कोई भी अवहेलना नहीं कर सकता है। दूसरा हठ है स्त्री हठ, हमें यहां भी हर बात माननी ही होती है। हम अधिकतर अपनी श्रीमती की बात मानते ही हैं, यहां भी अवहेलना कर पाना असंभव होता है और जो सबसे अधिक हठी हठ है वो है बाल हठ, इस हठ के आगे बड़ों-बड़ों को झुकना ही पड़ता है। एक बार के लिए ऊपर के दोनों हठों को हम बातचीत से बदल भी सकते हैं लेकिन इस बाल हठ को नहीं झुका सकते हैं, इसका तो पालन करना ही पड़ेगा। हम चाहे किसी भी अवस्था में हों बच्चा अपनी हठ मनवा कर ही रहता है। आपने वो किस्सा भी सुना होगा कि एक बच्चे ने जिद्द कर ली कि उसे एक हाथी चाहिए। अधिक जिद्द करने पर उसके पिता ने उसे एक हाथी दिलवा दिया बच्चे ने फिर भी जिद्द नहीं छोड़ी और फिर अपने पिता को एक बोटल दिखाते

हुए बोला कि इस हाथी को अब इस बोतल में डाल दो, अब बताओ ये कैसे हो सकता है कि हाथी को बोतल में डाला जाए। जैसा कि मैंने पहले ही बता दिया कि मेरा बेटा अभी मात्र तीन वर्ष का ही है तो आप इसी बात से अंदाजा लगा सकते हो कि मेरा तो इस हठ से सामना होता ही रहता है। इसी का नाम है बचपन, जो असमझ होता है और उस अवस्था में बालक को इतनी समझ ही नहीं होती कि वो जो बात कर रहा है क्या वो पूरी भी हो सकती है? आदि बातें व्यक्ति के सामने प्रश्न बनकर खड़ी होती हैं। जो उस बालक की जिद पर कभी तो बहुत गुस्सा भी दिलाती है तो कभी हंसी आए बगैर रह ही नहीं सकती है।

यहां बचपन से तात्पर्य उस अवस्था से है जब इंसान अपने हिसाब से

जीता है, खेलता है, कभी रोता है और कभी हंसता है, उसको इतना कुछ नहीं पता होता है कि उसके चारों ओर क्या चल रहा है? क्या हो रहा है? क्या वह सही है या गलत? वह इन सब बातों से अनभिज्ञ होता है। उसको दुनियादारी की इतनी समझ नहीं होती वह तो बस अपने जीवन को जीए चला जाता है, कुछ अच्छे बुरे की पहचान न करते हुए वह अपने सभी काम अपने स्वभाव के अनुसार करता है और अपना जीवन जीता जाता है। वह दुनिया के तौर तरीकों से पूरी तरह अंजान होता है, जो मन में आया वह किया और उसको इस बात का बिल्कुल भी डर नहीं होता है कि यदि मैंने कुछ ऐसा-वैसा किया या कुछ तोड़ा या गिराया तो मुझे डांट पड़ेगी या पापा, मम्मी मुझे डांटेंगे। वह पूरी तरह से एक राजा की तरह

होता है और जो दिल में आए वह करता है। न तो उसे किसी अपने, पराए का और न ही किसी समाज का डर होता है, न उसे कोई कमाने की चिंता और न ही दुनिया को चलाने की कोई फिक्र होती है, न किसी से लेना एक और न ही किसी को देना दौ। न तो उसे रोटी कमा कर बच्चों को खिलाने की और न ही पैसा कमाने की चिंता होती है वो तो अपनी उस अवस्था में अपनी जिंदगी का शहंशाह होता है। उसे इस बात की चिंता भी नहीं होती है कि किसे क्या देना है और किससे क्या लेना है? उसे फिक्र होती है तो बस इस बात की उसकी जिद पूरी हो रही है कि नहीं?

वह इस बात को लेकर भी परेशान नहीं होता कि अगले पल क्या होने वाला है, परिवार में क्या काम आने वाला है, जैसे कि हम बड़े अगर कुछ अच्छा होने का आभास हो जाए तो कभी-कभी आने वाले पल की सोच कर कभी तो खुश हो जाते हैं और यदि कुछ गलत होने का आभास हो जाए तो हम उस आने वाले पल के बारे में सोचकर भी घबराने लगते हैं और परेशान भी हो जाते हैं, लेकिन छोटे बच्चे को इस बात की कोई खबर नहीं होती कि आने वाला पल क्या लेकर आएगा? वो तो उस चंचल पक्षी की तरह होता है जो कभी इस डाल पर तो कभी उस डाल पर बैठता



है। उसे परवाह नहीं होती कि उसके इस डाल पर या उस डाल पर बैठने से डाल टूट भी सकती है। ऐसी चिंता तो बड़ों को ही सताती है। इस संदर्भ में मैं यह कहना चाहूंगा कि स्वर्गीय देवानंद साहब का वो मशहूर गाना है न “हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया” कि फिक्र चाहे जो भी हो उसे अपने ऊपर हावी मत होने दो, अपनी जिंदगी में इतने मस्त रहो कि तुम्हें फिक्र ही न लगे और अपनी ही मस्ती में आगे बढ़ते रहो।

लेकिन हम बड़े तो शायद ही उस अवस्था, या उतने सक्षम हो पाएं कि हम भी शायद ही ये कह सकें कि “हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया” क्योंकि समस्या क्या है? उसे कैसे सुलझाना है? उसका क्या हल होगा? आदि बातें तो बड़े होने के बाद ही पता चलती हैं ये बच्चे कहां जानते हैं? और जिंदगी का एक कटू सत्य यह भी है कि हर समस्या सुलझाना हर इंसान के बस की बात नहीं है। लेकिन बच्चे को तो ये बातें कहां समझ में आती हैं उसे तो अपने रोने के टाइम पर रोना है तो रोना है, या जब कोई चीज उसे चाहिए और उसे न मिले तो चाहे फिर घर में कुछ भी हो रहा हो, चाहे कितना भी खामोशी का माहौल हो या कुछ भी उसे अपनी चीज चाहिए तो चाहिए ही और यदि नहीं मिले तो रोना चालू, ये रोना ही भगवान के द्वारा उस बच्चे के हाथ में

दिया हुआ एक बहुत बड़ा हथियार है, जिसके आगे अच्छे से अच्छे और बड़े से बड़े परास्त हो जाते हैं।

उसे इस बात से कोई लेना देना नहीं है कि अभी सब चुप है तो मुझे भी चुप रहना चाहिए। लेकिन वही बच्चा जब धीरे-धीरे समझदार होने लगता है यूं कहे कि जब उस छोटे बच्चे को जब धीरे-धीरे समझ आने लगती है और जब वह हर बात को समझने लगता है या उसको हर बात समझाने की कोशिश की जाती है तो वह भी उसको समझ कर हाँ या ना कहना शुरू करता है या अपना सिर हिलाकर जवाब देता है तो इसका मतलब हम ये लगाने लगते हैं कि वह अब समझदार होने लगा है और वह भी धीरे-धीरे उन बातों का जवाब देने की कोशिश कर रहा है जो उसे उस समय अपने हिसाब से सही लगती

है। इधर देखने वाली बात ये हैं कि जब हम हर चीज़ से अंजान होने की अवस्था में होते हैं तो हमारे द्वारा किए जाने वाले सभी कार्य चाहे वह तोड़-फोड़ के हो, या कोई चीज़ गिराने या कोई भी नुकसान करने के, हमें कोई कुछ नहीं कहता है बस हल्की-फुल्की डांट पड़ती है और वह भी थोड़ा सा बच्चे के दिल में डर पैदा करने के लिए लगाई जाती है ताकि वह दोबारा से कोई गलती न करे और कोई भी नुकसान न तो बच्चे का हो और न ही किसी चीज़ का। लेकिन बच्चा कहां मानने वाला होता है वह तो फिर अपने स्वभाव से अपनी हरकतें करना चालू रखता है।

हालांकि, वह छोटा बच्चा अपनी हरकतें तब तक ही कर पाता है जब तक उसे समझ नहीं होती लेकिन जैसे-जैसे वह बच्चा बड़ा होने लगता



है तो धीरे-धीरे उसकी समझ भी बड़ी होने लगती है, बशर्ते कि बच्चे को कोई शारीरिक या मानसिक बीमारी न हो अर्थात् वह पूरी तरह से स्वस्थ हो, और अपनी बढ़ती उम्र के साथ उसका सही से विकास हो रहा हो तो एक तरफ तो वह समझदार तो हो रहा है लेकिन दूसरी तरफ वह धीरे-धीरे इस दुनिया के मकड़जाल या दुनिया के लोगों द्वारा बनाई गई चालाकी, होशियारी और दूसरी भावनाओं में फंसने की ओर आगे बढ़ जाता है। उसकी समझदारी ही उसे दुनिया के सवालों के सामने खड़ा कर देती है और समय-समय पर जिंदगी हर उस सवाल का जवाब मांगने लगती है जो जीवन जीने के लिए जरूरी होते हैं जैसे रोटी, कपड़ा और मकान। हम अपने से ही ये अंदाजा लगा सकते हैं कि जब हम छोटे थे और हमें इतनी समझ नहीं थी तो क्या आप और हम ये बता सकते हैं कि क्या हमें उस उम्र में रोटी की, नौकरी की, शादी की, समाज में अच्छे बुरे की पहचान करने की सोच रही होगी। मैं, पूरे यकीन के साथ ये कह सकता हूँ कि हम सबका एक ही जवाब यही होगा कि शायद नहीं। लेकिन जब बड़े हुए तो इस दुनिया के चक्रव्यूह में फंस गए। बड़े लोगों और परिवार वालों का कहना है कि भाई दुनिया में जीना है, और दुनियादारी निभानी है तो हमें इस

संसार में मौजूद हर चीज़ सीखनी ही होगी, क्योंकि एक न एक दिन हमारा वास्ता इस संसार की वस्तु या बात से होना ही है।

हमें जीवन में हर चीज़ चाहिए जैसे जो पुराने समय में आदमी की जरूरत थी, वहीं जरूरत तो आज भी बनी हुई है रोटी, कपड़ा और मकान। ये तीन चीज़ें मूलभूत चीज़ें हैं, जो जब तक मानव इस धरा पर रहेगा तब तक ये बदलने वाली नहीं हैं। हाँ, आज के दौर में इन तीन चीज़ों में आराम और सुख सुविधाएं और कुछ भौतिकवादी चीज़ें और जुड़ गई हैं लेकिन वह भी इन तीन चीज़ों से बाहर नहीं है। ये कहा जाता है कि बड़े सयाने कह गए हैं कि इस दुनियादारी को समझो और अपने जीवन में आगे बढ़ो, और आज भी यही सिद्धांत लागू है बड़ों द्वारा ऐसी ही फिलॉस्फी की बातें हमें सुनने को मिल ही जाती हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि जो कभी हमारी जिन्दगी, बिना किसी रोक-टोक के फर्फटे से भागती थी आज वही जिंदगी में समस्या या समस्याएं आने पर हमें ठहरी हुई, उलझी हुई लगती हैं।

जब हमारे जीवन में कोई समस्या आ जाती है और वह सुलझने में बहुत समय लगाती है या कभी-कभी तो सुलझती ही दिखती नहीं हैं, तो वह समझदार इंसान भी कभी-कभी न

चाहते हुए भी उस परेशानी वाला जीवन भी जीता है जो शायद ही वह चाहता हो और वही व्यक्ति, दुनिया उम्मीद पर कायम है, के सिद्धांत पर उम्मीद लगाए रहता है, कि शायद आज नहीं तो कल ही उसकी इस परेशानी का हल निकल आए और उसकी परेशानी दूर हो जाए। उदाहरण के लिए जिन लोगों को ऐसी बीमारियां लग गई हैं जैसे कि शुगर, बी.पी., कैंसर, और ये आजकल की नई बीमारी कोरोना जिसमें यदि व्यक्ति ठीक हो जाए तो ठीक नहीं तो फिर उस व्यक्ति का भगवान ही मालिक है कि वह जिएगा या संसार को अलविदा कहेगा आदि का न तो वर्तमान में उनका कोई इलाज नहीं है और आने वाले कल में भी नहीं दिखता कि मेरी बीमारी का क्या होगा? कब मैं इस बीमारी से आजाद हो पाऊंगा आदि बातें उस व्यक्ति के मन को और भी विचलित कर देती हैं। उसे तो उस मजबूरी वाले जीवन को जीने के अतिरिक्त कोई रास्ता नज़र नहीं आता। अगर कुछ सही नहीं हुआ या होता है तो उसे तो बस घुट-घुट कर ही जीना पड़ता है।

आज जब हम बड़े हो गए और पहले से अधिक समझदार भी हो गए हैं, लेकिन फिर भी ज़रा सी परेशानी आने पर ही बेचैन हो उठते हैं और झुंझलाने लगते हैं क्योंकि कई बार हमारी सोच ऐसा सोचने लगती है कि

मुझे जीवन में एक बार भी चाहे छोटी हो या बड़ी कोई परेशानी नहीं आनी चाहिए, ऐसा सोचते हुए फिर वही उदासी वाली जिंदगी की तरफ आगे बढ़ जाते हैं, जहां से हम सोचना शुरू करते हैं और कभी-कभी अपने को और हालातों को कोसने लग जाते हैं। देखने वाली बात यही है कि इंसान वही है जो कभी दुनिया की सभी परेशानियों, चिंताओं और दुखों से आजाद था लेकिन वक्त के साथ वही इंसान इस दुनिया में, इसके रीति रिवाजों में समय के साथ उलझता चला जाता है और वही उड़ते परिंदे को दुनिया रूपी पिंजरे में एक दिन कैद होना ही पड़ता है। क्योंकि व्यक्ति समाज से बाहर नहीं रह सकता है, उसे इस समाज का सदस्य बनकर अपने हिस्से की भूमिका निभानी ही पड़ती है।

कहने का तात्पर्य यही है कि अगर जिंदगी में परेशानियां ही परेशानियां आती रहें और उन सबका हल कम निकलता दिख रहा हो या उनका समाधान दूर-दूर तक नहीं दिखता हो तो यही हंसी-खुशी वाली जिंदगी (जिसे हम सब जीना चाहते हैं) जीवन का एक सपना बनकर रह जाती है और जिंदगी में ज्यादा परेशानी आने पर यही जिंदगी जी का जंजाल बन जाती है और हर कदम पर सवाल बनकर खड़ी हो जाती है। बस ये ही वो तरह-तरह की बातें थीं जो उस

समय अपने छोटे बच्चों को देखते हुए मन में आ रही थीं और जिन्हें सोचकर कभी हंसता और कभी बहुत ही गंभीर हो जाता और साथ-साथ मैं उसकी हरकतें देखकर मुस्कराए भी जा रहा था, कि तभी श्रीमती जी की किचन से आवाज आई बहुत हुआ सोचना और मुस्कराना क्या बात आज कुछ काम नहीं है? बस बैठे ही हो, चलो तैयार हो जाओ छोटे बच्चे को घुमाने और घर के कामों के लिए बाजार जाना है। मैंने कहा कि बड़े को भी तो ले चलना होगा तो बोली नहीं उसका ऑनलाइन टेस्ट होना है, उसे घर पर ही रहने दो, उसे उसकी तैयारी करनी है। आगे मेरा कोई सवाल नहीं था।

उसकी ये बातें सुनकर फिर हंसी भी आ गई और मन में ख्याल आ गया

कि लो जी कर लो बात आ गया फरमान श्रीमती जी का जिसकी अवहेलना करना ठीक नहीं होगा और फिर यही सोचते हुए मैं, छोटे बच्चे की आजाद जीवन की खुशियों के लिए तैयार होने लगा और अपनी सामाजिक बंधनों से बंधी जिंदगी में जिम्मेदारी का एक कदम और आगे बढ़ाने के लिए मैं बिल्कुल तैयार था और फिर बच्चे की तरफ देखा तो फिर वही ख्याल मुझ पर हावी होने लगा कि **“वाकई, जिंदगी तो बचपन की ही अच्छी होती है”** बड़ों की जिंदगी तो जी का जंजाल ही है और यही बात सोचते हुए मैं, अपने परिवार के साथ घर से बच्चे को घुमाने और दूसरे कामों के लिए निकल गया।



नासूर



सुश्री दया हीत
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

आज सवेरे से ही बरसात का ये आलम था कि बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। अच्छा हुआ कि राजन के दौरे पर निकलने के पहले ही किशन ऑटो रिक्शा पर देवकी को ले आया और उसी में राजन को स्टेशन भी छोड़ दिया। नहीं तो इस बरसात में कोई और साधन मिलना भी कितना मुश्किल था।

एक तो इस सर्वथा बियावान निरापद स्थान पर वैसे ही आने जाने के साधन कम ही मिलते थे और उस पर ये बरसात। पिछले साल ही राजन का बिलासपुर के इस छोटे से कस्बे में ट्रांसफर हुआ था। चूंकि रोनित की पैदाइश के समय मैंने भी कम्पनी से दो साल का दीर्घ अवकाश लिया था, सो साथ में चली आई। पहले पहल तो शहर की आपा धापी से दूर, इस शांत सघन आरण्य का प्रवास मुझे अत्यंत भाया। यहां वहां नृत्य करते मयूर, कुलांचे भरते हिरण और सांभर किसी अभयारण्य के बीच रहने का अनूठा अहसास देते रहते। एक और

भोर की नींद चिड़ियों की चहचहाट से खुलती तो वहीं रात के वीराने सियार लोमड़ी की हुआ हुआ के रुदन से भयभीत भी कर देते। परन्तु सबसे दुरुह था संसाधनों की कमी। शहर से दूर होने की वजह से यातायात के साधनों और काम करने वालों का सर्वथा अकाल था।

खैर ये तो अच्छा हुआ कि किशन राजन के दफ्तर में ही सामान लाने-ले जाने का कार्य करता था और अतिरिक्त समय में अपना ऑटो चलाता। किशन को जब पता चला कि हमें अपने बच्चे के लिए एक कामवाली बाई की जरूरत है तो वह देवकी को काम पर भेजने पर राजी हो गया। बोला कि वैसे तो उसकी घरवाली ने कभी ऐसा काम नहीं किया है परन्तु बच्चे का नाम सुनकर राजी हो जाएगी। फिर आप भी तो हमारे इलाके से हो। किशन पूर्वी उत्तर प्रदेश से था और हम भी उसी प्रदेश के होने के कारण, इस सुदूर प्रदेश में हमें पाकर, शायद उसके अपनेपन का प्रेम जाग उठा था। जो

भी था, हमें देवकी मिल गयी थी, रोनित और मेरे सहयोग के लिए।

हालांकि घर के कामों में उसका अनाड़ीपन साफ झलकता था, तथापि वो रोनित पर दिलोजान लुटाती थी, इसलिए मैंने भी उसके इस अनाड़ीपन को नजरअंदाज कर दिया था। हां वो आलसी नहीं थी और सब काम अपना समझ के करती थी। चूंकि राजन को अक्सर दौरे पर जाना होता था तो कई बार मैं उसे रात में भी रोक लेती और वो सहजता से रुक भी जाती।

30-35 वर्ष की सांवली सूरत वाली देवकी में एक अलग आभिजात्य कुलीन घराने की ठसक थी। बहुत पढ़ी लिखी ना होने पर भी उसके रहन-सहन में अजब नफासत थी, जो मुझे आश्चर्य करती। हालांकि सीधे पल्ले की साड़ी का पल्लू हमेशा सिर पर टिका रहता, बल्कि राजन के सामने तो वो उसे पूरे चेहरे पर ओढ़े रहती। ना तो उसे कोई लालच था ना किसी वस्तु की उसने कभी

आकांक्षा की। मेरे रोनित को तो उसने बिल्कुल अपना बना लिया था शायद इसलिए की वो अभी तक निःसंतान थी।

खैर आज की बारिश ने जैसे सारे रिकार्ड तोड़ दिए थे, देवकी हर दूसरे पहर बालकनी में जा जाकर हाल सुनाती जाती। जब शाम तक बरसात ने रुकने का नाम नहीं लिया तो मैंने देवकी से किशन को खबर कर देने को कहा कि आज शाम को यही रुक जाएगी। अरे फिफ्र ना करो, हम अभी बताये देत हैं। भाभिजो। कहकर उसने फोन पर यहीं रुकने की इत्तिला किशन को दे दी।

रात जैसे-जैसे गहराती जा रही थी, वैसे-वैसे बिजली की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट दिल दहला रही थी। हमने भी जल्दी-जल्दी अपना खाना पीना निबटाया और लेट गए। मैं रोनित को लेकर बिस्तर पर थी और वो जमीन पर बिस्तर लगाकर लेट गई। देर रात जब बिजली की चमक से नींद टूटी तो मैं बरसात का जायजा लेने बालकनी की ओर लपकी। देखा देवकी वहां बैठी धीरे स्वर में विलाप कर रही है। अरे देवकी क्या हुआ तुम्हें, मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया।

वो झटके से उठी और झटपट अपना चेहरा आंचल से पोंछती हुई बोली, नहीं नहीं वो मैं मुझे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए यहां आ गई। भला मुझे क्या होगा, कहती हुई भीतर चली गई। पर मैंने उसका रुदन सुन लिया था, इसलिए आग्रह कर फिर पूछ बैठी, क्या हुआ? किशन से कोई

लड़ाई हुई या वो नाराज है तुम्हारे यहां रुकने से। अरे नहीं भाभी, वो तो इत्ते सज्जन हैं, वो मुझसे कभी नाराज नहीं हो सकते।

तो फिर क्या बात है, जो तू अकेले में आंसू बहा रही है। कोई तो बात है, हां बताना नहीं चाहती तो और बात है।

नहीं भाभी, ऐसी कोई बात नहीं है।

ठीक है, जैसी तेरी मर्जी। मैं तो अपना समझ के पूछ रही थी, बताने से मन का भार हल्का हो जाता है। मैंने कहा।

प्रत्युत्तर में वो नीचे बिछी चादर को मोड़ती जोड़ती रही, उसकी उलझन को सोचकर मैंने उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरा, चल जैसी तेरी मर्जी। सो जा।

इतना था कि वो फफक कर रो पड़ी, सिसकते हुए बोल उठी, हां भाभी बोझ लिए फिर रही हूं कलेजे पर अपने कलेजे का।

भाभी आपने पूछा था ना की बच्चा नहीं जने हम। ऐसा नहीं है हम भी मां बने थे पर अपने पागलपन में सब गवां बैठे।

हम तो बड़े जमींदार के यहां ब्याही थे, हां थोड़ा उम्रदराज थे बस्स। 16 साल की अल्हड़ उमर में मां भी बन गए, एक सुंदन सी गुड़िया दी थी ईश्वर ने। पर हम ही संभाल नहीं पाए। जमींदार अपने स्वभाव के अनुसार कभी यहां दौरे पर रहते कभी वहां शिकार पर। किशन तो वहां रखे कई कामगारों में से एक था। चूंकि किशन को हमारी मदद के लिए रखा

गया था इसलिए अक्सर हमारा बोलना बतियाना रहता। वही अल्हड़ उम्र में कदम बहक गए और इनसे प्रेम की पींगे बढ़ाने लगे। जब लगा कि यहां रहने से तो हम एक ना हो सकेंगे, सेतो घर छोड़कर भागने का फैसला लिया।

ऐसी ही काली अंधेरी बरसात की रात थी, बिजली कौंध रही थी, सब छोड़छाड़ कर भाग चले। गुड़िया की ममता भी हमारे पागलपन को नहीं रोक सकी। उस कमसिन उम्र के बहकावे में चले आये। पर जाते कहां, किशन के गांव जाते तो जमींदार वहां भी खदेड़ लाते। सो यहां परदेस में भाग आये।

किशन तो आज भी हमको बहुत प्रेम से रखत है पर सन्तान का सुख नाही दे सके। शायद ईश्वर ने सजा दी हमारे भूल की। अब तो हमार बितिया 16-17 साल की हो गई होगी। कितना अपयश झेलना पड़ा होगा उसको। उसी की आह लगी है हमको। जब भी ऐसी बरसाती रात आती है तो बरबस घाव रिसने लगत है हमार। अब का करें कैसे सुधारे अपना अपराध।

देवकी की आप बीती सुनकर धक्का सा लगा। बाली उम्र की भूल का पश्चाताप शूल बनके उसकी आंखों से बह रहा है, परन्तु ये घाव नासूर बन गया था समय की मार से और बरसात का ये पानी उस टीस को और अधिक बढ़ा देता है शायद।

पर क्या कहती उसको, क्या कहकर सांत्वना देती शायद समय का ये मरहम ही उसे कभी सुकून दे जाए।

हार्ट अटैक



बी.एस. चौहान

1809, महागुन मेपल, प्लाट एफ-26,
सेक्टर-50, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

हर दिन शाम ढलने के बाद मोहित को कोई भी काम नहीं सूझता और उसे अकेलापन और रिक्तता का अनुभव होने लगता था। खाने-पीने से फ्री होने के बाद उसे बाईं तरफ सीने में अजीब-सा दर्द महसूस होता था। मोहित को लगता शायद ये दिल का कोई रोग है और एक दिन सोते-सोते उसका अंत हो जाएगा। यह एहसास मोहित को कोसों दूर भगा ले जाता था। वह घंटों एक करवट से दूसरी करवट बदलकर चारपाई में लेटा रहता। उसके पास कोई काम नहीं था, जो उसे रात्रि में व्यस्त रखे। अतः बिस्तर में लेटना उसकी मजबूरी थी। रात्रि में करे भी क्या? तभी उसे ख्याल आया कि वह कोई कहानी लिखे। लेकिन वह तो लेखक नहीं है और न ही उसके पास कोई ऐसी अनुभूति है जिसे वह शब्दों में ढाल सके।

कभी-कभी मोहित को लगता कि सीने का दर्द उसको चेतावनी दे रहा

है कि वह हार्ट का चैक-अप करा ले। उसने सोचा कि वह बहुत भाग्यशाली है कि 70 वर्ष की आयु में भी उसे कोई स्वास्थ्य विकार नहीं है। शरीर के सभी अंग तो भले और एक्टिव हैं। फिर भी उसे लगने लगा कि उसका अंत हृदय गति के रुकने से ही होगा। उसने सोचा कि उसे अपनी वसीयत लिख लेनी चाहिए।

वह गंभीरता से अपनी विरासत में छोड़े जाने योग्य सामानों की लिस्ट के बारे में सोचने लगा। मोहित को इस बात का एहसास होने में देर नहीं लगी कि उसके पल्ले तो कुछ भी नहीं है। उसने अपने जीवन की सम्पूर्ण कमाई तो अपने बच्चों की परवरिश व उनके भविष्य को उज्ज्वल एवं सुरक्षित करने में लगा दी थी। उसे 'बागवान' फिल्म की तरह इसका भी कोई गिला नहीं था। उसके तीनों बच्चे धन-धान्य व शान्ति से विदेश में ख्याति प्राप्त इंजीनियर और डॉक्टर थे और उसे बहुत चाहते थे। एक

लंदन में डॉक्टर था और दूसरा कनाडा में इंजीनियर और बेटा न्यूयार्क में अध्यापक। सब उसका बहुत आदर-सत्कार एवं प्यार करते थे। वे अपने पिताजी को अपने पास ही रखना चाहते थे। पर वह भला मानुष भारत की मिट्टी को छोड़ना नहीं चाहता था। वैसे सेवाकाल में सैकड़ों विदेश यात्राएं कर मोहित पूरा विश्व घूम चुका था।

मोहित ने कहानी और वसीयत लिखने का विचार त्याग दिया और हो गया हृदय गति रुकने से मौत के लिए तैयार। उसको ख्याल आया कि वह उसका कर्तव्य है कि ऐसा हादसा होने से पहले वह अपने पुत्रों को सूचित तो कर दे ताकि उन्हें अपना अर्जेंट कार्य छोड़ कर उसको अग्नि देने के लिए अचानक भारत ना भागना पड़े। जैसे ही उसने पुत्रों को फोन करने के लिए रिसीवर उठाया, दूसरे क्षण उसके दिमाग में आये ख्याल से रिसीवर रख भी दिया।

अगर हार्ट अटैक नहीं आया तो? मोहित इन्हीं ख्यालों में खो गया और विचरने लगा अपने दूर अतीत में। इस बेचैनी में वह क्या करे। उसकी ज़िन्दगी का कैसेट रिवाइंड मोड़ पर चलना शुरू हो गया।

मोहित को ख्याल आया किस तरह बाल्यकाल में मानव केवल अपने लिए ही जीने को जीवन समझता है या फिर यूँ कहिए कि जीवन क्या है और मृत्यु क्या, यह समझता ही नहीं। उसे दूध चाहिए, उसे पानी चाहिए, उसे खिलौना चाहिए, उसे माँ चाहिए, उसे बहिन चाहिए। कभी-कभी उसे सड़क पर जाता हुआ हाथी, घोड़ा या ऊँट चाहिए। संक्षेप में कहें, तो बच्चे को सारा संसार चाहिए। उसे यह सब मिलना ही चाहिए, जैसे कि वह इस दुनिया का चक्रवर्ती सम्राट हो। उसे किसी भी चीज के लिए मना करो तो बच्चा उसकी जिद करता है। उसे फिर भी वह सब नहीं मिलता है तो उसे गुस्सा आता है, या वह दुखी होकर रोने लगता है। यह सब इसलिए होता है क्योंकि उसे कोई वस्तु न मिलने का कारण समझ में नहीं आता।

बच्चे की जिद कभी-कभी आपको बड़ी परेशानी में डाल देती है, लज्जित कर देती है। तीस साल पहले दिल्ली में डीटीसी की सेवा बड़ी निराशाजनक थी। एक घंटे तक आपको इंतजार करना पड़ता था।

बस कभी आएगी तो स्टैंड पर रुकेगी नहीं, रुकेगी तो पहले से ही गेट में भी 10-15 सवारी लटकी होंगी।

एक बार मोहित दिल्ली के इंडिया गेट पर लगी बाल प्रदर्शनी जाते समय बस पकड़ने के लिए अपने तीनों बच्चों के साथ स्टैंड पर आकर खड़े हुए। बस स्टैंड पर पहले से खड़ी भीड़ देखकर उसका दिल बैठा जा रहा था। अगर बस आ भी गयी तो उन्हें चढ़ने कौन देगा। मियां बीवी और तीन छोटे-छोटे बच्चे। इनमें सबसे बड़ा बच्चा था मोहित की 5 वर्षीय पुत्री। जेब में मात्र 200 रुपए थे। छोटा एक वर्ष का लड़का उसकी पत्नी राधा की गोद में और बड़ा लड़का रोहित की उंगली पकड़ साथ में खड़ा था। पुत्री माया भी साथ में खड़ी थी। माया ने दूर से टैक्सी आती हुई देखी और रोकने के लिए हाथ दे दिया। ड्राइवर ने टैक्सी रोक दी और झट से पूछा — कहां जाना है?

‘इंडिया गेट’ माया ने उसकी तत्परता से उत्तर दिया।

‘बैठो।’

मोहित ने माया को समझाया कि वे टैक्सी में नहीं बैठ सकते। लेकिन माया के पास समझाने के लिए तर्क भी था।

‘पापा देखो! इसमें काफी जगह है। पप्पू तो मम्मी की गोदी में रहेगा।’

राजू आप दोनों के बीच में बैठ जाएगा और मैं आगे। इस तरह हम टैक्सी में बैठ सकते हैं।’ इस ड्रामे का स्टैंड पर अन्य यात्री खड़े-खड़े आनन्द ले रहे थे। तब तक माया आगे की सीट पर बैठ चुकी थी और मोहित के पास अब इससे बचने का कोई उपाय नहीं था। माया जिस खुशी और कौन्फीडेंस से टैक्सी में बैठ इतरा रही थी, वह देखते ही बनता था।

जैसे-जैसे मानव आयु की अगली सीढ़ी पार करता है उसका ध्यान अपने से हटकर बाहरी दुनिया में झांकने लगता है। मोहित ने भी अपने अतीत में झांका जब वह कॉलेज में पढ़ता था। उसके सामने सबसे अलग एक ही चेहरा उभर कर आया, आशा का। उसके पड़ोस में रहने वाली आशा का। वो उसकी हम उम्र थी। जिसे मोहित प्यार करता था। अजीब और पागल-सा प्यार। रोहित और आशा कभी मिल नहीं पाते थे। बस प्रेम पत्रों के आदान-प्रदान से ही अपने प्यार का इज़हार करते थे।

एक प्रेम पत्र की याद करके मोहित की हंसी छूट गई। उसने 64 पृष्ठ की कापी खरीदी थी। आशा को पत्र लिखने बैठा तो कापी के पूरे 64 पेज ही भर दिये। अवसर देखकर जब आशा अपने घर की बालकनी में अकेली बैठी तो एक छोटे बच्चे के हाथ उस कापी को आशा के पास भिजवा दिया। आशा की मुसीबत आ

गई। न तो वह इस पत्र को जला सकती थी, न ही फाड़कर कूड़े में डाल सकती थी। अगर छिपाती तो कहां छुपाती? उसे पकड़े जाने का डर जो था। अगले 10 दिन के लिए क्रिसमस पर कॉलेज बंद था। आशा ने अन्ततः पत्र जलाया तो पूरा कमरा धुआं से भर गया था और बाहर शोर मच गया था।

तभी मोहित को याद आया मौत से जीवन का पहला सामना। कॉलेज से पूरी भरी बस शिमला ट्रिप पर गयी थी। पहाड़ी से नीचे लटक कर बस गिरने वाली थी। सब रोने लगे थे। मगर मोहित नहीं डरा था। उसको केवल फिक्र हो रही थी सिर्फ आशा की। आशा उसके बिना कैसे रहेगी। वह तो उसकी मौत की खबर सुनकर रोती ही रहेगी। 'काश! ये जात-पात का चक्कर नहीं होता तो मेरी और उसकी शादी हो गई होती। आज तक भी तो हम एक दूसरे को नहीं भूल पाए हैं।'

जवानी की दहलीज़ पर प्रवेश करते ही मनुष्य आसमान से तारे तोड़ने की तमन्ना करने लगता है। तभी मोहित को अपनी जवानी का वो लम्हा याद आया जिससे उसका रोम-रोम सिहर उठा। मौत और जीवन के बीच बस 5-10 सेकेन्ड का फासला बाकी था। मोहित अपनी जवानी के शिखर पर था। उम्र लगभग 35 साल की थी।

भारतीय वायु सेना के एक विमान में केवल सात यात्री थे। मोहित और मोहन सबसे पिछली सीट पर बैठे थे। स्क्वाड्रन लीडर गणपति सुब्रामणियम भारतीय वायु सेना के सर्वोत्तम पायलटों में से एक था। उसके चेहरे पर कॉन्फीडेंस का दमदमाता तेज चारों तरफ फैलता था। बम्बई से टेक ऑफ होते ही विमान आकाश को छूने लगा।

पलक झपकते ही विमान 8,900 मीटर से ऊपर पहुंच गया। आकाश में सफेद और घने काले अलग-अलग आकृति के बादल जैसे मदहोश होकर विचरण कर रहे थे। लगता था जैसे पूरा आसमान केवल उनकी अपनी धरोहर हो और खुले आसमान पर केवल उन्हीं का साम्राज्य हो। पूर्व दिशा से आती सूरज की किरणें बादलों को बेध कर विमान के शीशों का चुम्बन ले रही हो। पिछली सीट

पर बैठे मोहित और मोहन इस आलौकिक नजारे का आनन्द ले रहे थे।

तभी मोहित के मुंह से निकला — 'गणपति के लिए विमान विमान नहीं है, बल्कि एक मात्र खिलौना है। तीन साल पहले ही तो उन्हें अति विशिष्ट सेवा मेडल से सुसज्जित किया गया था...।'

अभी मोहित की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उसने आगे बढ़ते हुए कहा — 'आसमान पर बादलों और पक्षियों का नहीं अपितु गणपति का साम्राज्य है।'

'अरे! नीचे देखो खंडाला का दृश्य कितना मनोहर लग रहा है। टाइगर प्वाइंट यहां से साफ नजर आ रहा है। गणपति में एक कला-कौशल है, वह चाहे तो दो पर्वतमालाओं के बीच में से विमान को उड़ते चील की तरह निकाल सकता है।' मगर यह क्या?



अचानक सभी सवारों की धड़कन रुक गई और उनके होश उड़ गए। विमान कुछ ही क्षणों में जमीन पर गिर कर चूर-चूर होने वाला था या आग पकड़ कर पेपर की तरह भस्म होने वाला था।

अचानक विमान का दायां दरवाजा टूट कर, एक प्लेट की तरह हवा में तैरने लगा। विमान की हालत ठीक ऐसे हो गई जैसे आसमान में उड़ते हुए बाज की बन्दूक की गोली लगने से होती है। विमान अब पूना की तरफ नहीं जमीन की तरफ जा रहा था।

गणपति ने कॉकपिट से आवाज दी – ‘सीट को जोर से पकड़ कर रखें। सब सीट बेल्ट टाइट से बांधें और टूटे हुए द्वार से अपने आपको बाहर खिंचने से बचाएं।’

सभी को ऐसा लग रहा था जैसे कि दरवाजे से बाहर अब गिरे...अब गिरे... और घायल चील की तरह हवा में लुढ़कते हुए मर जाएंगे। विमान की हालत ठीक उस नाव की तरह हो गई थी जैसे समुद्र में तूफान आने से हो जाती है। सभी यात्रियों को ऐसा लग रहा था कि अब मरे... अब मरे...।

58 वर्षीय चीफ को अजीब विचार आ रहा था। वे प्रार्थना करने लगे थे – ‘हे भगवान! मेरी डैड बॉडी को मेरे बच्चों को जरूर नसीब करा देना, ताकि मेरा दाह-संस्कार उचित विधि से किया जा सके।’

मोहन को अपनी एकमात्र बेटी का ध्यान आया, जो पूना में एम.ए. अर्थशास्त्र की अन्तिम वर्ष की परीक्षा देने वाली थी। ‘वह तो अब अनाथ हो गई। अपना जीवन अब कैसे बिताएगी? उसको तो पता नहीं, मेरी मौत की खबर कब लगेगी? वह तो टी.वी. भी नहीं देखती और अखबार भी नहीं पढ़ती। उसे तो अपनी पढ़ाई और पिता के प्यार के अलावा कुछ सूझता ही नहीं। हे ईश्वर! अब तुम्हें ही इस बच्ची को संभालना पड़ेगा। मैंने आज से अपनी बेटी को तुम्हारे हवाले कर दिया है।’

पायलट गणपति और को-पायलट रामपाल को जीवन और मृत्यु के बारे में सोचने की फुर्सत ही कहां थी। वे तो विमान को संभालने और उसे सुरक्षित पूना पहुंचाने के इस कठिन

जंग को जीतने के प्रयास में जुटे हुए थे।

तीसरी सीट पर बैठा स्क्वाड्रन लीडर राहुल, श्रीमती और श्री बर्मन को, जो पहले से ही बेहोश हो चुके थे, जोर से अपने बांहों में जकड़े हुए था। अन्यथा कभी के टूटे दरवाजे से वे बाहर जा चुके होते। उसने अपनी सारी ताकत और सोच तो उन्हें बचाने में लगाई हुई थी। मोहित सामने हो रहे मौत के तांडव से भयभीत था और सोच रहा था – ‘मैं कितना लापरवाह हूं। तीन साल से खाली योजनाएं ही बनाता रहा। अभी तक प्लॉट पर मकान नहीं बनाया। अब तो प्रभा को मेरा सरकारी मकान खाली करना पड़ेगा। बेचारी तीन बच्चों को लेकर कहां जाएंगी? मेरी ससुराल से भी तो उसको कोई मदद की आशा नहीं है।’



तभी उसे ख्याल आया कि उसने अपने जीवन बीमे की तीन महीने से किस्त नहीं भरी है। 'मेरी बीमा पॉलिसी का एक धेला भी बच्चों को नहीं मिलेगा। हे ईश्वर! अब की बार किसी तरह मुझे बचा लो। आगे से सबका भविष्य सैट करके रखूंगा।' मोहित मौत से डरा हुआ था।

तभी एक चमत्कार हुआ। विमान जब जमीन से सिर्फ 500 मीटर की ऊंचाई पर था और अगले कुछ पलों में जमीन से टकराने वाला था, अचानक ऊपर उठा। गणपति ने इस समय तक उसे संभाल लिया था। उसने 20 मिनट के बाद विमान को पूना हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतार दिया। सबकी आंखों में आंसू थे। सभी गणपति को भगवान समझकर उसका धन्यवाद दे रहे थे। उसकी प्रशंसा कर रहे थे... उसके साहस और कौशल के लिए।

जो रोहित 35 वर्ष पूर्व मृत्यु को करीब से देखकर इतना डर रहा था, वही आज हार्ट अटैक से अपने जीवन का अन्त होते देख रहा था। आज उसे मौत का कोई खौफ नहीं सता रहा था। वह मानसिक और शारीरिक दोनों दृष्टि से मृत्यु के लिए तैयार था। फिर भी उसे एक अजीब बेचैनी हो रही थी। उसकी सांस जैसे घुटी जा रही थी। वो करे तो क्या करे?

यही सवाल उसने लगभग 45 वर्ष पूर्व अपनी प्रेमिका आशा से पूछा था।

आशा का भाई और पिता दोनों ही उसे घर में बंद करके रखते थे। कभी-कभी मारते भी थे। तब उसने आशा से पत्र लिखकर पूछा था कि जब तुम कभी रात में दुखी और बेचैन होती हो तो क्या करती हो?

आशा ने जवाब में लिखकर भेजा था – 'मैं ऐसे में उस दिशा में मुंह कर गहरी लम्बी सांसें लेने लगती हूँ जिस दिशा से तुम्हारी छोड़ी हुई सांसें मेरे होठों तक पहुंचती हैं। ऐसा करते-करते लेटी हुई उस तरफ करवट करके लेट जाती हूँ जिस दिशा में तुम रहते हो। ऐसा करने से तुम्हारे और मेरे बीच की दूरी कुछ और कम हो जाती है और मुझे तुम्हारे कुछ और करीब आने का एहसास होने लगता है।

साढ़े चार दशकों के बाद मोहित को इस बात का अर्थ आज पहली बार समझ में आया था। उसने पहली बार

इस क्रिया को अपनाया। आशा अब अपने परिवार के साथ चेन्नई में रहती थी। मोहित का ड्राइंग रूम मकान के दक्षिण में था। वह उठ कर ड्राइंग रूम में गया। सोफे को सरका कर ड्राइंग रूम के दक्षिण दिशा वाली खिड़की के पास ले आया। मोहित ने खिड़की खोल दी। खिड़की की तरफ मुंह करके सोफे पर लेट गया। लम्बी और गहरी सांस भरने लगा। मोहित को एकसास हो रहा था जैसे आशा द्वारा छोड़ी हुई सांसें वातावरण में मिल रही हैं और उसका एक अंश सांस लेते समय उसके मुंह में प्रवेश करके उसके दिल और दिमाग को चैन और शीतलता प्रदान कर रहे हैं। वह गहरी सांसें लेता रहा और इस सुखद चैन का अनुभव करता रहा।

उसको कब नींद आ गई, इसका मोहित को पता ही नहीं चला।



दीदी



योगेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

एक महान शिक्षक हैं, यद्यपि वे सेवानिवृत्त हैं तथापि आज भी जो जिज्ञासु विद्यार्थी आते हैं वे उनसे तृप्त होते हैं। एक शिक्षक कैसे हों यह बड़े लेख का विषय है। पर सबसे बड़ा दायित्व है विषय को रूचिकर बनाना। वे विषय को इतना रोचक बना देते थे कि लोग अपनी जगह पर कभी शोर नहीं किया करते न एक दूसरे से कोई बातचीत...

उनकी सादगी और सरलता से लोग बिना प्रभावित हुए नहीं रहते लेकिन उनका व्यंग्य जो कि वे छात्रों से मार पीट न करने के एवज में देते थे बड़ा घातक और चुभने वाला हुआ करता था। उनके सन्तान उनके सन्तान कम उनके छात्र अधिक थे ... चार लड़कों के पिता वे अपनी धर्मपत्नी को एक दिन इस बात पर उलाहना दे देते हैं कि क्या स्नो पाउडर लाएं बेटी तो है नहीं ... और महादेव प्रदत्त वे चार पुत्रों को एक बहन मिलने वाली थी इसी ब्रह्म वाक्य से ... संक्रांति के

बाद वाली सुनहरी सुबह में वो किलकारी मारती 15 जनवरी को आई लगी गुरु जी के परिवार को अब अपना संविधान मिल जाएगा, अब यह परिवार भी गणतंत्र हो जाएगा।

रक्षा बंधन का मतलब बचपन में यही था कि बाबू जी 5 रुपया देंगे वह दीदी को राखी बांधने पर दे देना है।

वह गद्दी वाली राखी, चमचम रंग ... नए कपड़े (शायद दीदी के लिए ही आया करती थी)

तो कुल मिला कर दीदी से केवल ईर्ष्या ही रहती थी, जबकि माता राम के सारे कर्तव्य मेरी दो वर्ष बड़ी दीदी ही पूरा किया करती थी, नहलाना, कपड़े पहनाना, कंधी करना, खाना खिलाना, मेरे कपड़े धोना सब कुछ ...।

पर मेरी नज़र इसी पर रहती कि लोग इसे अधिक प्रेम करते हैं ... पैसा इसे मिलता है।

खैर, दीदी मेरी मित्र, माता की तरह ख्याल रखने वाली, सुख दुःख, शैतानी ... पूजा पाठ सब में सहभागी थी।

वह उन जिज्ञासा में भी सहभागी थी जो बड़े हास्यास्पद से लगते हैं।

क्या आप सहज विश्वास करेंगे कि मेरी दीदी मुझे बोरे पर बैठा कर विद्यालय के रास्ते खींचते हुए कुछ दूर ले जाती, फिर मैं भी उसे खींचता ... पूरी दबंग थी दीदी कुशल नेतृत्व करने में अव्वल, गणित में बहुत तेज, फिर माता जी ने गृह कार्य में दक्ष बना दिया।

हम बड़े होते चले गए, मिलते बिछड़ते रहे, रक्षाबंधन का संस्कार भी अपने-अपने नए कलेवर के साथ चलता रहा। बचपन से ही दूर हो जाने के कारण मुझे अपनी दीदी का संरक्षण बहुत खलता था, जिसे खुद नहाना नहीं आता था खुद स्नान कर लेते तो दीदी बोलती देखो यहां

साबुन रह गया है, देखो यहां मैल है, ये देखो मुंह में दाल लगा रह गया, कान में झाग रह गया ... अब देखो नहा के धूप में खड़े हो गए हो आंख आ जायेगी, अब नहा लिए जाओ धूप में खड़े हो जाओ ... ।

देखा बाल की पट्टी इधर से खींचो ... इस पैट पर ये शर्ट पहनो ... शर्ट अंदर करो ... टी शर्ट बाहर ही अच्छी लगती है ... मेरी सहेली से ज्यादा बात मत किया करो ... ।

इतने ज्ञान, इतना संरक्षण और अन्तहीन टोका टाकी ... मेरे नन्हे से जीवन में दीदी इतनी भरी हुई थी और फिर आगे की पढ़ाई के लिये मुझे जोधपुर जाना पड़ा ... अब निर्वात सा उदास दीदी के लिए अपने छोटे भाई के लिए ... बाबू जी और मैया के लिए मन बहुत तड़पता ... ।

हर आवाज़ में मुझे अपने परिवार की गूंज सुनाई पड़ती, हर शक्स में अपनों को ढूंढता ... ।

“कभी भली है कटुक निबोरी, कनक कटोरी की मैदा से” ।

दीदी तुम कहां हो ... ।

मेरा अन्तःकरण बार-बार पुकारता ... किस से लडूँ, किस से द्वेष करूँ ... दीदी यहां मुझे कोई नहीं टोकता ... ।

कोई नहीं रोकता ।

कई रात को उठा कर, पाव भर मांस कम हो जाने का डर दिखा कर खाना

नहीं खिलाता ।

दीदी तुम कहां हो ।

मेरा दुबला पतला, हमेशा मां से चिपक कर रहने वाले छोटे भाई पंकज तुम कहां हो!!

हृदय फट सा जाता और पूरे एक वर्ष की आशा में आंखें पथरा जातीं । रिश्ते के अभाव में मैंने अपने छात्र जीवन में कई बहन बनाई जिसमें अंशुमाला, पुष्पा और शालिनी विशेष रहीं । दीदी आज भी है और आज भी पहले की तरह मेरे छूटे हुए जिम्मेदारी जो कल मात्र साबुन के झाग देह के किसी हिस्से में छूट जाने भर से बड़े लापरवाही को ठीक करती है ।

हम जिंदगी से चाहें जितना भाग लें या शूतुरमुर्ग की तरह अपना माथा सत्य से छिपने को ढक लें लेकिन हमारा अस्तित्व जिस से बना है उस से हम भाग नहीं सकते । हमारे आस पास उनका प्रभाव बना ही रहता है जिनसे हमें मौलिक अवधारणा मिली

है, जिससे हमारा गठन हुआ है । आज नारीवाद हों या पुरातन सनातन वैदिक धारा सभी स्थानों में नारियों का स्थान महती रहा है । कई स्वरूपों से होते हुए नारी शक्ति हमारे जीवन के कई पक्षों को स्पर्श करते हुए हमें कभी स्वयं में गुरु, मार्गदर्शक, मित्र और सहायत्री बन कर हमारे जीवन को सार्थक बनाती रही है । भगिनी या बहन का स्वरूप बड़ा ही मार्मिक है । रामायण में निषाद परिवार की बेटी को राजा दशरथ अपनी बहन मानते हैं और उनकी संतान को अपने पुत्र राम के साथ पढ़ाई लिखाई की व्यवस्था करवाते हैं वहीं लड़का कालांतर में राम जी का परम मित्र निषाद राज गोह होते हैं राजकुल के होते हुए भी अपने से भिन्न वर्ण और हैसियत की महिला को वो बहन मानते हैं तो उसे निभाते भी हैं, हमारी गौरव पूर्ण परंपरा सदैव ही बहन का ऋणी रहा है । श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा हो या सखी तुल्य बहन द्रौपदी हर ओर प्रेम, समर्पण की बात है ।



पोपटलाल बच्चन की अजीब दास्तान



संजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)
तमिलनाडु, चेन्नई-600018

उन लोगों ने मेरा नाम बिना गर्दन वाला आदमी रख दिया था। पाठकों को यहां यह बता दूं कि वह अकारण भयभीत ना हों। मैं कोई भूत या पिशाच नहीं हूं। मैं बहुत सुंदर व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति हूं। कम से कम खुद की नजरों में तो हूं ही। मेरी गर्दन सिर्फ आम लोगों से थोड़ी सी छोटी है और देखने में ऐसा लगता है कि मेरा सिर मेरे धड़ से चिपका हुआ है। अगर इसी कारण से कोई किसी को अपमानित करना चाहेगा तब तो लोग कुलभूषण खरबंदा को भी गाली देंगे। मेरी दूसरी कमजोरी है कि मैं थोड़ा झुक कर और पांव झटक कर चलता हूं, इससे लोगों को लगता है कि मैं कूबड़ा हूं। पर भाईयों, मैं कूबड़ा नहीं हूं। मेरा विश्वास तो उस प्राचीन सिद्धान्त में है कि जिस वृक्ष में अधिक फल लगते हैं वह वृक्ष झुक जाता है, तो यदि मेरे जैसा सुंदर व्यक्ति झुक कर चले तो उसे कूबड़ा नहीं कहना चाहिए। पहले मैं भी और लोगों की

तरह दुबला-पतला था, पर मेरी नानी ने रोटी में घी डाल-डालकर और डालडे में पूरी छानकर मेरी तोंद निकाल दी। कभी-कभी तो अपने शर्ट के बटन लगाने में भी मुझे बड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। अपने कॉलेज के दिनों में मैं धीरे-धीरे मोटापे की तरफ बढ़ने लगा। मोटापा कम करने के लिए मैं जिम नहीं गया बल्कि मैंने जैकी श्रॉफ का एक विज्ञापन देखा जिसमें वह एक ऐसी दवाई का प्रचार कर रहा था जिसे खाकर इंसान 1 महीने में दुबला पतला और तंदुरुस्त हो जाता है। मैंने उस दवा को आर्डर करके मंगाया। क्या बताऊँ भाईयों और उनकी बहनों, मैं पतला तो नहीं हुआ पर मेरे बाल धीरे-धीरे उड़ने लगे और मैं गंजा होने लगा। कहां मेरे अरमान थे कि मैं शाहिद कपूर की तरह दिखूंगा लेकिन मैं तो बुढ़ापे के शम्मी कपूर और शशि कपूर की तरह होता जा रहा था और आवाज मेरी पिंचू कपूर

की तरह होती जा रही थी। मेरे पड़ोस के चाचा मुझे देखकर कहते “क्यों बेटा ढोलकराम कैसे हो। दिन पर दिन सुंदर होते जा रहे हो। और बेटा तुम्हारे बाल किस खुशी में उड़ रहे हैं?” कॉलेज में लड़कियां मेरा मजाक ना उड़ाएं इसलिए मैंने पंजाब से दो नकली बालों के सेट (विग) मंगवाए। एक अनिल कुमार का हेयर स्टाइल का विग था तो दूसरा अमिताभ बच्चन का। मेरे कॉलेज के लड़के मेरे हेयर स्टाइल को देखकर चकित रह जाते कि एक ही समय में एक इंसान दो-दो हेयर स्टाइल कैसे रख सकता है। एक बार मेरे इलाके में एक बड़ा भयंकर सांड आ गया था। उसने पूरे इलाके में खलबली मचा रखी थी। वह किसी के रुके नहीं रुकता था। मैं उस वक्त अपने दोस्तों के साथ कचौड़ियां खा रहा था जब दौड़ते हुए उसने मुझे टक्कर मारी। भाईयों और उनकी बहनों आपको यकीन नहीं होगा मेरे टक्कर से वह

सांड मर गया। तब मेरे मोहल्ले वाले कहने लगे “भाई वह सांड क्या जानता था कि आज उसकी टक्कर एक गैंडे से होने वाली है। तो भाईयों और उनकी बहनों, मैं जैसा भी हूँ उसी में अपने आप को तुर्रमखान समझता हूँ। ऑफिस निकलने के पहले जहां सारे लोग आईने में अपने चेहरों को देखते हैं वहीं मैं अपनी तोंद देखता हूँ, कि कहीं मेरा पेट आज ज्यादा तो नहीं निकला। मैं दोस्तों के साथ डिस्को भी जाता हूँ और अपने तोंद को हिला-हिलाकर खूब नाचता हूँ। खासकर नए साल के अवसर पर मेरा अपने गंजे सर को हिला हिलाकर नाचना लोगों के भीतर एक नया उत्साह भर देता है। लोगों को और खासकर मेरे कार्यालय के सहकर्मियों को ईश्वर को प्रतिदिन धन्यवाद अर्पित करना चाहिए कि उन्होंने मुझे उनके बीच भेजा। रास्ते में चलते-चलते हर आईने में मैं अपनी शक्ल देख लेता हूँ, लेकिन

अगर कोई दूसरा शख्स अपनी शक्ल देखे तो मैं फट से उसका मजाक उड़ाता हूँ। सुबह-सुबह जब अपने खटारा स्कूटर पर मैं कॉलेज पहुंचता हूँ तब जाकर मेरे कॉलेज की नींद खुलती है। चलिए अब अपनी अधिक प्रशंसा क्या करूँ, मेरी प्रशंसा तो साक्षात ईश्वर भी अपने अनंत कोटि मुख से नहीं कर सकते। मेरे वचन गीता से भी ठोस और पत्थर की लकीर के समान हैं। जिस व्यक्ति को मैंने स्मार्ट कह दिया वह स्मार्ट बन गया और जिसे मैंने बदसूरत कहा वह बदसूरत हो गया चाहे फिर वह शख्स विनोद खन्ना की तरह ही क्यों ना दिखता हो। तो भाईयों और उनकी बहनों, मैं आपका फालतू समय ज्यादा बरबाद ना करते हुए अपनी कहानी की शुरुआत करता हूँ। मेरा जन्म हर महान व्यक्ति की तरह इलाहाबाद में हुआ था। बच्चन जी का घर मेरे घर से 10 कदम की दूरी पर था। मेरे घर से चिल्लाने की

आवाज बच्चन जी के घर तक सुनाई देती थी। लोगों का कहना है कि हमारे घर के शोर शराबे के कारण ही बच्चन जी हीरो बनने मुंबई चले गए और फिल्म जगत को एक सुपरस्टार मिला। इलाहाबाद से ही मैंने हिन्दी साहित्य में स्नातक की उपाधि लपक ली। फिर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि छीनी। पटना से बी.एड. किया और अंत में शिक्षक पात्रता की परीक्षा देकर मैं कोलकाता के सरकारी प्रतिष्ठान आसाराम नारायण साँई कॉलेज में अध्यापक बन गया। यहां आसाराम नारायण साँई कॉलेज में मुझे लेकर हिंदी साहित्य के कुल 10 अध्यापक थे, 7 कनिष्ठ अध्यापक, 2 वरिष्ठ अध्यापक और एक हमारे विभागाध्यक्ष लहरी जी। अध्यापक बनने के बाद ही मेरी बदमाशियाँ शुरू हुईं हो ऐसा नहीं है। मैं बचपन से आला दर्जे का बदमाश आदमी हूँ। दूसरों का मजाक उड़ाना मुझे बेहद पसंद है। दूसरों का मजाक उड़ाने के बाद मैं उनकी शक्लें देखता हूँ। जब मजाक उड़ने वाले का चेहरा उतर जाता है तो मेरी आत्मा को बहुत शांति मिलती है। और कहा भी गया है कि आत्मा खुश तो परमात्मा खुश।

बहरहाल मैं अपनी कहानी पर वापस लौटता हूँ। यहां आसाराम नारायण साँई कॉलेज बहुत प्रतिष्ठित और कोलकाता का जाना माना नाम था। कॉलेज का कैम्पस बहुत बड़ा था।



यहां पर हम बच्चों को पढ़ाते कम और कैंटीन में ज्यादा बैठते थे, क्योंकि सरकारी नौकरी में कम काम करना ही सफलता की कुंजी है। कैंटीन में हमारी नजर नए-नए विद्यार्थियों पर रहती और कोशिश हमारी यही रहती कि खूबसूरत बच्चे, खासकर खूबसूरत छात्राएं परीक्षा में जरूर और अच्छे नम्बरों से पास कर जाएं। ऐसे ही एक दिन कहानी के नायक, वैसे कहानी का नायक तो मैं खुद ही हूँ, पर इस कहानी के दूसरे नायक की एंट्री हमारे कैंटीन में हुई। मैं उस नौजवान को देखता ही रह गया। क्या आकर्षक व्यक्तित्व, 6 फुट 8 इंच की लंबाई। ऐसा लगता था जैसे हॉलीवुड फिल्मों का नायक साक्षात् आकर मेरे सामने खड़ा हो गया हो, एकदम ग्रीक गॉड बोले तो। उस दिन मुझे लगा कि काश मैं लड़का ना होकर लड़की होता तो उस देवता के चरणों पर प्राण न्यौछावर कर देता। आकर वह ठीक हमारे सामने बैठ गया। बातचीत में पता चला कि उसकी नियुक्ति बतौर कनिष्ठ अध्यापक हमारे ही कॉलेज में हुई है। मुझे उस दिन ईश्वर पर बड़ा क्रोध आया कि इतना सुंदर व्यक्ति और केवल कनिष्ठ अध्यापक, उसे तो भारत का प्रधानमंत्री होना चाहिए था। बातों-बातों में अशोक नाथ तिवारी से मेरी अच्छी दोस्ती हो गई। माफ कीजिएगा, मैं आपको बताना भूल गया कि उस खूबसूरत शख्स का

नाम अशोक था। उस दिन के बाद अशोक और मैं जिगरी दोस्त बन गए। मैं अपने कॉलेज के हर शख्स का मजाक उड़ाता था, पर अशोक का मजाक मैंने कभी सपने में भी नहीं उड़ाया। जब भी कॉलेज की कोई खूबसूरत लड़की या अध्यापिका किसी दूसरे लड़के से बात करती तो मेरा खून खौल उठता। मैं तुरंत उस लड़के के पास पहुंच जाता उसका मनोबल गिराने, क्योंकि मेरा ऐसा प्रबल विश्वास है कि कोई भी सुंदर लड़की केवल अशोक से सम्मोहित हो सकती है। अशोक मेरा भगवान था, मेरा परमेश्वर, मेरा खुदा, मेरा शाहरूख, मेरा सलमान, मेरा कार्ल मार्क्स, मेरा लेनिन, मेरा माओ, मेरा रजनीकांत, मेरा सचिन तेंदुलकर। असल में दोस्तों, मैं अशोक का सबसे बड़ा चमचा था।

एक दिन जून की भरी दोपहरी में अशोक ने मजाक में ही कहा कि

सोचो कि यह जून नहीं है, दिसम्बर है। ईश्वर (अशोक) साक्षी है, मैं उस रात दो कम्बल ओढ़ कर सोया था। ऐसे ही एक बार झगड़े में अशोक ने मुझे जूता चलाकर मारा था। मैं उस दिन को याद करके रोता हूँ कि मेरे प्रभु के लात मेरे शरीर पर पड़े तो सही। धीरे-धीरे मेरे और अशोक की मित्र मंडली बढ़ने लगी। हमारा 20 लोगों का गुट बन गया। उसमें कुछ मेरे अच्छे दोस्त भी बन गए थे, जैसे कि विकास, अजीत, विहान और श्रेयस। लेकिन यह मेरा स्वभाव हो गया था कि मैं अपने सबसे अच्छे दोस्तों का जमकर मजाक उड़ाता। उन्हें अपमानित करना मुझे बहुत अच्छा लगता था। मिसाल के तौर पर अगर किसी जगह मेरे चार दोस्त इकट्ठा रहते और आपस में बात करते कि किसी पार्टी में लड़कियां उन्हें देख रही थी, तो मैं वहां किसी और दोस्त का नाम लेता और कहता कि हां वह उसे देख रही होंगी। मैं अपने



दोस्तों का मनोबल तोड़ देता हूँ। उनको जलील करने में जो आनंद है वैसा आनंद तो साक्षात प्रभु दर्शन में भी नहीं है। विहान का किस्सा कुछ ऐसा ही है। हुआ कुछ यूँ कि हमारे कॉलेज की सबसे सुंदर लड़की श्रुति से विहान की बहुत अच्छी पटड़ी खाती थी। मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हुआ। मैंने एक दिन विहान को कहा “श्रुति को क्या तू अपनी बहन मानता है।” विहान ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया तो मैंने उसे छेड़ते हुए कहा “गंधे जैसी शक्ल है खुद की और चले हैं श्रुति से दोस्ती करने। वह अशोक को पसंद करती है। उसके लिए घर से टिफिन भी बना कर लाती है। बहुत अच्छी जोड़ी है दोनों की।” भाईयों क्या बताऊँ विहान का चेहरा जब उतर गया तो मुझे कितनी खुशी मिली।

कॉलेज में मेरी नियुक्ति के बाद मैंने अपने मन में दो गुटों का निर्माण किया। एक वह गुट था जिसमें मेरे सबसे नजदीकी दोस्त थे, जिन्होंने हर वक्त मेरी कोई सहायता की थी पर मैं जिन्हें व्यक्तिगत तौर पर पसंद नहीं करता था और उनका मजाक उड़ाना और उन्हें जलील करना मैं अपना फर्ज समझता था। एक गुट में ऐसे लोग थे जो कोई भी साधारण सा कपड़ा पहनकर कॉलेज में आ जाते थे। अजीत, अनिल, विकास, सुमित ऐसे ही गुट का प्रतिनिधित्व करते थे। दूसरे गुट में ऐसे लोग थे जो

अच्छे-अच्छे स्टार्लिश कपड़े पहनते थे, या तो फ्रेंच कट दाढ़ी रखते थे जो आजकल के जमाने में सुन्दरता का लक्षण माना जाता है। मैं इस गुट को बहुत पसंद करता था और मेरी कोशिश यही रहती कि ऐसे लोगों से ज्यादा से ज्यादा दोस्ती हो सके। विनोद, अशोक, राजू, तुषार और आकाश ऐसे ही लोगों में से थे। हम कॉलेज के कैम्पस में खुले सांड की तरह टहलते, कैन्टीन में पकौड़ियाँ खाते और चाय की चुस्कियों के साथ मुझे दूसरों का मजाक उड़ाना बेहद पसंद था। मेरे हिंदी विभाग में काम करने वाले वरिष्ठ अध्यापक अजीत का किस्सा कुछ ऐसा ही है। हुआ ऐसा कि अजीत हमारे ही कॉलेज में काम करने वाली सलमा को बहुत पसंद करता था। मुझे यह बर्दाश्त नहीं हुआ कि सलमा जैसी सुंदर लड़की अजीत जैसे हलकट लड़के से शादी करे। मैंने अजीत के नाम से सलमा को कई झूठे खत लिखे। सलमा उन सारे खतों को लेकर प्रिंसीपल के पास पहुंच गई और फिर अजीत को ऐसी डांट पड़ी की क्या बताऊँ। भाईयों उस दिन अजीत का दिल टूटने की खुशी में मैंने 10 किलो लड्डू भगवान को चढ़ाए। पर भाईयों और उनकी बहनों यह बात एक दिन अजीत को पता चल गई। वह मेरे पास तमतमाते हुए गुस्से में आया और कहने लगा “पोपट भाई आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया। आपको तो

मैं अपना भाई मानता था। आपने मेरे ही पीठ में छुरा घोंप दिया। मैं सलमा से सच्ची मोहब्बत करता था।” मैंने हंसते हुए अजीत को कहा “यह प्यार मोहब्बत भूल जाओ बरखुरदार। तुमने अपनी शक्ल देखी है। कहां सलमा हूर जैसी और कहां तुम गंधे की शक्ल वाले। तुम्हारा और उसका क्या मेल। मैंने तो भाई तुम्हारी इज्जत बचाई है। सोचो कि अगर तुम्हारी और सलमा की शादी कहीं हो जाती और तुम दोनों रास्ते में निकलते तो लोग तुम्हारा कितना मजाक उड़ाते। मैंने तुम्हारा मजाक उड़ने से बचाया है पगले। सलमा जैसी लड़कियाँ तुमसे ना पटेंगी बेटा। उसके लिए अशोक जैसे सुंदर लड़के की जरूरत है। कभी-कभी सोचता हूँ कि भगवान के मन में क्या चल रहा था जब उसने अशोक को बनाया। इतना सुंदर कोई हो सकता है क्या?” अजीत ने रोते हुए मुझे श्राप दिया “जाओ पोपट भाई। तुमने आज मेरा दिल तोड़ा है। एक दिन ऐसा भी आयेगा जब तुम्हारा दिल टूटेगा। भगवान तुमसे इसका बदला जरूर लेंगे।” मैं अजीत की बातों पर मन ही मन हंस दिया पर मेरी आदत में कोई तब्दीली नहीं आई। ऐसे ही 2 शख्स जिनका मजाक उड़ाना मुझे बेहद पसंद था वे थे अनिल और तेजस। अनिल तो हिन्दी विभाग में वरिष्ठ अध्यापक था और तेजस हमारे यहां का क्लर्क था। अनिल का मजाक उड़ाने का कारण

भी था क्योंकि वह मुझसे ज्यादा वेतन पाता था। अपनी इसी नफरत को मैं मजाक का जामा पहनाकर निकाल देता था। हर मौके बेमौके मैं अनिल का उपहास करता, कभी उसके दुबलेपन को लेकर तो कभी उसके चश्मे को लेकर। अनिल जब कभी क्रोध में आ जाता तो मैं उसका और अधिक मजाक उड़ाता और लोगों से कहता कि देखो—देखो बाबूसाहब को गुस्सा आ गया। मैं जब दूसरों का मजाक उड़ाता तो विनोद और राजू मेरा खूब साथ देते। अशोक भी इन सब मौकों पर मेरा मौन समर्थन करता। विनोद मेरे यहां क्लर्क था, डिग्रियां खूब थी उसके पास, पर एक नम्बर का जाहिल गंवार था। एक बार मैंने उससे यूं ही पूछ लिया कि बता तो भारत का प्रधानमंत्री कौन है? तो उसने कहा लालकृष्ण अडवाणी। यह 2015 मई की बात है। राजू हमारे विश्वविद्यालय में स्टेनोग्राफर था। रंग उसका दूध की तरह गोरा था और उसने फ्रेंच कट दाढ़ी रखी हुई थी। आजकल के जमाने में जिसे सुंदरता का लक्षण माना जाता है, वह सारी खासियतें राजू में भरी हुई थीं।

बहरहाल मैं अपने उस किस्से पर आता हूं जिससे मेरे दुश्मनों ने मेरा नाम बिना गर्दन वाला आदमी रख दिया। जैसा कि मैंने पहले भी बताया कि मैं दूसरों का मजाक खासकर उनके चेहरे के मापदंड पर उड़ाता था। तेजस, अनिल, विकास और

सुमित मेरे कॉलेज के कुछ ऐसे ही बंदे थे जिनका मैंने हर मौके पर मजाक उड़ाया था। और आखिर क्यों ना उड़ाऊं? मेरा कोई क्या बिगाड़ सकता है। ऐसे ही एक दिन अपने मित्रमंडली के साथ बैठा मैं तेजस का मजाक उड़ा रहा था। तेजस की तोंद थोड़ी निकलती जा रही थी, इसलिए मैं उसका मजाक उड़ा रहा था। इतने में ही सुमित गुस्से में तिलमिला गया और उसने मुझे दुत्कारते हुए कहा, “अबे मोटे गैंडे, कभी अपनी शक्ल देखी है आईने में? खुद की तो गर्दन नहीं है और दूसरों का मजाक उड़ाता है। खोलूं क्या तेरे नकली बालों का राज? मोटा सांड। तू लोगों से दोस्ती इसलिए करता है ताकि उनका राज जान सके। जब लोग तुझे अपना राज बता देते हैं तो तू उनकी उल्टी दूसरों के सामने जाकर करता है। तेरे पेट में तो कोई बात पचती नहीं। तू दूसरों

की शक्लों का मजाक उड़ाता है, पर तू खुद दुनिया का सबसे बदसूरत इंसान है। तू जब हंसता है तो लगता है कि कोई मेढक हंस रहा है। जमीन से 3 फुट ऊपर उठे हुए बौने। चल भाग यहां से नाटू।” यह सुनते ही मेरे सारे दुश्मन हंसने लगे। उसी दिन मेरे नामकरण बिना गर्दन वाला आदमी हो गया।

भाईयों और उनकी बहनों मेरा दूसरा किस्सा भी अनिल से ही जुड़ा है जिसने मेरी जिंदगी बदल दी। 2016 के अप्रैल की एक सुबह अनिल मेरे पास आया और अपने मोबाईल में तीन चार लड़कियों की तस्वीर दिखाकर मुझसे पूछा कि कौन सी लड़की अच्छी है? मैं उसके मोबाईल को देखता रह गया। एक से एक सुंदर लड़कियों की तस्वीर थी, जो उसके रिश्ते के लिए आई थीं। मुझसे अब रहा नहीं गया। ईर्ष्या ने मुझे चारों



तरफ से घेर लिया था। वैसे अनिल देखने में बुरा नहीं था, पर उसका चश्मा उसे बेवकूफों की श्रेणी में ला खड़ा करता था। ऊपर से उसकी तनखाह मुझसे ज्यादा थी। मैंने उसे अपमानित करने के इरादे से उसे ऊपर से नीचे तक देखा और मुंह ऐंठ कर कहा “यह रिश्ते तेरे लिए आए हैं, अबे शक्ल देखी है अपनी।” अनिल का मुंह सूख गया, मेरी आत्मा को उस समय असीम आनन्द की प्राप्ति हुई। पर अगले ही पल मैंने अपने आप को संभालते हुए अपनी बात को बदला और नकली हंसी हंसते हुए कहा “अरे यार तू तो बहुत जल्दी सीरियस हो जाता है। मैं तो मजाक कर रहा था। कोई नहीं भाई, मौज लो। सारी तस्वीरें अच्छी हैं पर तुझे कौन सी पसंद है।” अनिल ने उसमें से एक तस्वीर की तरफ हाथ रखा। क्या बताऊं दोस्तों उस समय मेरे तन बदल में आग लग गई। उसने उस लड़की की तस्वीर चुनी थी जो सबसे ज्यादा सुंदर थी। मेरे ईर्ष्या का एक और कारण भी था। अनिल और मैं दोनों कायस्थ थे। मैं इलाहाबाद का था तो वह गाजीपुर का। जैसे अमित जी और शत्रु भैय्या में अपनी जाति के वर्चस्व को लेकर लड़ाई 1973 के जमाने से चली आती है कुछ ऐसी ही हालत मेरी और अनिल की भी थी। मेरी भी उम्र शादी लायक हो चली थी, पर मेरे जैसे बांके छोरे के लिए जैसे रिश्ते आते उसे देखकर मेरे

आंसू निकल जाते। कोई लड़की तो बहुत काली होती, किसी का पेट बाहर निकला होता। पता नहीं मेरे समय में मेरे घरवालों की बुद्धि को क्या हो गया था, और यहां देखो एक से एक सुंदर लड़कियां। मेरे दिमाग ने काम करना बंद कर दिया। मैं किसी को पकड़कर रोना चाहता था। काश अशोक छुट्टी पर मुंबई नहीं आया होता। मैंने जैसे-तैसे अपने आप को संभाला और आकस्मिक छुट्टी लेकर घर आ गया। घर आकर मैं खूब रोया। फिर रोते-रोते मैंने अपने आप को आईने में देखा और देखता रह गया। उप्फफफफफफ इतना सुंदर कोई हो सकता है क्या? मैंने खुद को कहा “पोपट रो मत, तू इस सदी का सबसे महान व्यक्ति है। तुझसे शादी करने के लिए तो खुद कटरीना कैफ भी तरसेगी।” फिर मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा, यदि ऐसा हो जाए कि अनिल के बदले उस लड़की की शादी मुझसे हो जाए। इस विचार के मन में आते ही मैं नाचने लगा। मुझे आज ही अनिल को बहला फुसला कर उस लड़की का नाम जानना है और फिर जाकर उस लड़की के पिता के पैरों पर गिर जाना है और कहना है कि “डैडी जी, मुझसे अच्छा दामाद आपको नहीं मिलेगा। मैं आपकी बेटी को बहुत प्यार करूंगा, एकदम उसे रानी बनाकर रखूंगा।” मेरा मन हवाई किले बनाता जा रहा था।

दोपहर में हम सारे लोग कैंटीन में जमा हुए। चाय और पकौड़े आ चुके थे, दोस्तों की महफिल जम चुकी थी। अनिल और तेजस भी मौजूद थे। ना चाहते हुए भी अपना काम निकालने के लिए मुझे अनिल की तारीफ करनी पड़ी। “अरे अनिल भाई आज तो बहुत जंच रहे हो इन कपड़ों में। जलवे हैं भाई तुम्हारे, इसलिए तो इतने अच्छे-अच्छे रिश्ते आते हैं। वाह भाई वाह! बताओ तो भाभी जी का नाम क्या है?” मेरे इतना पूछने की देर थी कि सारे दोस्त भी पूछने लगे। विजय बोला “हां हां अनिल भाई, तुम तो छुपे रूस्तम निकले। इतनी बड़ी बात हमसे छिपाई। बताओ तो भाभी जी रहती कहां हैं। क्या नाम है उनका?” विजय के इतना पूछने की देर थी सारे दोस्त अनिल को बधाई देने लगे। अंत में अनिल ने बड़ी शालीनता से कहा “पुष्पा”। पुष्पा नाम सुनते ही मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। कितनी अच्छी जोड़ी जमेगी पोपट और पुष्पा की। अब तो मैं किसी भी तरह पुष्पा से शादी करके रहूंगा। जाकर पुष्पा के पिता के सामने कह दूंगा, “डैडी जी अनिल बहुत बड़ा शराबी है। वह जुआ भी खेलता है। यहां तक की लड़कियों से भी मिलना जुलना है उसका।” इतना सुनते ही पुष्पा के पिता मुझे गले से लगा लेंगे और पुष्पा का हाथ मेरे हाथों में दे देंगे। मैंने तो अपने और पुष्पा के होने

वाले बच्चों के नाम भी सोच लिए थे पप्पू और पिकी। अनिल से बातों-बातों में पता चला कि पुष्पा का परिवार लखनऊ का रहने वाला है और उसके पिता वहां के सम्मानित व्यक्ति हैं और प्रधानाध्यापक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं।

मैं अपनी योजना को मूर्त रूप देने में जुट गया। मैंने अपनी योजना में विनोद और राजू को भी शामिल कर लिया क्योंकि विनोद और राजू के अंदर भी शैतानियत कूट-कूट कर भरी थी। कुछ बातों को लेकर दोनों अनिल से नाराज चल रहे थे। मैंने योजना बनाई कि मैं, विनोद और राजू शुक्रवार की शाम को छुट्टी होते ही लखनऊ के लिए रवाना हो जाएंगे और पुष्पा के पिता के सामने अनिल की पोल खोलेंगे, फिर विनोद बातों-बातों में मेरी तारीफ पुष्पा के पिता से करेगा और इस तरह मैं और पुष्पा एक हो जाएंगे। मैं बेसब्री से शुक्रवार का इंतजार करने लगा। ऑफिस से ही मैं, विनोद और राजू स्टेशन के लिए निकल गए। मैंने लालकुआं एक्सप्रेस में ट्रेन की टिकटें करा रखीं थीं। हावड़ा स्टेशन पर हम लोग 7 बजे ही पहुंच गए। मुझसे अब पुष्पा से मिलने की बेताबी बर्दाश्त नहीं हो रही थी। मैं ट्रेन में था और मेरा दिल पुष्पा के पास। मैंने ऐसी में सबकी टिकट करा रखी थी। मेरी और राजू की सीट अंदर के केबिन में थी और विनोद बाहर की तरफ जहां

2 लोग साइड में बैठते हैं, वहां बैठा हुआ था। ऑफिस के कामकाज ने मेरे बदन को तोड़ दिया था, इसलिए मैं ऊपर वाली बर्थ पर सोने चला गया। रात को 10 बजे राजू ने मुझे खाना खाने के लिए उठाया। उठकर मैं मुंह हाथ धोने के लिए बाथरूम की तरफ चल पड़ा। जैसे ही मैं उस जगह से गुजरा जहां पर विनोद बैठा था, मुझे विनोद और किसी लड़की के हंसने की आवाज आई। मैं आगे बढ़ गया और फ्रेश होकर विनोद की सीट की तरफ बढ़ा। विनोद ने पर्दा खींच रखा था और अंदर से उसके और किसी लड़की के हंसने की आवाज को साफ-साफ सुना जा सकता था। मैंने बाहर ही खड़े रहकर आवाज लगाई “विनोद चलो खाना खा लेते हैं।” मेरी आवाज पर विनोद ने पर्दे को हल्का सा सरका दिया और कहा

“अरे पोपट भाई, खाना तो मैंने खा लिया।” फिर उसने पर्दे को पूरा खींचते हुए मेरा परिचय उसके साथ बैठी हुई बेहद सुंदर लड़की से कराया। “यह राधा है। वाराणसी तक जा रही है। इसके सारे रिश्तेदार तो स्लीपर में हैं, बस यही ऐसी में सफर कर रही है। खाना मैंने इसके साथ ही खा लिया।” मुझे सामने देखकर उस लड़की ने अपने हाथ को नमस्ते की मुद्रा में उठा दिया, मैंने भी मुस्कुरा कर नमस्ते की और अपने केबिन की तरफ बढ़ गया। मैं मन ही मन विनोद की कामयाबी पर खुश हो रहा था, आखिर था तो वह मेरा शागिर्द ही। एक बात तो मैं विनोद के बारे में मानता हूं कि उसमें किसी भी लड़की को वश में करने के गुण मौजूद हैं। मैंने जब खाना खाते हुए विनोद की सफलता के बारे में राजू को बताया



तो राजू भी मुस्कुरा दिया। ऐसा लग रहा था कि हमारी यात्रा अब सफल होगी। मैं फिर से आकर अपने बिस्तर पर लेट गया और सपनों में पुष्पा के सपने बसाए सो गया।

सुबह करीब 7 बजे राजू ने मुझे हिलाकर जगाया। “पोपट भाई, जल्दी उठिए। बाहर बहुत सारे लड़के विनोद को मारे जा रहे हैं। उनके हाथों में हॉकी स्टिक और धारदार चाकू भी हैं।” मैं सुनकर दंग रह गया। राजू से ही मुझे पता चला कि गाड़ी बनारस रुकी है। बिना समय गवाएं मैं बाहर की तरफ भागा। प्लेटफार्म पर जो दृश्य चल रहा था उसने मुझे अंदर तक बुरी तरह से हिला दिया। मैंने देखा कि स्टेशन पर भारी भीड़ जमा है, और करीब 12 लड़के विनोद को पीटते जा रहे हैं। उन लड़कों के हाथों में हॉकी स्टिक थी, कुछ के हाथों में धारदार चाकू भी लहरा रही थी। मुझसे अब बर्दाश्त नहीं हुआ। साहस करके मैं उनके बीच में पहुंचा और मैंने कहा “भाई इसे क्यों मार रहे हो? इसने क्या किया है?” “तू कौन है बे टंगरीले कुत्ते?” उसमें से एक लड़का बोला। मैंने उत्तर दिया “यह मेरा दोस्त है, आप लोगों को कुछ गलतफहमी हुई है।” इतना सुनने की देर थी कि उन लोगों ने मुझे पकड़ लिया और बिना कुछ समझे मुझे तीन चार तमाचे जड़ दिए। इस अचानक से बदली हुई परिस्थिति का लाभ उठाकर विनोद

भाग गया। अब स्टेशन पर मैं था और उन लोगों का झुण्ड। उन लोगों ने मुझे पहले गिरा दिया और फिर हॉकी स्टिक से मेरे ऊपर टूट पड़े। मेरी तोंद पर कितने ही हॉकी स्टिक पड़े। पहले तो मुझे थोड़ी गुदगुदी हुई, मैंने मन ही मन अपनी नानी को बहुत धन्यवाद दिया क्योंकि उनकी बदौलत ही मेरा पेट तोंद बना था और इतने सारे वार को झेल पाया था। फिर मेरे शरीर में पीड़ा उठने लगी। अंत में उनमें से एक लड़के ने धारदार चाकू निकाल कर मेरे तोंद में घुसा दिया। क्या बताऊं दोस्तों, मेरी चीख निकल गई। फिर उसमें से एक ने हॉकी स्टिक का वार मेरे सिर पर किया। मैं उस वार को नहीं सह पाया और मेरी चेतना लुप्त हो गई। उस मस्तिष्क पर पड़ी मार ने मुझे स्वप्नलोक में पहुंचा दिया। सपने में मैं देख रहा था कि मेरी शादी पुष्पा से हो गई है। हम दोनों हनीमून के लिए शिमला गए हैं। मैं इस पल को हमेशा के लिए जीना चाहता था। अचानक मैंने देखा कि अनिल मेरे सपने में आ गया और मेरे सिर पर डंडे मार कर पुष्पा को जबरदस्ती उठाकर भागने लगा। मैं नींद में ही अनिल से लड़ने लगा। पुष्पा से जुदाई की कल्पना कर मैं तड़प उठा। मैंने जोर से चीख मारी। मैं नींद से जाग चुका था। मैंने देखा मेरे आस-पास बहुत सारे अपरिचित चेहरे थे, उनकी पोशाकों से मैंने अनुमान लगाया कि मैं किसी अस्पताल में हूं। “मिस्टर पोपट लाल

कैसा महसूस कर रहे हैं आप?” मैंने देखा तो सामने एक 95 वर्ष का बूढ़ा सा व्यक्ति बैठा हुआ है। मैं समझ गया कि यह यहां का मुख्य डॉक्टर है। डॉक्टर ने अपने पोपले मुंह से अपनी बात जारी रखी “आपको बेहोश हुए 3 महीने बीत चुके हैं। मैंने फोन कर आपके परिवार वालों को इत्तला कर दी है। शाम तक आपके सारे रिश्तेदार और दोस्त आ जाएंगे।” मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे शाम का इंतजार करने लगा। शाम को सबसे पहले मेरे पास विनोद आया। उसे देख मेरी उत्सुकता बढ़ गई। साथ ही क्रोध भी आया कि आज उसी के कारण मैं इस स्थिति में पहुंचा हूं। मैंने कहा “क्यों विनोद मजा आया अपने पोपट भाई को इस तरह पिटवाकर। जब वह लड़के मुझे पीट रहे थे, तो तुम मुझे बचाने भी नहीं आए और यह तो बताओ भला तुम्हें वह लोग पीट क्यों रहे थे?” विनोद ने अपना मौन तोड़ा, “भाई साहब राधा याद है आपको। अरे वही महाराज, जो ट्रेन में मेरे साथ थी। वे सब उसी के रिश्तेदार थे। उनमें से 2 तो राधा के सगे भाई थे।” मैंने पूछा “तो यह बताइए जनाब की राधा के भाई आपको क्यों पीटने लगे?” “क्या बताऊं पोपट भाई” विनोद ने बात जारी रखी, “राधा का सारा परिवार स्लीपर में यात्रा कर रहा था, सिर्फ राधा ही एसी में थी। उस रात को राधा की नजदीकी में मैं थोड़ा बहक गया था। जब मैं और राधा

आलिंगनबद्ध थे उसी वक्त राधा का भाई आ गया, उसने हमें उस स्थिति में देख लिया। फिर उसने फोन पर ही अपने सारे रिश्तेदारों को बनारस बुला लिया, फिर आगे क्या हुआ यह तो आप जानते ही हैं।” मेरा क्रोध सातवें आसमान पर था। “तुम्हारे कारण से पुष्पा से मिलने का मेरा पूरा प्लान अधूरा रह गया। पता नहीं मेरी पुष्पा किस हाल में होगी।” मेरी इस बात को सुनते ही विनोद का मुंह सूख गया। डरते-डरते उसने कहा, “पोपट भाई आपको एक बात बतानी है। आप पहले वादा कीजिए कि आप उदास नहीं होंगे।” मैं विनोद के चेहरे को देखने लगा कि आखिर यह क्या कहना चाहता है। उसने अपनी बात जारी रखी। “पोपट भाई पुष्पा भाभी की शादी तो अनिल से हो गई।” मुझे अचानक से 440 वॉल्ट का झटका लगा। ऐसे कैसे हुआ, मैंने विनोद को पकड़ लिया। “नहीं विनोद, कह दो कि यह झूठ है। मेरे सारे सपने टूट जाएंगे। ऐसा मत कहो विनोद।” विनोद ने नजरें नीची कर कहा, “मैं आपका दिल नहीं तोड़ना चाहता था पोपट भाई। लेकिन यह बात सच है। आप 3 महीनों से बेहोश थे। पिछले महीने ही पुष्पा भाभी की शादी अनिल से हो गई। वह लोग तो आज आपके मिलने भी आने वाले हैं।” “नहीं नहीं विनोद, उन लोगों को मत आने देना। मैं अपनी पुष्पा को अनिल के साथ देख नहीं पाऊंगा।” मैं चीख पड़ा और विनोद को पकड़कर फूट

फूटकर रोने लगा। आज मुझे अजीत याद आ गया। मुझे याद आया कि कैसे सलमा से जुदाई के गम में वह भी रोया था। लगता है कि मुझे अजीत का श्राप लग गया। बुहू मेरी पुष्पा मुझसे जुदा हो गई।

शाम को मुझे देखने वाले लोगों की भीड़ जमा हो चुकी थी। मेरी मां तो मुझे छाती से लगाकर रोने लगी। पिताजी के भी आंखों से आंसू निकल आए। मेरे भाई, चचेरी बहनों से लेकर मेरे सारे विद्यार्थी भी मुझसे मिलने आए थे। और अंत में उस कमरे में अनिल के साथ पुष्पा की एंट्री हुई। क्या बताऊं दोस्तों, मुझे यह गम बर्दाश्त नहीं हुआ। पुष्पा ने हाथ जोड़कर मुझे नमस्ते की और कहा “कैसे हैं पोपट भईया। यह आपकी बहुत तारीफ करते हैं। फोन पर भी दोस्तों की बातें करते रहते थे। जब आपको चोट लगी थी तो इन्हें बहुत दुःख हुआ था। मुझे इस बात का

हमेशा मलाल रहेगा पोपट भैया कि आप हमारी शादी में नहीं आ सके।” पुष्पा के मुंह से भईय्या सुनकर मैं फूट फूटकर रोने लगा। मुझे रोते देख मेरी मां ने मेरे मुंह को अपने आंचल में छुपा लिया। फिर मेरी मां ने पुष्पा को कहा “खुश रहो बेटी मेरी कोई बेटी नहीं है। मैं आज से तुमको अपनी बेटी मानूंगी। और आज से पोपटलाल तुम्हारा भाई हुआ।” क्या बताऊं दोस्तों, वहां का सारा माहौल कितना गमगीन हो चला था। तो दोस्तों यह थी मेरी और मेरे कमीनेपन और बदमाशियों की कहानी। उस दिन के बाद मेरा भगवान पर से विश्वास उठ गया और मैं मार्क्सवादी बन गया। अपने तकिए के नीचे मैं अब पिस्तौल लेकर सोता हूं और इंतजार करता हूं कि मेरी मुलाकात भगवान से हो जाए तो इस पिस्तौल की छः की छः गोली उनके सीने में उतार दूंगा।



मटर-कचौरी

यशपाल कालरा

निजी सचिव (सलाहकार)

ए.डी.ए.आई. (ई.आर.) सचिवालय
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

उस रात जगन ने सोच लिया था कि कोरोना की महामारी उसे चपेट में ले ही लेगी। हालांकि वह लगभग स्वस्थ था ... और हाई ब्लड प्रेशर तो इस उम्र में एक आम बात है। दवा बकायदा चल रही है। टेंशन क्या है?

“ओम् अच्युताय नमः ... ओम् गोविन्दाय नमः ... ओम् अनंताय नमः ...” जगन ने नियम से महामारी के रक्षक मंत्र का जाप भी करना शुरू कर दिया था। फिर भी उसे डर था कि वह बचेगा नहीं। दुनिया भर में कोरोना से हज़ारों लोग मर रहे हैं ... बड़े, छोटे ... हर आयु के लोग दम तोड़ रहे हैं। अमीर-गरीब से इस महामारी को कोई मतलब नहीं। कोई बड़े ओहदे पर हो या दिहाड़ी कमाने वाला बेबस मजदूर ... कोरोना किसी का सगा नहीं। यानी कोई भी किसी भी क्षण इस जानलेवा रोग का शिकार हो सकता है। तो जगन इसके चंगुल में आने से कैसे बचा रह सकता है।

लॉकडाउन में तकरीबन दो महीने से घर में बंद जगन का ज्यादातर वक्त

इसी उधेड़बुन में कट रहा था। बालकनी से बाहर सपाट सन्नाटा पसरा देख लगता कि जीवन कहीं गुम हो गया है। कोई चहल-पहल नहीं ... कोई आवाजाही नहीं ...! मगर हां, जगन की सांसें चल रही थीं और एक फलांग पर बह रहे गंदे नाले की दुर्गन्ध भी महसूस कर पा रहा था। सुबह नाश्ते के बाद ब्लडप्रेशर की गोली भी खा चुका था। घबराने वाली कोई बात नहीं है। यह सोच कर जगन को तसल्ली हो गई कि फिलहाल वह ठीक है।

“अरे आप यहां हैं? उधर आपका मोबाइल बज रहा है,” सहसा निर्मला की आवाज़ से जगन थोड़ा चौंक उठा।

“क्या हुआ? क्या सोच रहे हो?” निर्मला ने फिर पूछा ...

“कुछ नहीं ... ऐसे ही ज़रा बाहर का माहौल देख रहा था,” जगन पत्नी से आंख चुरा कर मोबाइल की तरफ बढ़ा। कॉल कट चुकी थी।

“किसका फोन था?”

मैंने देखा नहीं, आप देख लो,” निर्मला कह कर किचन में चली गई।

जगन ने चैक किया। ऑफिस के खूबचंद जी का फोन था। ‘लॉक-डाउन में सारा ऑफिस बंद है, फिर खूबचंद जी को क्या काम पड़ गया!’ जगन सोच ही रहा था कि मोबाइल फिर से बजने लगा।

“हैलो ... हां खूबचंद जी, बतायें क्या हालचाल?”

“आपने कुछ सुना जगन जी ... मेहता साहब नहीं रहे ...!!” खूबचंद जी का स्वर किसी बम विस्फोट से कम भयानक नहीं था।

“ऐसे अचानक कैसे ... मतलब ...?” जगन के लिए इस पर यकीन कर पाना कठिन था। “अच्छे भले थे ... हाल ही में तो उनसे बात हुई थी!” जगन नहीं चाहता था कि मेहता जी की मौत का कारण पता चले, पर खूबचंद जी कहां रुकने वाले थे।

“कोरोना खा गया मेहता जी को। टेस्ट पॉज़िटिव आने से ही उनकी

आधी जान निकल गई। तीन-चार दिन साधारण इलाज चला। फिर अचानक सांस अटकने लगी ... अस्पताल में वेंटिलेटर नहीं मिला ... बेचारे दो दिन तक मौत से लड़ते रहे ... पर कोरोना तो कोरोना है ... जान लेकर ही माना ...!” खूबचंद जी कहते गये और प्रतिक्रिया विहीन जगन जैसे बुत बना सुनता रहा।

सब बता कर खूबचंद जी ने तो शायद दिल का बोझ हल्का कर लिया लेकिन जगन के लिए दिन काटना मुश्किल हो गया। ‘मेहता जैसे हेल्थी आदमी को भी कोरोना ने नहीं बख्शा तो जगन कब तक बचा रह सकेगा?’

देर रात तक जगन सो नहीं पाया। रह-रह कर मेहता की सूरत सामने

आ रही थी। जगन अपनी सारे दिन की दिनचर्या याद करने लगा। सुबह सात बजे जागने के बाद से घर के अंदर ही तो रहा था। निर्मला ने दो बार काढ़ा दिया तो बगैर नानुकुर किए चुपचाप गटक गया था। हाँ वह बालकनी में जरूर गया था पर मास्क तो पहना था। कई बार वॉशबेसिन पर हाथ भी धो आया। निर्मला ने मज़ाक में कहा था, “देखना कहीं बार-बार साबुन रगड़ने से हाथ गोरे न हो जायें ...।”

जगन अभी तक नहीं समझ पाया कि इतनी दहशत भरे माहौल के बावजूद निर्मला को क्यों कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। वह पहले की तरह ही अपने काम में लगी रहती थी। घड़ी की सुइयों और उसकी कार्यशैली में ग़ज़ब की जुगलबंदी थी। तभी शायद

शादी के पैंतीस साल निकलते पता नहीं चला था। आज दोनों बेटे, बहुएं और पोते-पोती अपने-अपने घरों में निश्चित थे तो निर्मला भी बेफिक्र थी। जगन की नौकरी का आखिरी साल मज़े से गुज़र रहा था कि अचानक कोरोना वायरस ने सब गुड़गोबर कर दिया।

पति या पत्नी, अगर एक भी कोरोना से संक्रमित हो गया तो दूसरा भी नहीं बच पायेगा। जगन यह सब सोचना नहीं चाहता था पर अजीबो-गरीब कल्पनाएं जब-तब उसके मस्तिष्क को जकड़े रहतीं थीं। मान लो दुर्भाग्य की मार ऐसी पड़े कि दोनों ही कोरोना पॉजिटिव निकल आयें। सोचकर ही जगन के पसीने छूटने लगे। इन दिनों उपचार की घाल-मेल व्यवस्था के चलते एक ही अस्पताल में साथ-साथ दोनों का इलाज हो पाने की कतई उम्मीद न थी। जगन को लगा कि वह कुछ ज्यादा ही सोच रहा है। उसने इन बेहूदा बातों से ध्यान हटाने के लिए करवट बदली ... न चाहते हुए भी आंखें खुल गईं ... या शायद बाहर से आ रही कुछ आवाज़ों ने जगन को चौंका दिया था।

पहले जगन को लगा यह उसका वहम है ... पर आवाज़ें कुछ अजीब सी



थीं; जैसे बाहर कुछ घट रहा हो। कोरोना लॉकडाउन में तो दिन में भी कोई बाहर नहीं निकलता फिर आधी रात के वक्त कौन हो सकता है और वह भी कर्पूर्यु में!! अब तक जगन की नींद उचट गई थी। कमरे में अंधेरा था और निर्मला गहरी नींद में थी। तभी बाहर से कुछ स्पष्ट शब्द सुनाई दिये, “बस इतना गहरा काफी है। हो जाएगा ...!”

जगन चुपचाप उठा और दबे पांव बालकनी में आ गया। देखा कि पीछे वाले कब्रिस्तान के अहाते में कुछ लोग जमा थे। चार-पांच मोबाइलों की फ्लैश लाइट में एक कब्र खोदी जा रही थी। जगन अवाक् रह गया।

‘यह क्या माजरा है? क्या चल रहा है रात के अंधेरे में? किसे दफनाया जा रहा है? हो न हो कोरोना से मरा होगा

...! मगर दिन में क्यों नहीं दफनाया? क्या प्रशासन से छिपा कर ऐसा कर रहे हैं? शायद यही बात है, क्योंकि बताने से घर के सभी जनों को सरकार घेर लेगी। गली और मौहल्ला तक सील कर दिया जाएगा। एक बार कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आने की देर है, फिर पता भी नहीं चलने का कि बंदा कहाँ गया। खूबचंद जी ने मेहता साहब के बारे में यही तो बताया था ... मरने के बाद उनका शव किसी मुर्दाखाने में रखा है इसके परिवार वालों को कई दिन तक पता नहीं चल सका। कोरोना का मरा तो भइया किसी लावारिस से भी गया गुजरा हो जाता है। जगन यह सब सोच ही रहा था कि उधर कब्र मिट्टी से ढकी जा चुकी थी। फ्लैश लाइटें बंद हो गईं और लोग अपनी अपनी राह पर

सरकते दिखाई दिए।

कोरोना वायरस उसके कितने पास था। देर-सवेर जगन लपेटे में आएगा ही। सोचते हुए जगन बिस्तर पर आकर लेट गया।

“वॉशरूम गये थे...?” निर्मला की उनींदी आवाज़ और हाथ के स्पर्श से जगन सिहर उठा।

‘हूँ! जगन ने कहने में विचार-शून्यता व्यक्त करने की कोशिश की। ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि जगन रात में उठा हो और निर्मला को पता न चला हो ... जबकि जगन को निर्मला के रात में उठने का कभी आभास तक नहीं हुआ। गृहस्थ स्त्री की कुशाग्र सतर्कता का रहस्य जगन को कभी समझ नहीं आ सका था।

अगली सुबह नहा कर तौलिया सूखने के लिए डालने जगन फिर बालकनी में आया। कब्रिस्तान के अहाते का नीरव वातावरण देख ऐसा लगा जैसे पिछली रात वहाँ कुछ हुआ ही न हो। रात में घटी घटना का भय सुबह के उजाले में कितना कम हो जाता है।

“चाय तैयार है ...,” निर्मला ने रोज की तरह पुकारा।

थोड़ी देर में जगन चाय के लिए आया तो देखा निर्मला के धुले बाल अभी सूखे नहीं थे। बालों से आती शिकाकाई की सुगंध और निर्मला की



मासूम गुनगुनाहट से घर का वातावरण खिल उठा था। शादी के बाद से ही जगन इस खुशबू का मुरीद था। बेशक अब निर्मला के बाल उतने घने नहीं रहे थे, फिर भी उनका आकर्षण कम नहीं हुआ था। कई बार निर्मला के सानिध्य में ऐसा सुखकर स्पंदन महसूस होता था कि जगन तनावमुक्त हो जाता।

“क्या सोच रहे हो?” निर्मला ने जगन का हाथ हल्के से थपथपाया, “चाय ठंडी हो रही है।”

“नहीं ... कुछ नहीं ...” कह कर जगन ने चाय का घूंट भरा ... चाय की सुवास कुछ अलग सी महसूस हुई।

“चाय का ज़ायका कुछ बदला हुआ है...?”

“हां, दालचीनी और तुलसी पत्ता डाला है। कहते हैं इम्यूनिटी के लिए अच्छा होता है ...।”

“क्या इससे कोरोना का इन्फ़ेक्शन नहीं होगा ...?” जगन न चाहते हुए भी कह गया।

“अरे आप क्यों इससे इतना डरे-सहमे हुए हैं,” निर्मला पति की आंखों में देख कर बोली, “देखो ... हमारा फर्ज है अपनी सेहत का ध्यान रखना। हम जो कर सकते हैं करना चाहिए। आगे ईश्वर की मर्जी।” निर्मला की सहजता में छिपे तत्व को

जगन सहज ही स्वीकार नहीं कर पा रहा था, फिर भी महामारी के भयावह काल में पत्नी के शब्द राहत देने वाले थे।

“नाश्ते में क्या बनाऊं ...?” निर्मला ने पूछा ...।

“कुछ भी ... जो तुम्हारा मन करे ...।”

“मटर-कचौरी बनाऊं ...?”

निर्मला जानती थी कि जगन को मटर-कचौरी बहुत पसंद है। वह मुस्कराते हुए चाय के खाली कप उठा कर रसोई में चली गई। मटर-कचौरी बनाने का मतलब था कि पति-पत्नी दोनों का मन अच्छा है।

तभी मोबाइल पर खूबचंद जी का व्हाट्सएप मैसेज आया। जगन डर गया कि कहीं कोरोना से किसी और की मृत्यु का अशुभ समाचार तो नहीं दिया खूबचंद जी ने। लेकिन मैसेज में उन्होंने एक डॉक्टर की वीडियो

क्लिप फॉरवर्ड की थी, जिसमें डॉक्टर साहब बता रहे थे ...

“इसमें कोई शक नहीं कि कोरोना वायरस खतरनाक है, लेकिन भारतीयों पर इसका प्रभाव दुनिया के और देशों के मुकाबले काफी कम पड़ेगा। कारण यह है कि भारतीयों की इम्यूनिटी कुदरती तौर पर औरों की तुलना में बेहतर है। इसलिए कोरोना से डरें नहीं ... सावधानियों का पालन करते रहें, आपको कुछ नहीं होगा ...।”

जगन ने यह वीडियो क्लिप दो-तीन बार देखी। धीरे-धीरे उसे महसूस हुआ कि वह खुल कर सांस ले रहा है।

उधर रसोई में निर्मला ने मटर-कचौरी को खोलते हुए तेल में डाला तो तलने की सुगंध से सारा घर महक उठा ... यह सुगंध जगन को बहुत प्रिय थी।



पशु और मनुष्य

आशुतोष सिंह
डी.ई.ओ./जी.ई.-09
कार्यालय म.ले. (ले. व ह.)
कर्नाटक, बैंगलूर

उलझा था मैं एक दिन जंगल में। फंस गया अनेकों पशु-पक्षियों के दलदल में। सब लगे मुझे सताने और देने लगे इंसान होने के ताने। मैं बोला “इन्सान की औकात का तुम्हें ज्ञान कहां है। तुम में से कोई भी मानव सा विद्वान कहां है।” ये छोटे से जीव-जन्तु इन्हें क्या पता विज्ञान का या मनुष्य के बुद्धिमान का।

“अरे! धरती, जल, आकाश आदि पर है अपनी दावेदारी। चांद पर मेरे पांव पड़ चुके अब है मंगल की तैयारी।” पशु बोले, “धरा को रखकर बारूद के ढेर पर तू देख रहा मंगल को। जिस पर है बैठा खुद तू काट रहा उसी डाल को। ये महामारी और प्रदूषण तूने ही तो फैलाया और स्वर्ग सी धरती को शमशान बनाया। मैं बोला, “शमशान नहीं, धरती का किया है नव निर्माण। बनाये हमने रेल, सड़क महल, पुल और वायुयान। टी.वी., रेडियो, मोबाइल, कम्प्यूटर को भी हम ही लाये।”

इस पर पशु बोले, “वाह! इंसान वाह!

बाहरी दुनिया को तूने रंगकर खूब सजाया है। लेकिन क्या दूषित निज मन को भी शुद्ध बनाया है? रट तो डाला धर्मशास्त्रों को पर क्या कुछ भी समझ पाया है।”

सुनकर उनकी बातों को गुस्से में मैं बोला, “अच्छा, कुछ हमको भी समझाओ। जरा अपना जीवन-मूल्य बताओ।” वे बोले, “हम में से कोई रिश्वतखोर नहीं है। ठग-बदमाश चोर नहीं है। कोई बेईमान नहीं, निंदा-चुगली खोर नहीं।”

“हम में दहेज का नाम नहीं है, जुए या नशे का काम नहीं है।”

मैंने कहा, “जरा सिखलाओ कैसे हम अपना गुण तुम्हारे।” वे बोले, “कुत्ते से सीखो वफादारी, हाथी से उठाना बोझ भारी, कोयल से मधुरवाणी, बकरी से झुककर पीना पानी। बगुले जैसा ध्यान लगाना, कोयल जैसी तान लगाना। योग और आसन अपनाओ। रोग

अपने दूर भगाओ।”

मैंने बड़े आश्चर्य से पूछा “तो क्या इन्सान होना है इतना बुरा?” वे बोले, “नहीं, परन्तु उसका अभिमान करना है बुरा। देह मिली है तो हैवान जैसे न बनो, खून की होली ना खेलो। जियो और जीने दो सबको, रहो और रहने दो सबको। प्यार से सबको अपनाओ, इस धरती को स्वर्ग बनाओ।”

अन्ततः मेरा स्वप्न टूटा और अहंकार छूटा। पशु और मनुष्य का अंतर स्पष्ट हो गया और मनुष्य होने का अहंकार नष्ट हो गया। बोल उठा मैं, “सब जीवों में वास प्रभु का, सबका हम सत्कार करें, मानव हैं तो मानव जैसा क्यों ना हम व्यवहार करें।”



मोबाइल



कुमार शर्मा 'अनिल'
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

घर में सभी के पास मोबाइल थे परन्तु मास्टरजी इसे पैसे की बरबादी के साथ-साथ समय का अपव्यय भी मानते थे। दोनों बेटे-बहू साथ ही रहते थे और उनका प्रत्यक्ष संवाद ही इतना कम था कि कभी मोबाइल की जरूरत ही महसूस नहीं हुई। पोता-पोती दिन भर मोबाइल पर एस.एम.एस. में या फोन पर व्यस्त रहते और उनकी अपनी दुनिया थी जिसमें अपने दादाजी के लिए कोई स्थान न था। पत्नी को मोबाइल चलाना आता नहीं था जबकि बाहर की दुनिया से मास्टरजी का कोई बहुत ज्यादा संपर्क नहीं था। सेवानिवृत्ति के पश्चात तो वह बाहरी दुनिया से लगभग अलग-थलग ही पड़ गये थे। उन्हें लिखने और पढ़ने का शौक था और वे इसी में व्यस्त रहते। घर में जब वे अन्य सदस्यों को मोबाइल पर घंटो व्यस्त देखते तो उन्हें उनसे चिढ़ होती थी। पोते-पोती को तो वे कई बार इस बात के लिए डांट भी देते।

एक बार प्रतिष्ठित पत्रिका में उनकी एक विचारोत्तेजक कहानी छपी तो प्रतिक्रिया में एक युवा महिला लेखिका का प्रशंसात्मक पत्र मिला। कहानी की प्रशंसा के साथ उसने लेखक के बारे में

और अधिक जानने की इच्छा प्रकट करते हुए उनका मोबाइल नम्बर भी मांगा था। उन्होंने प्रतिउत्तर में अपना परिचय विस्तार से भेजते हुए उसकी मांग के अनुरूप अपनी पोती ईशा का मोबाइल नम्बर इस आशय से भेज दिया कि उस महिला प्रशंसक को यदि कुछ पूछना हुआ तो वह मोबाइल पर पूछ लेगी। ईशा के फोन पर ही पहले भी वे कई बार अपने रिश्तेदारों से बात कर लेते थे। साथ ही कहीं न कहीं उनके मन में अपनी इस महिला प्रशंसक के बारे में जल्दी से जल्दी जानने की इच्छा भी थी क्योंकि डाक व्यवस्था न तो नियमित थी और न ही सुचारु। इससे पहले भी उनके कई पत्र-पत्रिकाएं गुम हो चुके थे।

तीन दिन बाद ही उस महिला प्रशंसक का फोन आ गया। बहुत मधुर आवाज में उसने अपना परिचय दिया और एक बार फिर उनके लेखन की प्रशंसा करते हुए उनसे लेखन में मार्गदर्शन पाने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने जब सहर्ष उसे इसकी अनुमति दे दी तो यह सिलसिला चल निकला। ईशा के मोबाइल पर दिन भर कई एस.एम.एस. के साथ वह दो तीन बार उन्हें फोन भी करती। उसके

एस.एम.एस. उत्साह और जीवंतता से भरे होते। मास्टरजी के बुझे से जीवन में इस मित्रता के बाद एक नई आशा का संचार हो चुका था। कुछ दिनों के बाद ही उन्हें लगा कि उनका खुद का मोबाइल होना चाहिये। कारण यह भी था कि जब ईशा घंटों मोबाइल पर व्यस्त होती तो उन्हें लगता कि उनकी 'कॉल' व्यस्त जा रही होगी। उन्हें यह भी आशंका होती थी कि उनकी लम्बी बातचीत से चिढ़कर कहीं ईशा उस महिला का फोन न काट देती हो।

अगले दिन ही वे एक नया मोबाइल ले आये। मन लगाकर ईशा से उसमें उपलब्ध सभी सुविधाओं का उपयोग करना सीखा। अपनी उस युवा महिला प्रशंसक को अपना नया नम्बर भेजने के बाद जब अगले एक हफ्ते तक उन्हें एक बार भी उनका फोन नहीं आया और न ही कोई एस.एम.एस. तो आठवें दिन उन्होंने ही उसको एस.एम.एस. किया। तत्काल जवाब आया प्लीज, नो एस.एम.एस एन्ड कॉल। आय एम नॉट इंटरिस्टेड।

संभवतः उसके पति को अपनी पत्नी का यूँ किसी अपरिचित से बात करना नागवार गुजरा था।

वीरान सफर



सुश्री नीतू सिंह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

मेरे रास्ते वीरान हैं
रहबर कोई नहीं
मैं और मेरे दिल के बीच
दीवार—ए—दर कोई नहीं

अपना तो सफर कट जाएगा
कैसे भी दोस्तो

मेरा हमसफर कोई नहीं
सोचती हूँ चलती जाऊँ
बस यूँ ही

मेरी डगर कोई नहीं

है कोई साथ हर पल
जाने किसका है वजूद
नजरें उठाकर देखती,

सामने नजर
आता कोई नहीं

शहर का जब जायजा
लिया हमने

जल गए कहीं शम्मे—वफा
ऐसा घर कोई नहीं

मुहब्बत का है मरीज कोई
कहीं नफरत का मरीज है
मिल जाए जिगर बेदर्द गर
ऐसा जिगर कोई नहीं

गम नहीं करना “नीतू”
तुझ पर इनका असर कोई नहीं।

कान की व्यथा



अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

मैं हूँ कान ... हम दो हैं ... जुड़वा भाई ...
लेकिन हमारी किस्मत ही ऐसी है
कि आज तक हमने अपने दूसरे
भाई को देखा तक नहीं
पता नहीं ... कौन से श्राप के कारण
हमें विपरीत दिशा में चिपका कर
भेजा गया है
दुःख सिर्फ इतना ही नहीं है ...
हमें जिम्मेदारी सिर्फ सुनने की मिली है ...
गालियाँ हों या तालियाँ
अच्छा हो या बुरा ...
सब हम ही सुनते हैं ...
धीरे धीरे हमें
'खूँटी' समझा जाने लगा ...
चश्मे का बोझ डाला गया,
फ्रेम की डण्डी को
हम पर फँसाया गया ...
ये दर्द सहा हमने ...

क्यों भाई ...???
"चश्मे का मामला आंखों का है"
"तो हमें बीच में घसीटने का"
"मतलब क्या है ...???"
हम बोलते नहीं तो क्या हुआ,
सुनते तो हैं ना ...
हर जगह बोलने वाले ही क्यों
आगे रहे हैं ...???
बचपन में पढ़ाई में किसी का दिमाग
काम न करे तो
"मास्टर जी हमें ही मरोड़ते हैं ..."
जवान हुए तो
आदमी, औरतें सबने सुन्दर सुन्दर लौंग,
बालियाँ, झुमके आदि बनवाकर
हम पर ही लटकाये ...!!!
"छेदन हमारा हुआ"
"और तारीफ चेहरे की...!"

और तो और श्रृंगार देखो ...

आँखों के लिए काजल ...

मुँह के लिए क्रीमें ...

होठों के लिए लिपस्टिक ...

हमने आज तक कुछ

माँगा हो तो बताओ ...

कभी किसी कवि ने, शायर ने

कान की कोई तारीफ की हो तो बताओ ...

इनकी नजर में आँखें, होंठ, गाल,

ये ही सब कुछ है ...

“हम तो जैसे किसी मृत्युभोज की”

“बची खुची दो पूड़ियाँ हैं ...”

जिसे उठाकर चेहरे के साइड में

चिपका दिया बस ...

और तो और,

कई बार “बालों के चक्कर में”

“हम पर भी कट लगते हैं ...”

हमें डिटॉल लगाकर

पुचकार दिया जाता है ...

बातें बहुत सी हैं, किससे कहें ...???

कहते हैं दर्द बाँटने से

मन हल्का हो जाता है

आँख से कहूँ तो

वे आँसू टपकाती है ...

नाक से कहूँ तो

वो बहाता है ...

मुँह से कहूँ तो

वो हाय हाय करके

रोता है ...

और बताऊँ ...

“पण्डित जी का जनेऊ”

“टेलर मास्टर की पेंसिल”

“मिस्त्री की बची हुई

गुटखे की पुड़िया”

सब हम ही संभालते हैं ...

और आजकल ये नया नया “मास्क”

का झंझट भी हम ही झेल रहे हैं ...

कान नहीं जैसे पक्की खूँटियाँ हैं हम ...

और भी कुछ टाँगना, लटकाना हो

तो ले आओ ...

तैयार हैं हम दोनों भाई ... ।।



माँ



सुश्री रश्मि सानन
निजी सचिव
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

सूरज की रौशनी तुमसे
चन्दा की चांदनी तुमसे
हर आंगन हर गलियारे में
मुस्काए ज़िन्दगी तुमसे
थक हार के जब मैं घर आऊँ
तू बाहों में भर लेती है
मेरी हर एक निराशा को
तू छू मंतर कर देती है
फूलों में सुगंध है तुमसे
कलियों पर रंगत तुमसे
माँ फौलादी चट्टानें भी
पल में हैं पिघलती तुमसे
सब ऋतुओं का तू संगम है
सर्दी गर्मी वर्षा है
भण्डार तेरे हैं भरे-भरे
माँ तू ही अन्नपूर्णा है
चारों दिशाएं हैं तुमसे
बहती हवाएं हैं तुमसे

माँ जब तू आंगन में डोले
तब डोले हर खुशी तुमसे
तू मेरे मन के भावों को
आसानी से पढ़ लेती है
मेरी जिज्ञासा और प्रश्नों के
हंस कर उत्तर देती है
ये जग जब मुझे डराए
तेरा आंचल मुझे छिपाए
जब अंधियारा घेरे मुझको
होती है रौशनी तुमसे
मन्दिर भी तू मस्जिद भी तू
माँ तू ही द्वारकामाई
गीता भी तू रामायण भी तू
तुझमें है सारी खुदाई
तेरे चरणों को देखूं
तो खुद-ब-खुद झुक जाऊं
हर बच्चे ने सबसे पहले
सीखी है बन्दगी तुमसे।

अकेलापन – एक अहसास

सुश्री रति कु. लहेरी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
तथा पदेन सदस्य ले.प. बोर्ड,
चेन्नै

ऐ चाँद मैं आज समझी ...

तू रात में ही क्यों आता है।

तू भी अकेला है मेरी तरह।
तू भी बिछड़ गया है अपनों से,
पर तू इस बात को छिपाता है,
आज समझी ...

तू रात में ही क्यों आता है।

सब सो गए हैं, तू क्यों जगता है,
नींद नहीं आती, बेचैन मेरी तरह है,
तपे आग सा, पर ओढ़े है लिहाफ सदर् का,
खुद जलता है, पर रोशनी बिखराता है,
आज समझी ...

तू रात में ही क्यों आता है।

ये अकेलापन कल था,
पर कल नहीं रहेगा,
तू घटता है आज, पर कल पूर्ण होगा,
मैं भी तन्हा हूँ युगों से,
ये बात केवल तू ही जान पाता है,
आज समझी ...

तू रात में ही क्यों आता है।

मैं (स्वार्थ)

कमल कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)— II
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

है हर किसी को मैं की चिन्ता।
मैं ने ही सबको मजबूर किया।
अपनों को भी दूर किया।।

मैं का मोह है बड़ा निराला
ममत्व, प्रेम को कुचल है डाला।।

जीवन की इस आपाधापी और अविश्वास ने।

मैं को है बलवान किया।
मन के अंतर्द्वंदों में है जिसने।
मैं को जीत का वरदान दिया।।

प्रेम से भरे रिश्तों के सागर में।
मैं ने ही जहर है घोल दिया।

चेहरों की इस भीड़ में
अपने को अकेला छोड़ दिया।।

बीता था जिस घर में बचपन।
होने लगी अब हर रोज की अनबन।
मैं ने ही उस घर को भी है तोड़ दिया।।

बढ़ते थे कदम जिन हाथों के सहारे।
अब उन हाथों को ही बेसहारा छोड़ दिया।

सोता था जिनकी लोरिया सुनकर।
मैं ने उनसे भी है मुँह मोड़ लिया।।

छोड़ा जिस मैं की खातिर इतना।
आखिर मैं भी उसको छोड़ चला।।

भजन संध्या



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (सेवानिवृत्त)
भूखण्ड 191 (एफ-2) वैशाली
सेक्टर-4, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

भूल गया हूं मैं अब तो सब कुछ
उपकार तेरा ना भूला।

याद नहीं है मुझ को अब कुछ
इक नाम तेरा ना भूला।

बैठा हुआ हूं मैं आज जमीं पर
नाम तेरा लेने को
कुछ भी नहीं है प्रभु पास में मेरे
अब तुमको देने को।

भूल गया हूं मैं अब तो सब कुछ
उपकार तेरा ना भूला।

याद नहीं है मुझ को अब कुछ
इक नाम तेरा ना भूला।

भज लेता हूं जप लेता हूं तप लेता हूं
नाम तेरा ले ले कर।

ढोलक चिमटा खड़ताल है बोलते
ताल यही दे दे कर।

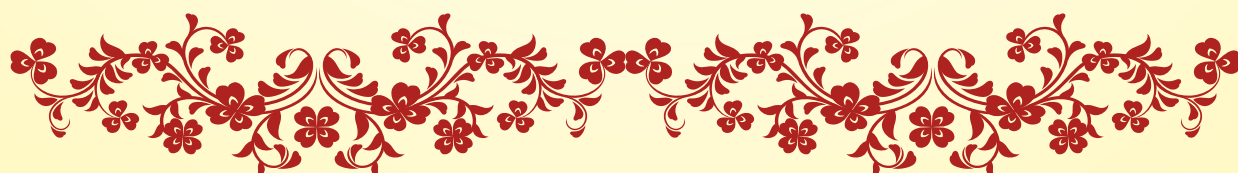
भूल गया हूं मैं अब तो सब कुछ
उपकार तेरा ना भूला।

याद नहीं है मुझ को अब कुछ
इक नाम तेरा ना भूला।

ना ही मुझ में कोई शक्ति बची है
ना ही है मोह माया
सिर्फ बची है तो ... यही बची है
प्रभु प्रदत्त यह काया।

भूल गया हूं मैं अब तो सब कुछ
उपकार तेरा ना भूला।

याद नहीं है मुझ को अब कुछ
इक नाम तेरा ना भूला।



ग़ज़ल



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

उस नगर में कुछ दिनों तक प्यार की बरसात थी।
धूप ठंडी थी वहां की छांव की करामात थी॥

गांव की पंगडंडियां जाती थीं वस्ल-ए-यार को।
प्यार की शहनाइयों में बस दिलों की बात थी॥

गुल खिले रहते थे दिनभर तितलियां मदमस्त थीं।
सांझ को झुरमुट में दिलकश जुगनुओं की घात थी॥

कह नहीं पाते थे दिल की बात दिल के सामने।
थीं लबों पर शोखियां पर आंख में दरखास्त थी॥

फूल खिलते जब सनम के मखमली रुखसार पर।
हर गुलिस्तां की कली को मात की सौगात थी॥

जुल्फ के साए में रहता था जो मुखड़ा धूप सा।
शायरों से जब मिला 'मीरा' ग़ज़ल की रात थी॥

उर्मिला का विरह

कुमार भास्कर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या. प्रधान निदेशक वाणिज्य लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखा परीक्षा बोर्ड
बेंगलूर

एक थी स्वयं भगवती का रूप,
दूजी साधारण सी नारी थी।
एक पत्नी धर्म निभाने निकली,
दूजी को प्रियतम वचन निभानी थी।
एक को सानिध्य प्राप्त था स्वयं भगवान का,
दूजी विरह वेदना की मारी थी।
एक हर रंगों में रंगी पिया के,
दूजी अश्रु भी बहा न पायी थी।
भ्राता की सेवा में कैसे जगे रात-दिन?
अनुज की ये दुविधा भारी थी।
सोये नहीं कई रातें,
तब निद्रा देवी स्वयं प्रकट हो आई थी,
ले सके कोई नींद बदले में,
ये उपाय सुझायी थी।
स्वामी के नींद को ले अपने आँखों में,
चौदह वर्ष सोयी वो राजकुमारी थी।
एक की त्याग को सबने माना,
दूजी के बलिदान को किसी ने न जाना।

एक को माना सतीत्व का प्रतीक,
दूजी का सतीत्व क्या बेमानी थी?
पात्र एक से बढ़के एक रामायण के,
खो गयी इनमें कहीं वो बेचारी थी।
एक थी सिया राम की,
दूजी 'उर्मिला' लक्ष्मण प्यारी थी।
राजमहल के सुखों को तज,
सन्यासिन बन कुटिया में जीती थी।
वियोग में तड़पना रात-दिन,
उस अभागन की नियति थी।
विरह की अग्नि में इस कदर जली वो,
स्वयं आरती की ज्योति बन गयी ज्यों।
हर पल रहती स्वामी के ध्यान में लीन,
खुद ही को भूल बैठी थी वह दीन।
सिया-राम की जयजयकार तो सदा रहेगी,
क्या उर्मिल-सौमित्री का त्याग व्यर्थ जावेगी?
जब-जब करें हम रामायण का ध्यान,
तब-तब याद रखें उर्मिला का परम बलिदान।

माँ



केदार नाथ प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
जय महावीर कालोनी, संदलपुर
पी.ओ. महेन्द्र, पटना-800006

माँ तुम्हारे नेह की छाया तले
स्वर्ग की आभा चमत्कृत हो रही है
चांदनी का दूधिया सौन्दर्य
बांटता है रेशमी आलोक उर्मिल
तुम लुटाती नेह का अमृत कलश
वारुणी की धार से नहला रही हो
तुम दहकते ग्रीष्म को करती
समर्पित प्यार सा वह सांवला —
बादल गगन का
लोग तुमको कह रहे हैं वेद
की पावन ऋचा
तुम तिमिर के बीच जलती
एक उन्मन दीपिका हो
हर अपरिचित मार्ग पर
तुम सूचिका गंतव्य की हो
आंसूओं से तर नयन पर
गुदगुदाहट प्यार की हो
छंद हो तुम प्रार्थना की,
वंदना, आराधना की।

काकली के गीत की तुम हो —
मधुर अभिव्यंजना,
तुम बसंती फूल हो, तुम
सूर्य की अरुणिम किरण हो।
माँ! तुम्हारे चरण-रज में
तीर्थ का चन्दन लगा है
और उसी में अगुरु का
सौरभ समाहित
प्रेरणा कर्पूर-गुंफित,
यज्ञ की समिधा तुम्हीं हो,
ज्योति हो तुम सूरदासों के नयन की,
प्रणाम की भाषा तुम्हीं,
आशीष की कविता मनोरम
हाथ में ले हाथ तेरा पार
कर लेंगे समुंदर की लहर को
उड़ चलेंगे व्योम का संधान करने
बांध कर हम देह में —
आशीष के कूंडल कवच को।

काश कोई ऐसा हो

सुश्री ज्योति यादव
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
कार्या. महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड
चेन्नै

काश कोई ऐसा हो,
जिसे अपना कहा जाए,
जिसके साथ में रहा जाए,
साथ में हँसा जाए,
बिना जिसके न मुस्कुराया जाए

काश कोई ऐसा हो,
जिसे दिल में बसाया जाए,
जिसे हर राज़ बताया जाए,
खुशियों को बढ़ाया जाए,
साथ जिसके हर गम को भुलाया जाए ...

काश कोई ऐसा हो,
जिस पर खुद से भी ज्यादा विश्वास किया जाए,
जिसके बिना जीने की कल्पना भी न की जाए,

जिसके साथ में रहने को दिल चाहे,
जिसके साथ गुज़रा हर लम्हा याद आए ...

काश कोई ऐसा हो,
जिससे प्यार किया जाए,
जिसके लिए दिल को धड़काया जाए,
हर वक्त बात करने को दिल चाहे,
जिसके साथ हर कदम मिलाकर चला जाए ...

काश कोई ऐसा हो,
जो मेरे दिल की बात समझ पाए,
जो बिना कुछ कहे आँखों से ही सब पढ़ जाए,
जिसे देखते ही चेहरे पर मुस्कान आ जाए
जिसके साथ पूरी जिंदगी गुजारी जाए ...

ऐसा कोई तो होगा, कहीं तो होगा,
जो मेरे इन सब सपनों को पूरा कर पाए ...



साड़ी की महिमा

सुश्री तृप्ता
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

साड़ी कहने को एक परिधान है,
मगर सदियों से यही हमारी पहचान है
ये गुरुर रही द्रौपदी की,
ये सुंदरता रही सीता की
ये मान है भारत का,
ये सम्मान है संस्कृति का
इसमें गहनों की खूबसूरती है,
इसमें परम्पराओं की मजबूती है
ये धरोहर है हमारे पूर्वजों की।
ये छः गज सब पर भारी है,
सबकी पसंद यही दावेदारी है।
हर श्रृंगार अधूरा है,
इसके बिना हमारा देश अधूरा है।
इसमें मान्यता, वचन संस्कार दिखते हैं
अजर, अमर, बलिदान दिखते हैं।

देवता भी इसके सौन्दर्य पर लज्जाए हैं,
भारत में तो इसने सम्मान पाए हैं।
ये साड़ी है — हर रंग को सजाती है।

फूल-पत्ती, आड़ी-तिरछी कितने रूप में भाती है,
नन्ही बेटी भी पल्लू बनाती है,
देख दर्पण में खुद को थोड़ा लज्जाती है
कहने को बातें होंगी,
पर पुरुषों को भी यही भाती है
महावर सिंदूर पर जब साड़ी रंग दिखाती है।
खोस कमर पर पल्लू जब बीवी लड़ने आती है,
देख सौन्दर्य सौम्यता का पति की
मंद मुस्कराहट बिखर जाती है
ये साड़ी है ... त्यौहार और पुरस्कार में
औरत की गरिमा बन जाती है।



मुख्यालय में



हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार, मुख्यालय
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में राजभाषा विभाग द्वारा तय प्रेरणा व प्रोत्साहन की नीति के अनुसार निर्धारित कार्यक्रमानुसार राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य प्रगति पर है। इस विभाग के मुख्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा संकल्प, 1968 तथा राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) के अनुपालन में राजभाषा हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के लिए तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए परिचालित वार्षिक कार्यक्रमों के दिशानिर्देशों के अनुसार कार्यान्वयन के लिए कुछ ठोस उपाय किए हैं। वार्षिक कार्यक्रमों के अंतर्गत विचारणीय बिन्दुओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा अथवा हिन्दी मास सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में मनाया जाता है। मुख्यालय में मनाये गये हिन्दी पखवाड़ा की संक्षिप्त झलक 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के स्तंभ "मुख्यालय में" के अंतर्गत पाठकों के लिए प्रस्तुत की जाती है। हमारे

विभाग के मुखिया माननीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय तथा अन्य शीर्षस्थ अधिकारियों का प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्रतिवर्ष हमें लक्ष्यानुसार हिन्दी में कार्य करने को उत्साहित करता है।

मुख्यालय के ऑडिटोरियम हाल में दिनांक 14 सितम्बर, 2020 को हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ समारोहपूर्वक किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 11.30 बजे मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय श्री गिरीश चंद्र मुर्मू द्वारा किया गया। ऑडिटोरियम हॉल की घड़ी ने जैसे ही 11.30 बजने का संकेत दिया तभी प्रधान निदेशक (राजभाषा) की अगुवाई में समारोह के मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के आगमन पर समारोह में उपस्थित अधिकारियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया। मुख्य अतिथि महोदय ने सभी का अभिवादन स्वीकार किया।

तत्पश्चात राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य को नए आयाम देने वाले प्रधान निदेशक (राजभाषा)

महोदय ने मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का पुष्प गुच्छ से हार्दिक स्वागत किया।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए मंच संचालिका ने प्रधान निदेशक (राजभाषा) महोदय से अनुरोध किया कि वे माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह जी का देशवासियों के नाम दिया गया संदेश पढ़ कर सुनाएं। प्रधान निदेशक (राजभाषा), महोदय ने भारत सरकार के गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर देशवासियों के नाम दिया गया संदेश सभी के सामने पढ़कर सुनाया। इसके पश्चात उन्होंने अपने सुस्पष्ट शब्दों में हिन्दी पत्राचार, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3), राजभाषा नियम 5 के अनुपालन, हिन्दी कार्यान्वयन संबंधी प्रोत्साहनों, लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के हिन्दी अनुवाद, क्षेत्रीय



मंच का संचालन करती हुई
सुश्री अनामिका अंतिल, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

भी प्रकाश डाला। ध्यान मग्न श्रोताओं ने उनकी रिपोर्ट का करतल ध्वनि से स्वागत किया।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथि महोदय ने मुख्यालय से प्रकाशित “लेखापरीक्षा प्रकाश” पत्रिका के 132वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में विमोचन किया।



हिन्दी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

कार्यालयों व मुख्यालय के अनुभागों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण, “लेखापरीक्षा प्रकाश” पत्रिका प्रकाशन तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा आदि पर



समारोह का आनन्द उठाते हुए वरिष्ठ अधिकारीगण

प्रधान निदेशक (राजभाषा) द्वारा हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के पश्चात मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय ने उपस्थित अधिकारियों को सम्बोधित किया।

उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी एवं प्रेरणास्पद मार्गदर्शी भाषण में कहा कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग हमारा संवैधानिक दायित्व है। उन्होंने मुख्यालय से प्रकाशित “लेखापरीक्षा प्रकाश” पत्रिका के 132वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में विमोचन किया। विमोचन के दौरान उन्होंने क्षेत्रीय कार्यालयों से भी अनुरोध किया कि वे भी अपने कार्यालयों की हिन्दी पत्रिकाओं का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन करवाएं ताकि अधिक से अधिक पाठकों से जुड़ा जा सके एवं उन्होंने यह भी बताया कि देश में मोबाईल का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है



हिन्दी पखवाड़े के शुभारम्भ पर सभा को संबोधित करते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय

जोकि कई भाषाओं में है तथा हिन्दी में भी है। हमें हिन्दी में इसका उपयोग करना चाहिए। जनधन खाता खोलने के लिए हिन्दी का उपयोग किया जाता है, इसे जितना अधिक अपना सकेंगे उतना ही अच्छा होगा। हिन्दी के प्रति बॉलीवुड का भी बहुत बड़ा योगदान है और इसका उपयोग वेबसाइट में और अधिक प्रयोग किया जाए। उन्होंने सूचना और परिपत्र हिन्दी में जारी किए जाएं इस पर भी बल दिया। उन्होंने उपस्थित जन

समूह का मार्गदर्शन करते हुए यह भी कहा कि सभी अधिकारी व कर्मचारी हिन्दी में अपना काम करें तथा इस बात पर भी जोर दिया कि हमें हिन्दी को सही मायने में राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने के लिए अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ करने की आवश्यकता है। उनके प्रेरणादायक सम्बोधन का उपस्थित अधिकारियों ने तालियां बजाकर स्वागत किया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के ओजस्वी, मार्गदर्शी व प्रेरणादायी सम्बोधन के पश्चात पखवाड़े के शुभारम्भ कार्यक्रम का विधिवत



समारोह का आनन्द उठाते हुए वरिष्ठ अधिकारीगण

समापन किया गया जिसमें सुश्री अनामिका अंतिल ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने तथा उसे सफल बनाने के लिए सभी विशिष्ट जनों और समारोह में उपस्थित अन्य महानुभावों का विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किया।

दिनांक 28.9.2020 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह मनाया गया, जिसकी मुख्य अतिथि सुश्री सरोज पुनहानी, उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदया थीं।

हिन्दी पखवाड़ा 2020 के दौरान हुई प्रतियोगिताओं में विजेताओं की सूची

हिंदी निबंध प्रतियोगिता (दिनांक 15.09.2020)

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	नरेन्द्र सिंह, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	उत्तर मध्य क्षेत्र	प्रथम
2.	सुरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	जी.ई.- I	द्वितीय
3.	हितेश रोहिल्ला, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	डीएआई, रेलवे रक्षा (सचिवालय)	तृतीय
4.	राजेन्द्र कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	स्थापना	प्रथम
5.	नीरज सिंह भाटी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	वेतन एवं लेखा	द्वितीय
6.	गीता, लेखापरीक्षक	वाणिज्यिक अनुभाग-V	तृतीय

हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता दिनांक 17.09.2020

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	सन्दीप कुमार, सहायक प्रशा. अधिकारी	स्टाफ नियुक्ति-5	प्रथम
2.	गोपाल कुमार, सहायक प्रशा. अधिकारी	नीतिगत प्रबंधन इकाई	द्वितीय
3.	सोनाली चटर्जी, सहायक प्रशा. अधिकारी	स्टाफ (जेसीएम)	तृतीय
4.	सरजीत सिंह बंसल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सामान्य सेवाएं	प्रथम
5.	प्रवीण खत्री, डी.ई.ओ.	स्थापना	द्वितीय
6.	आशीष रानी, डी.ई.ओ.	स्थापना	तृतीय

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता दिनांक 18.09.2020

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	प्रवीण कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	नीतिगत प्रबंधन इकाई	प्रथम
2.	अशोक कुमार, लेखापरीक्षक	मध्य क्षेत्र	द्वितीय
3.	प्रकाश सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	वेतन एवं लेखा	तृतीय

अनुवाद प्रतियोगिता दिनांक 21.09.2020

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	अनुराग प्रभाकर, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	एफ.आर.बी.एम.	प्रथम
2.	नरेन्द्र सिंह, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	उत्तर मध्य क्षेत्र	द्वितीय
3.	गोपाल कुमार, सहायक प्रशा. अधिकारी	नीतिगत प्रबंधन इकाई	तृतीय
4.	राजेन्द्र कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	स्थापना	प्रथम
5.	आशीष रानी, डी.ई.ओ.	स्थापना	द्वितीय
6.	अंजलि सपरू, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	दक्षिणी क्षेत्र	तृतीय

श्रुतलेख प्रतियोगिता दिनांक 22.09.2020

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	रश्मि सानन, निजी सचिव	डी.ए.आई सचिवालय (रेलवे)	प्रथम
2.	हिमांशु पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	स्थापना	द्वितीय
3.	पूनम पाहुजा, निजी सचिव	डी.ए.आई सचिवालय (सरकारी लेखा)	तृतीय

भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, नियम एवं
हिन्दी ज्ञान से संबंधित प्रतियोगिता दिनांक 23.09.2020

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	भूपेश कुमार, सहायक प्रशा. अधिकारी	सूचना प्रणाली विंग	प्रथम
2.	सन्दीप कुमार, सहायक प्रशा. अधिकारी	स्टाफ नियुक्ति-5	द्वितीय
3.	सुरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	जी.ई.-I	तृतीय
4.	ओम वीर, डी.ई.ओ.	स्थापना-2	प्रथम
5.	गीता, लेखापरीक्षक	वाणिज्यिक अनुभाग-V	द्वितीय
6.	सुमित खत्री, डी.ई.ओ.	डीएआई, रेलवे रक्षा (सचिवालय)	तृतीय

सुलेख प्रतियोगिता दिनांक 24.09.2020

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	अनुराग प्रभाकर, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	एफ.आर.बी.एम.	प्रथम
2.	राजीव रंजन, एम.टी.एस.	सामान्य सेवाएं	द्वितीय
3.	सर्वेन्द्र कुमार, डी.ई.ओ.	डीएआई, रेलवे (सचिवालय)	तृतीय

वर्ष 2019-20 के दौरान अनुभागों द्वारा
हिन्दी में अत्यधिक शब्द लिखने वाले कर्मचारी

क्र.सं.	विजेता का नाम एवं पद श्री/सुश्री	अनुभाग	स्थान
1.	सतीश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सामान्य सेवाएं	प्रथम
2.	राजेन्द्र कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	स्थापना	द्वितीय
3.	भवान सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	प्रत्यक्ष कर	तृतीय





पंजीकरण सं.-2 एल (9) / 8747177 / 87(90)



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124